श्रीयुत स्वर्गीय पूज्य पिता
मास्टर पन्नालाल जी की पुण्य स्मृति
— में —
सविनय समर्पित
वीर नि० सं० २४६७
व्यथित हृदय पुत्र:-
फाल्गुण शुक्ल ११
शिखरचन्द, नेमीचंद जैन
रविवार
ता० ९-३-४१

संशोधित व संवर्द्धित

सत्यार्थ यज्ञ:

अर्थात्

श्रीमान् कविरत्न मनरंगलालकृत चतुर्विंशति
और वर्तमान जिन पूजनसंग्रह

सम्पादक:-

अजितप्रसाद, एम. ए., एल-एल. बी.
एडवोकेट, पूर्वजज हाईकोर्ट बीकानेर

प्रकाशक:-

शिखरचंद्र जैन, शास्त्री, न्यायकाव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर, सी० पी०

मुद्रक:-

पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'
साहित्य-प्रेस, जबलपुर

तृतीय संस्करण १००० | श्रीवीरनिर्वाण जैन संवत् २४६५ सन् १९३९ | सजिल्द मूल्य १)

समर्पितम्

श्रीमते जैनधर्मभूषणाय

ब्रह्मचारिणे शीतलप्रसादाय

सविनय-निवेदन

सबसे प्रथम मैं पं० अजितप्रसादजी का आभारी हूँ जिन्होंने आज्ञा देकर इसे प्रकाशित करने का श्रेय लिया। इस पूजा पाठ की अति आवश्यकता देखकर तृतीय संस्करण संशोधित व संवर्द्धित रूप में प्रकाशित किया है। पूजा का चारित्र व भक्ति मार्ग में एक अपूर्व स्थान है, यही सोचकर इस एक ही पुस्तक में नवीन प्राचीन और अनेक असाधारण (अचरी आदि) पाठों का संग्रह भी कर दिया है। दशलक्षण, षोडशकरण, अष्टाह्निका, श्रुतपंचमी रक्षाबंधन आदि अनेक पर्वों में इसी एक पुस्तक से काम चल सकता है। पंचकल्याणक की तिथियां कई जगह अशुद्ध थीं, उनके स्थान पर नीचे ही स्व० ज्ञानचंद्रजी के संशोधित पाठ के अनुसार शुद्ध तिथियों का उल्लेख कर दिया गया है। अतः पूजक पाठकों को इससे अवश्य पुण्य लाभ होगा ऐसी मेरी पूर्ण आशा है। पाठों की शुद्धियों पर विशेष ध्यान रखा गया है तौभी प्रमाद व दृष्टिदोष से अशुद्धियां रह गई हों उनके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। अन्त में श्रीजिनेन्द्रदेव से यही प्रार्थना है कि इस सत्यार्थयज्ञ व पूजासंग्रह का विशेष प्रचार एवं धर्म प्रभावना हो जिससे हमारे विज्ञ पाठकों को सुख शांति का लाभ होता रहे।

द्वि. श्रावणकृष्ण १४
वीर सं. २४६५
सन् १९३९

विनीत प्रार्थी—
शिखरचन्द्र जैन शास्त्री,
जबलपुर।

* सूची *

	विषय	पृष्ठांक
	अष्टोत्तर शतनाम्ना जिनस्तुति	१
	समुच्चय जिन पूजा	३
१	श्री ऋषभदेव पूजा	७
२	श्री अजितनाथ पूजा	१२
३	श्री सम्भवनाथ पूजा	१८
४	श्री अभिनन्दननाथ पूजा	२५
५	श्री सुमतिनाथ पूजा	३०
६	श्री पद्मप्रभजिन पूजा	३६
७	श्री सुपार्श्वनाथ पूजा	४२
८	श्री चन्द्रप्रभ पूजा	४७
९	श्री पुष्पदन्त पूजा	५३
१०	श्री शीतलनाथ पूजा	५७
११	श्री श्रेयांसनाथ पूजा	६२
१२	श्री वासुपूज्य पूजा	६६
१३	श्री विमलनाथ जिन पूजा	७१
१४	श्री अनन्तनाथ जिन पूजा	७८
१५	श्री धर्म्मनाथ पूजा	८३
१६	श्री शान्तिनाथ पूजा	८८
१७	श्री कुंथुनाथ पूजा	९३
१८	श्री अरनाथ पूजा	९८
१९	श्री मल्लिनाथ पूजा	१०४
२०	श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा	१०८
२१	श्री नमिनाथ पूजा	११३
२२	श्री नेमिनाथ पूजा	११८
२३	श्री पार्श्वनाथ पूजा	१२३
२४	श्री वर्द्धमान पूजा	१२८
	श्री शान्ति पाठः	१३५

विषय			पृष्ठांक
२५ जलधारा	....	....	....१३७
२६ बिनय पाठ	....	....	....१४१
२७ मंगल पाठ	....	....	....१४३
२८ प्रथम देवशास्त्र गुरु पूजा		....	....१४५
२९ देव शास्त्र गुरु पूजा		....	....१४८
३० श्रीविद्यमान विंशति तीर्थंकर पूजा		....	....१५७
३१ कृत्रिमा कृत्रिम जिन बिम्बों का अर्घ		....	....१६१
३२ अकृत्रिम चैत्यालय पूजा		....	....१६२
३३ सिद्ध पूजा भावाष्टक व अंचलिका सहित			....१६७
३४ रविव्रत पूजा	....	....	....१७३
३५ श्रीविष्णुकुमार महामुनि पूजा		....	....१७७
३६ श्रीअकंपनाचार्यादि सात सौ मुनि पूजा			....१८०
३७ बाहुबली गोम्मट स्वामी पूजा		....	....१८४
३८ षोड़पकारण पूजा	....	....	....१८७
३९ पंचमेरु पूजा	....	....	....१९०
४० दश लक्षण धर्म पूजा	....	....	....१९२
४१ रत्नत्रय पूजा	....	....	....१९८
४२ सम्यग्दर्शन पूजा	....	....	... १९९
४३ सम्यग्ज्ञान पूजा	....	....	....२०१
४४ सम्यक् चारित्र पूजा	....	....	....२०२
४५ अथ नंदीश्वर द्वीप (अष्टाह्निका पर्व की) पूजा			.... २०४

विषय पृष्ठांक

४६ चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजा २०६

४७ समुच्चय चौबीसी पूजा २०९

४८ सप्त ऋषि पूजा २११

४९ जिनवाणी २१५

५० गुरु पूजा २१७

५१ अनन्तव्रत पूजा २१९

५२ स्वयंभूस्तोत्र भाषा २२२

५३ श्री महावीर जिन पूजा २२४

५४ निर्वाणकाण्ड भाषा २२८

५५ यज्ञोपवीत (जनेऊ) बदलने का मंत्र.... .... २३०

५६ सिद्ध चक्र पूजा २३१

५७ श्री गर्भ कल्याणक मंगल २३४

५८ श्री जन्म कल्याणक मंगल २३५

५९ नवग्रह अरिष्ट निवारक समुच्चय पूजा २३८

६० प्रातः काल की आरती २४१

६१ संध्याकाल की आरती २४१

६२ भाव आरती और प्रभाती २४२

६३ जाप्य दर्पण २४३

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

अथ श्रीमनरङ्गलाल कृत

चतुर्विंशति वर्तमान जिनपूजा

मङ्गलाचरण दोहा

अलख[1] लखत, मन जगतके रखवारे ऋषिनाथ,
नाभिनंद पदपद्म छाँय, तिनहिं नवाऊं माथ।
सिद्धारथ-कुल-गगन[2]के, पूरण निर्मल चन्द,
त्रिसला प्राची दिग[3] तने, सूरज तिमिर निकन्द[4]।
अकलंकित अंकित[5] धरम, भरम भजावन हार,
परम शेष बाईस जिन, नमहुं करम क्षयकार।
तुमसे तुमही जगतमें, उपमा काकी देहुं,
ज्ञान-कला दीजै तनक, पदपूजन कर लेहुं।
वर्तमान ये चौबिसों, करुणालय जिन देव,
तिनको पूजन करत ही, रहत न भवकी टेव।

तत्रादौ नामाष्टोत्तरजैनस्तुतिः। पद्धरि छन्द

तुम जैनपाल तुम जैन ईश, तुम जैनपती विसवाहि वीश।
तुम जैनपूज्य तुम जैन अंग, तुम जैनात्मा जीतो अनंग[6]

---

१ जो वस्तु सामान्य पुरुष नहीं देख जान सकते, उनके ज्ञाता। २ आकाश।
३ पूर्व दिशा। ४ अज्ञान व मोह रूपी अन्धकार को नाश करनेवाले।
५ धर्म है अंक, चिन्ह, ध्वजा जिनकी। ६ कामदेव

तुम अक्षजीत१ तुम जीतकाम, तुम जीतलोभ आनंदधाम।
तुम रागजीत तुम जीतद्वेष, जितशत्रु नाथ निरग्रंथभेष।
विश्वांगी२रक्षक तुम दयाल, तुम विश्वनाथ तुम विश्वपाल।
तुम विश्वतम तुम विश्वबन्धु, तुम विश्वपारगामी अबंध।
तुम जोगि-पूज्य३ तुम जोग अंग४, तुम जोगवान तुम मुक्तसंग५।
तुम योगीन्द्रः तुम तुमयोगिराट्, तुम योगीश्वर योगी विराट।
तुम जगतमान्य तुम जगतज्येष्ठ, तुम जगतईश तुम जगतश्रेष्ठ।
तुम जगतपिता तुम जगतकांत६, तुम जगतवीर तुम जगतदांत७।
तुम जगतपितामह जगतध्येय, तुम जगतपती तुम करतश्रेय॥
तुम जगतचक्षु तुम जगतसार्थ, तुम जगदरशी तुम जगन्नाथ॥
तुम सर्वज्ञः सर्वावलोक, तुम सर्व-तत्वविद् हतस्सोक८॥
तुम सर्वेशः हत सर्व क्लेश, तुम सर्वात्मा पूजत त्रिदेश९॥
तुम लोक ईश तुम लोक नाथ, तुमलोकोत्तम तुम रहितसाथ१०॥
तुम लोकज्ञात तुम लोकपाल, तुम लोकजयी तुम हतोकाल ११॥
तुम हो उदार तुम मोक्षगामि, तुम मुक्तिअरूपक सकल जामि१२॥
तुम प्रतर्क्यात्मा१३ दिव्यदेह१४, तुम मनःप्रेय आनन्दगेह १५॥
तुम क्षेमी क्षेमंकर वागीश१६, तुम वाचस्पति तुम हो बुधीश॥

---

१ इन्द्रिय विजयी, २ सब जीवों की रक्षा करनेवाले, ३ योगियों करके पूज्य ४ तपश्चरणमें लीन, ५ परिग्रह रहित, ६ प्रिय, ७ जगतके नाशकरने वाले, ८ शोक रहित, ९ तीनलोक, १० परिग्रह रहित, ११ मृत्युका नाश करके अमर हो गए, १२ सर्वज्ञ, १३ ध्यान में न आने योग्य, ध्येय आत्मा, १४ अलौकिक शरीरी १५ अनन्त सुखस्वरूप १६ दिव्य ध्वनिके धारक।

तुम हेमवरन तुम तेजराश, तुम प्रबल प्रतापी मुक्तिवाश ॥
तुम निरममत्व निर अहंकार, तुम जगचूड़ामणि निराकार ॥
तुम शांतेश्वर मनहरनहार, तुम पुन्यमूर्ति दीरघविचार ॥
तुम केवलेश अति सूक्ष्मवान, अति सूक्ष्म-दरशी यश-निधान ॥
तुम अति पुण्यात्मा पुण्यशील, तुम श्रीश विरिंची१ जगश्लील२ ॥
तुम पद्मासन चतुरास्य३ श्रेय, तुम श्रेय सकल स्वामी सुध्येय ॥
तुम मौनी सूरा-सार्थ वाह४, तुम अजित देह तुम मुक्तिनाह ॥
इह अष्टोत्तरशत नाममाल, जो पढ़ै सुधी मन धरि त्रिकाल ॥
सो होय सबै वातनि निहाल, इम सत्य कहत मनरंगलाल ॥

दोहा

ये चौवीस जिनेन्द्र के, अष्टोत्तरशत नाय।
जल थल विषम स्थानमें, होत सदैव सहाय॥

इति अष्टोत्तरशतजिननामानि पठित्वा श्रीजिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

——:०:——

समुच्चय जिनपूजा

स्थापना। छन्द

मैं जानत तुम सत्य सिद्धिपति हो सही।
आवागमनहि रहित वात साँची यही॥
तदपि नाथ मैं भक्तिवशी टेरों५ यहां।
आवौ कृपा करेहि देव चौबिस महा॥

---

१ ब्रह्मा, २ यशस्वी, ३ चतुर्मुख, ४ ज्ञान के अन्धे (सूर) को मार्ग दिखाने वाले, ५ बुलाऊं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराः परमदेवाः ! अत्रावतरतावतरत संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराः परमदेवाः ! अत्र तिष्ठतिष्ठत ठः ठः (इति स्थापनं)

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराः परमदेवाः ! अत्र मम सन्निहिताभवत भवत वषट् (इति सन्निधीकरणं) १

अथाष्टकं अडिल्ल

देवअपगा२ को नीर सुसुरभि३ मिलायकै।
छीरोदधिको हंसत नाथ गुण गायकै॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करूं।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चित में धरूं॥

ओंह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज४ घसि घनसार५ चंद्रसम सेतहीं।
कुंकुम अगर मिलाय धरों इक खेतहीं६ ॥ वृषभ आदि०

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल तद्रूप अक्षत मनको हरै।
खंडविवर्जित कांति दसौं दिश विस्तरै॥ वृषभ आदि०

१ उतरो, तिष्ठो, निकट वरतो, २ देवनदी, गंगा, ३ सुगंध, ४ चन्दन, ५ कपूर, ६ एक ही (पात्र) जगह मिलाकर।

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कंचन के शुभ पहुप बनाऊं चावसौं ।
चंप चमेली कमल केवरो भावसौं ॥ वृषभ आदि०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सद्यजात[१] घृत लोलित अतिशुचिसों बनै ।
घेवर बावर फेणि सुलाडु सुहावनै ॥ वृषभ आदि०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रतनदीप जगमगै दसौंदिश जोतिसों ।
बाती धरि करपूर घीव भरि हूँ तिसों ॥ वृषभ आदि०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारनिवारणाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूपदहन सुविशाल धूप जुत लायके ।
दहिये आनन्द पाय नाथ गुणगायके ॥ वृषभ आदि०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरुके[२] वरपक्व[३] मधुर फल थार में ।
भरि आंखिन को प्रेम प्रान सुखकार में ॥ वृषभ आदि०

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ उसी दिन के बने हुये, २ कल्पवृक्ष, ३ अच्छे पके हुए ।

छन्द हरिगीत

लै नीर गंध सुचारु अक्षत सुमनचरु दीपा लिया।
वर धूप फल अति मधुर मनरंग अरघ सुंदर यों किया॥
सो धारि रतनन जड़ित भाजन मांहि प्रभुगुण गायके।
नमि बारबार निहार चरनन तिनहि देउं चढ़ाय के॥

ओंह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला त्रिभङ्गी छन्द

तुम अलख निरंजन[1] भवभय भंजन शिवतिय रंजन करम हरे।
फिर जाय विराजे शिवसुख साजे भविक निवाजे[2] गुण अगरे॥
गुण ओघ[3] तिहारे वरनत हारे सुरपति जे, मैं रंक कहा।
स्वामी सुन मेरी, शरन सु तेरी, भवकी फेरी मेटु अहा॥

त्रोटक छंद

जय नाभिनन्द कुलचंद नमों, जय देविजया[4] शुभनंद नमों।
जय संभव संभव-भंज[5] नमों, अभिनंदन जय शिव-रंज[6] नमों।
जय सुष्ठुमती[7] सुमतीश नमों, जय पद्मप्रभ धुन-ईश[8] नमों।
जय सप्तम देव सुपार्श्व नमों, जय चंद्रप्रभ गुण-पार्श्व[9] नमों।
जय पुष्पदंत भव पार नमों, जय सीतल सीतलकार नमों।
जय श्रेय हरो भवपीर नमों, विजयासुत जय सुउदीर[10] नमों।

---

१ कर्ममल रहित, २ भव्य जीवों के कृपापात्र, ३ समूह, ४ विजयादेवी के पुत्र, ५ संसार को पूर्ण नाश करनेवाले, ६ मोक्ष में आनन्दसहित विराजमान, ७ केवल ज्ञानी, ८ दिव्य ध्वनि के स्वामी, ९ अनन्त गुणाधारक, १० उत्कृष्ट

जय कंपिलया लिय जन्म नमों, जयऽनंत जिनेशनिकर्म १ नमों।
जय धर्मजिनं धुर-धर्म २ नमों, जय शांति हरै सब कर्म्म नमों।
जय कुंथु सुकुंथुअ पाल नमों, जय जय अरहा सुख जाल नमों।
जय मोह वली हत मल्लि नमों, मुनिसुव्रत जय निरसल्य ३ नमों।
जय लोकजयी नमिनाथ नमों, जय नेमि तजो प्रियासाथ नमों।
जय पास हरो भव फांस नमों, महावीर करो सुहुलास नमों।
जय दीनदयाल कृपाल नमों। करु दीनन को सुनिहाल नमों॥
तुम हो सब लायक नाथ नमों। शत इन्द्र नवावत माथ नमों॥

धत्ता

चौबीसौं आला ४ जिनवरवाला तिन गुणमाला कंठ धरै।
सो परम विशाला है छबिसाला इह लखि मनरंग पैर परै॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ये जिनेन्द्र चौबीसजू, सब पर होंय दयाल।
पातक ५ नासो दीन के, मनरंग होय निहाल॥ इत्याशीर्वादः

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नमः (मंत्र-जाप १०८)

——:०:——

१—श्रीऋषभदेवपूजा

गीता छन्द

नगरी अजुध्या नाभिराजा पिता मरुदेवी जने।
इक्ष्वाकुवंश शरीर सुवरण पांचसै धनु सोहने॥

---

१ कर्म रहित, २ धर्मके चलाने वाले, ३ माया, मिथ्या, निदान इन तीनों शल्यों से रहित। ४ परम पूज्य। ५ पाप।

पूरव चौरासी लाख आयुल१ चिन्ह बैल गनीजिये।
सर्वार्थ सिद्धि विमानतै चय आदिनाथ कहीजिये॥

दोहा

सो आदीश्वर जगतपति, सब जीवन रक्षपाल।
मुक्ति रमाके कंथवर, आओ इहां विशाल॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्र। अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं) अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधीकरणं)

द्रुतविलंबित

परम नीर सुगंध नियोजितं, मधुर वाणिन भौंर सुगंजितं।
कनक भाजन लै भरि हाथमें, करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथमैं॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन बावन बाम घसो भयो। हिमपरा२ सुभमिश्रित सो लयो।
कनकपात्र भरौं धरि हाथनमें। करि त्रिशुद्ध३ जजौं रिषिनाथ मैं।
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
अमल अक्षत राजन भोगके। मुलक४ लज्जित तज्जित सोकके।
सुभग भाजनमें लै हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
कलप पादपते५ उपजे भये। परमगंध प्रसारित ते लये।
हरष पूर्वक लीजिये हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा।

---

१ आयु, २ कपूर, ३ मन, वचन, कायकी शुद्धि, ४ मोती, ५ वृक्ष,

चतुर चारु पचावत भावसौं। घृत सुपूरित अद्भुत चावसौं।
अमिय मय लडुवा धरि हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषनाथमैं॥
ओं ह्रीं वृषभनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीपक देत उदोत ही। दशदिशा उजियार सो होत ही।
प्रभु तनै लखि धारि सुहाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उठत धूम घटा चहुं ओर तैं। भ्रमत भूरि[१] अली[२] सब छोरतै।
दहन धूप लिये इम हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं वृषभनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मधुरसा रसना सुखदाय जो। क्रमुक[३] श्रीफल[४] सुन्दर लायसो॥
इम फलौघ[५] लिए शुभ हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

करि सु ये इकठीं दरबैं सबै। धरत भाजन में अति सो फबै[६]॥
अरघ सुंदर लेय सो हाथमैं। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं॥
ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

सर्वार्थसिद्ध विमान तजि आषाढ़ वदि द्वितिया दिना।
मरु देविके सो गरभ आये रंजितं[७] सिगरे जना॥
हमहूं इहां अब अरघ ल्याय बजाय तूर सुछंदसों।
गुण गाय गाय सराहि[८] तुम छवि जजौं अतिआनंदसों॥

---

१ बहुत, २ भौंरा, ३ सुपारी, ४ बेलफल, ५ फलों का ढेर, ६ अच्छी लगे, ७ खुश हुए, ८ भला समझते हैं।

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

मधुमास१ वदि नौमी दिना जनमें भये अति सोहिला ।
पूजे तुम्हें इन्द्रादि ने ले जायके पांडुशिला ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्व०

वदि चैत नौमी स्वयं दीक्षित भये प्रभु शुभ भावसों ।
सुर असुर नरपति सकल तहं पूजे तुमहिं अति चावसों ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय चैत्रकृष्णानवम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं निर्व०

फागुन वदी एकादशी शुभ ज्ञान केवल पाइयो ।
सुर रचित हाटकपीठपै२ धर्मोपदेश सुनाइयो ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय फाल्गुणकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

चौदस वदी शुभ माघकी कैलाश ऊपर जायके ।
निरवान हूवो करी पूजा इन्द्र ने चित ल्यायके ॥ हमहूं०

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय माघकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

त्रिभंगी छंद

जय जय गुणधामं, दरशन वामं३, जीतो काम लोभं ते ।
जय जय दुखहारी, सुयश विथारी, करुणाधारी, जैनपते ॥
जय जय नाभि नंदन कलुषनिकंदन भविजनवंदन गुणअगरे ।
जयजय मनरंग भनि, सुजसहि सुनि सुनि अधमतारि पुनि आपतरे ॥

नाराच छंद

दिनेशते अधिक तेजकी महान राशि हो ।
कमोदिनी भवीन के भले सुधानिवास४ हो ॥

---

१ चैत; २ स्वर्ण वेदी; समवसरण; ३ आनंद; ४ चंद्र ।

नमो नमो रिषीश तोहि काम के निवार हो ।
कलंक पंक छालने१ सदा घटा२ अकार हो ॥ १॥

प्रवीन हो, प्रतापवान, सर्व के सुजान हो ।
गणां फणी अर्णास के सदैव एक ध्यान हो ॥ नमो नमो ॥ २ ॥

अनादि हो अनन्त ज्ञान केवल प्रकाश हो ।
निरक्षरी धुनीश नाथ मोदके निवास हो ॥ नमो नमो ॥ ३ ॥

कृपाल धर्मपाल दीनपाल काल - नाश हो ।
अनेक रिद्धि के धनी महा सुरूपवास हो ॥ नमो नमो ॥ ४ ॥

प्रवीन हो पवित्र हो भवाब्धि ३ पारगामि हो ।
निहालके करनहार ईश सर्व जामि ४ हो ॥ नमो नमो ॥ ५ ॥

अलोक लोक लोकने विशाल चक्षुवान हो ।
महान दीप्तिवान मोह शत्रु को कृपान५ हो ॥ नमो नमो ॥ ६ ॥

गुणौघ ६ रत्नके प्रभू अपार पारवार हो ।
भवाब्धि डूबतें तिन्हें अजान बाहुधार हो ॥ नमो नमो ॥ ७ ॥

सदैव मोक्षधाम के संजोग के सिंगार हो ।
कछूक ऊन ७ देहते सुज्ञान के अकार हो ॥ नमो नमो ॥ ८ ॥

चराचरा ८ जिते कहे तिन्हें दयालु छत्र हो ।
सुमनरंगलाल के सुनेत्र के नक्षत्र हो ॥ नमो नमो ॥ ९ ॥

---

१ हटाने को, २ वर्षा, ३ संसार-सागर, ४ सर्वज्ञ,
५ तलवार, ६ गुणसमूह, ७ कम,
८ त्रस, स्थावर ।

घत्ता

जय जय गुणधारी, मायाहारी, विपति विदारी, जसकरणं।
जय सुखसंचारी, परमविचारी, अधमउधारी, तुमशरणं ॥१०॥

ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

जो करे मन वचन तन सुपूजा आदिनाथ प्रभू तनी।
सो इन्द्र चन्द्र धनेन्द्र चक्री पद्द पावै यों भनी॥
फिर होय शिवतिय को धनी सुअनन्त सुख को भोगता॥
जरमरन आवागमन होय न, होय सहज निरोगता॥

इत्याशीर्वादः।

"ओंह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेंद्राय नमः" (अनेनमन्त्रेण जाप्यं दीयते)

——:०:——

२—श्रीअजितनाथ पूजा

स्थापना, गीता छंद

अमरकृत नगरी विनीता१ शत्रुजित राजा तहां।
विजय नाम विमानतजि विजया तने सुत भे इहां॥
गज चिन्ह अजित सुवरन तनु धनु चारसै साढ़ै गनो।
सत्तर औ है लख पूर्व आउप वंश इक्ष्वाकै भनो॥

१अयोध्या।

दोहा—अजितनाथ जिनदेव को बारबार सिरनाय।
आह्वानन करियत इहाँ, प्रभु गुण रूप सराय॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्र! अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)॥ अत्रममसन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)॥

मालिनी छंद

फटिकमनि समानं, मिष्ट ओदक[१] सुआनै।
भरि पुरट[२] सुकुंभं देखही प्यास भानै॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन बहाऊं॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लै सुभग रकेबी धारि तामैं पटीरं[३]।
मधुकर है लोभी जे भ्रमैं आय तीरं॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकृत[४] जनित मानो चारु[५] तंदुल बनाये।
उठत छुटा छहरै देखि नयना लुभाये॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कलपरुह[६] सुपुष्पं गुंजितं भौंर भारी।
लखत बरन नाना घ्रान नयना सुखारी॥ अजित०

---

१ जल, २ सुवर्ण, ३ चंदन, ४ पुण्य से उत्पन्न, ५ अच्छे, ६ कल्पवृक्ष।

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

षटरस परिपूर्ण वेश व्यंजन बनाये ।
अधिक सुरभि सर्पी १ भूख विन सो सुहाये ॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि के शुभ दीये दोय हाथन लीये ।
वहु करत उदोतं अन्धकारं विलीये२ ॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

करम दहन अर्थं ल्याय धूपं सुगन्धं ।
लखि गंध दुरेफा३ देत दच्छिना सुछंदं ॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल ललित सुहाने पक्व मीठे सुजाने ।
तजि सकल अजाने ४ दिव्य भावान आने ॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलचन्दन सुअक्षत पुष्प नैवेद्य दीयो ।
वरधूप फलौघा अर्घ सौंदर्य्य कीयो ॥ अजित०

ओंह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

जेठ अमावस के दिना गर्भस्थित जगदीस ।
तास चरणको अर्घसे जजूं नाय निज शीस ॥

---

१ सुगन्ध फैलानेवाले (सुगन्धदार) २ नाश किये, ३ भौंरा, ४ बिना जाने फल ।

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णामावास्यायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

माघ वदी दसमी दिना, महिमंडल पर जात१ ।
अरघ लेय शुभ हाथसों, पूजत पातिक जात ॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णादशम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं ।
(यहां माघ सुदी १० पाठ शुद्ध चाहिये)

माघ वदी दसमी कही, ता दिन दीक्षा लेत ।
अजितप्रभूको अर्घ ले, पूजूं भावसमेत ॥

ओंह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णादशम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।
(यहां माघ सुदी नवमी पाठ होना चाहिये)

पूष सुदी एकादशी, ता दिन केवल पाय ।
जगतपूज्य के चरनयुग, पूजूं अर्घ बनाय ॥

ओं ह्री श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय पौषशुक्लैकादश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

चैत्रसुदी पाचैं दिना, सम्मेदशिखरतें वीर ।
अव्ययपद प्रापति भये, मैं पूजूं धर धीर ॥

ओं ह्री श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय चैत्रशुक्लापंचम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

त्रिभङ्गी छन्द

जय जिनवर दूजा सुरपति पूजा२ तो सम दूजा और नहीं,
जय घट घट प्रघट३ दिगकीन्हे पट४ निपटकठिनघट५ धरत सही।

१ पृथ्वी पर जन्म लिया, २ जिसकी इन्द्र ने पूजा की, ३ सर्व द्रव्य को केवल ज्ञान से प्रकाशित किया, ४ दश दिशाओं को वस्त्र बनाया दिगंबर, ५ पद, धरो तप किया,

जय शिवतिय किय बस लेत अधररस अमरित[१] भूजस किमकहिये[२]
जय जय गुणसीमा[३] बड़ी महीमा दरसन हीमा दुःख दहिये[४]।

चौपाई

जय जय अजित धरम-धुरधारी[५]। बिनकारन जग बंधव भारी ॥
जय मदमोचन[६] लोचन ज्ञाना[७]। देखत लोकालोक महाना ॥
कामपंक नासन[८] भगवाना। प्रलयकाल के मेघ समाना ॥
देखत तुम पातिक नसजाई। गरुड़लखे ज्यों व्याल पराई[९] ॥
चिन्तामनी कहा तुम आगे। परसुखदाई आप अभागे[१०] ॥
आपु तरे तुम औरन तारे। इह उपमा तुम कहत पुकारे ॥
कहत कल्पतरु तुम सम कोई। तुम आगे सो कछु नहिं होई ॥
वह थावर अरु काष्ठ विचारा। तुम अनन्त महिमा गुणधारा ॥
सूर चँद जे कहे अनेका। तुम पटतर[११] नहिं है में एका ॥

---

१ जिनका यश तीन लोक में फैल रहा है, २ हम कहां तक वर्णन करें, ३ गुणों की सीमा, हद, अनन्त-गुण-धारक, ४ जिन के दर्शन ही से दुःख का नाश हो जाता है, ५ धर्म की धुरा को धरने वाले, धर्म को चलाने वाले, ६ मद, मान को त्यागने वाले, ७ ज्ञान चक्षु के धारी केवल ज्ञानी, ८ काम की कीच को नाश करने के लिये प्रलयकाल के मेघ के समान ९ जैसे गरुड़ को देखकर सांप भाग जाते हैं, १० चिंतामणि रत्न दूसरे को मनवांछित वस्तु देता है किंतु आप तो अभागा, पाषाण है, उसकी तुमसे क्या उपमा दी जाय, तुम तो अपने और सारे संसार के कल्याण के कर्ता हो, ११ बराबर।

ज्ञानसूर[1] आनन[2] तुम चन्दा । अहिनिशा रहत सदैव अमन्दा ॥
कँटक सहित कमलदल सारे । पद तुम दोष कँट तैं न्यारे[3] ॥
यातैं कमल कछू नहिं कहिये । तुम पद आगे कहा सरहिये ॥
तुम पद तट[4] लोटत शिवनारी । करत आलिंगन भुजा पसारी ॥
तिनको धोक देत जो कोई । मुकति रमनिको भरता होई ॥
पारस पत्थर कंचन करै । तो क्या अधिक बातको धरै ॥
तुम पद भेंटत दीन दयाला । तुम सम सो होवै ततकाला ॥
करम चक्रपर चढ़ि यह जीवा । भ्रमति चहुँगति माहिं सदीवा ॥
ताहि उतारन तुम ही देवा । समरथ जानि करों पद सेवा ॥
तातैं नमो नमो जिनराई । नमो नमो मम होउ सहाई ॥
इह विनती कर जोरै करों । भवसागर अबके नहिं परों ॥

घत्ता

इह वर जयमाला अजित प्रभूकी कंठमांहिं जो नर धरसी ।
करसी सो अति सुख मेट सकल दुख भवसागर फिर नहिं परसी ।
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीड़ित छंद

जो या श्रीअजितेशपाद जजि है कृत्कारितानुमोदना ।
सो धान्यादिक पुत्र मित्र वनिता पावै सदा पावना ॥

---

१ तुम ज्ञानरूपी सूर्य हो २ तुम्हारा मुख, चन्द्रमा जैसा शोभाय मान है । चांद सूर्य तो दिन और रात को छिप जाते हैं परन्तु आप सदा प्रकाशमान रहते है ३ कमल में तो कांटा है परन्तु आपके चरण निर्दोष हैं । ४ चरणों के पास

आयू हो विपुला[1] अरोगतनुता[2] आवैनश्रीपास्वैंतैं[3]
पाछे तैं शिव धाम जाय शुभके भंगे सूख सास्वतैं ॥
(इत्याशीर्वादः)

"ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं ॥

——:o:——

३ श्रीसम्भवनाथ पूजा

गीता छन्द

नगरी सावित्रि पितु जितारि सुसैन माताके घरै ।
ग्रैवेकतैं संभव सु हूवे तन सु कनक प्रभा धरै ॥
उन्नतधनुष कहि चारि शत इक्ष्वाकुवंश शिरोमणी ।
लखपूर्वसाठि विशाल आउष बाज[4] चिन्ह तपोधनी ॥

दोहा

सो संभव भव भ्रमन हर मुकति तिया गलहार ।
इहां विराजो आनि तनि ओ पै ह्वै किरपार ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)
ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)

अथाष्टक त्रिभङ्गी छन्द

लै घनरस चोखा, गंध न तोषा, अघमल अदोषा मुनि मन सो ।
कंचनके घट भरि, बहु[1] विनय धरि, कमलपत्रकरि छादित सो ॥

---

१ दीर्घ आयु २ शरीर में रोग न हो ३ लक्ष्मी कभी उनके पास से न जावे,
४ घोड़ा,

संभव ढिग ल्याऊं, बहु गुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं, हरषि हिये।
जासों शिवडेरा, कर्म निवेरा, होय सबेरा आश लिये॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति।

तिलपरल१घसाऊं, कुंकुम ल्याऊं, ताहि मिलाऊं शुभ चितसे।
भरि रतन कटोरा, दहदिशि छोरा, गुंजत भौंरा अति हितसे॥
संभव ढिग ल्याऊं०
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
वर जान्हवी२ तोयं३, सिंचितहोयं. तंदुल सोयं बहु उजले।
तिन उज्जलताई, चन्द्र न पाई, छीरउदधि को हंसत भले॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

सुमनादिक सुमना, चुन अति नीके, कहे शास्त्र मधि लावन सो।
कंचन के भाजन, भर शुभ भावन, महा सुहावन पावन सो॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खासे से पूवे, गोघृत हूबे, पत्री हूवे मधुर बड़े।
तिनकी मधुराई, बरनि न आई, सुधा लजाई निज मनहे।
संभव ढिग ल्याऊं०
ओं ह्रींश्री संभवनाथजिनेंद्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१चंदन, २ गंगा, ३ जल,

दीपक कर धरिके, गोघृत भरिके, वार्तिक करके अति जरता।
झटपट दरसावत, तिमिर नशावत, जोति जगावत सुख करता।
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश अंगी धूपं, अति शुचिरूपं, ल्याय अनूपं भावकर।
धूपंदह मांही, दहन कराहीं, दिग महकाही धूपकरै॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जातीफल[1] एला[2] फल ले केला, नालीकेला आदि घने।
शुभगुंठ पियाला, अवर रसाला[3], भरि२ थाला कनक तने॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संबर[4] भद्रम्बर, शाली[5] सितसर, सारंगप्रिय[6] अरविंजनलै।
वसु[7] सारंग खासा, धूप सुवासा, फल इम अरघ सुहावनलै॥
संभव ढिग ल्याऊं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकर छन्द

फागुन असित पख अष्टमीको गर्भस्थिति नाथ।
श्री आदि षट्कुलवासिनी अरु रुचिकवासिनि साथ॥

---

१ जायफल २ बड़ी इलायची ३ चटनी मोठी ४ जल ५ अक्षत ६ भौंरे को प्रिय ऐसा पुष्प ७ दीप किरण।

करि प्रश्न उत्तर देत माता सुगरभ तुम परताप।
हम अरघ ल्याय सुपाद पूजत हरौ मो सिग पाप॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

(यहां फाल्गुन सुदी अष्टमी शुद्ध पाठ है)

कातिक सुदी शुभ पूर्णमासी जनम होत महान।
मिथ्यात तमके हरनको जनु प्रगट भूपर भान॥
रचि नींदमाया मातको लेलीन शचि निजअंक१।
मैं अरघ सों तुम जजौं जुगपद करहु मोहिं निसंक२॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय कार्तिकशुक्लापूर्णिमास्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

अगहन महीना पूर्णमासी के दिना भगवन्त।
चढ़ पालकी पर जाय वन कच लोच करत महन्त॥
सब डार जगको भारि भारहिं३ होत नगन शरीर।
मैं अरघ ले पद कँज पूजौं हरो सँभव पीर॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अगहनशुक्लापूर्णिमास्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं।

कातिकवदी शुभ चौथके दिन ज्ञान उपजत जानि।
समवशरन विशाल अनुपम रचत धनपति आनि॥
तहां बैठि आनन चारि सोहत है सुदंदुभिवाज।
वह रूप मन वच सुमिरके लै अर्घ पूजत आज॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्रायकार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं।

माघशुक्ला षष्ठी समेदतैं लियो सिद्धथानक जाय।
तहँ अंगवर्जित अलखमूरति ज्ञानमय शुभपाय॥

---

१ गोद। २ शंका रहित। ३ भाड़ में

नहिं होत आवागमन तहं तें रहैं सुख में पूर।
जिन चरनको लै अरघ पूजौं होव संकट दूर ॥
ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लाषष्ठयां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं।

जयमाला—झूलना छन्द

अष्टमदमत्त-गजजेहरतसुखजलज १ तोरि तिन दन्त तुम करतसूने।
धन्य भुजदंड धरप्रवर २ परचंड-वरध्यान मयखड्ग गहिकरमलूने ३ ॥
सिद्धि अतिदुग्ग ४ थलजीति हूवै अचल अन्तकी देहतें कछुक ऊने।
अरज मनरंगकी नाथ सुनिये तनक होय तव भक्तिसो भाव दूने ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द

नमो जय नमो जय सुसैना के नन्दा।
सु आसा हमारी चकोरी के चन्दा ॥
करो नाथ दाया कहौं हूँ सुटेरी।
प्रभू मेंटिये दीनता आज मेरी ॥ १ ॥
न देखे तिहारे भले पाद-पद्मं।
महामोह के मूल आनन्द सद्मं ५ ॥
सुयाते भई मोहि संसार फेरी। प्रभू ॥ २ ॥
बसो हूँ चिरंकाल नीगोद माहीं।
धरे भौ जु अन्तार माहूर्त माहीं ॥
छ तीनेक ६ वीनैं छ छ अङ्क हेरी। प्रभू ॥ ३ ॥

---

१ कमल, आठ मदरूपी जो दिग्गज सुखरूपी कमल को नाश करते हैं, उनके दांत तुमने तोड़ डाले, अर्थात् अष्टमद का नाश किया २ कठिन ३ नाश किये ४ कोट, किला, ५ घर ६-६६३३६, भव अन्तर्मुहूर्त में धरे।

अनंतेहि भागै कहे आखरा के।
कह्यो ज्ञान एतोहि ताके विपाके १ ॥
कर्‍यो हू तही आति बाचार केरी । प्रभू ॥ ४ ॥
तहां पंचधा भेद मैं दुःख भारी।
सहे जो कही जात नाहीं सम्हारी ॥
भयो दीन यों पाप की संचि ढेरी । प्रभू ॥ ५ ॥
भयो संख आदी गिंडोवा द्विइन्द्री।
पुनः खान-खज्जूर हूवो तिइन्द्री ॥
द्विरेफादि है चारि इन्द्रीय हेरी । प्रभू ॥ ६ ॥
महामच्छ की आदि पर्य्याय पाई।
करी भूर हिंसा कही नाहिं जाई ॥
मर्‍यो नर्क में आय कीन्हीं न देरी । प्रभू ॥ ७ ॥
जहां छेदना भेदना ताड़नाई।
तपायो गयो शूल सेज्या पड़ाई ॥
इन्हें आदि दे कष्ट पाये घनेरी । प्रभू ॥ ८ ॥
बसो गर्भ में आयके मैं कहूँ क्या।
बँधे अंग सारे मुख औंधा करूँ क्या ॥
रह्यो भूलि हां कर्म के जाल घेरी । प्रभू ॥ ९ ॥
भयो, यंत्रिका सों मनो तार काढ्यो।
तहां मोहि ऐसा बड़ो दुःख बाढ्यो ॥

---

१ अलब्ध ज्ञान कला अक्षर के अनंतवें भाग होती है।

भई बालअवस्था मनोषा १ न नेरी । प्रभू ॥ १० ॥
युवा वय भई कामकी चाह बाढ़ी ।
वियोगी भयो सोगकी रीति काढ़ी ॥
न देखे तुम्हें हाँ भले चित्तसेरी । प्रभू ॥ ११ ॥
जरा-रोगने प्रेरके मोहि कीन्हो ।
महाराज रोगी भलो दाव लीन्हो ॥
भड़यो ज्यों पको पान कालानिलेरी २ । प्रभू ॥ १२ ॥
कोई पुण्य से देवको पट्ट लीनो ।
वहाँ जायके मैं भयो देव हीनो ॥
सह्यो दुःख मत्सर ३ न भाषे बनेरी । प्रभू ॥ १३ ॥
भ्रम्यो चारिहूँ ओर साता न पाई ।
तिहारे बिना और को मो सहाई ॥
यही आनिके काटि दे कर्म-बेरी । प्रभू ॥ १४ ॥

घत्ता

संभव जयमाला, नासत काला, आनन्द जाला कंठधरै ।
सोविद्याभूषण, नासै दूषण, सिवतियसँग नित भोगकरै ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा— संभवनाथ प्रसाद तैं, होउ सकल सुख भोग ।
पुत्र पौत्र परताप जस, सुरगश्री संजोग ॥ इत्याशीर्वादः

"ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते ॥

---

१ समक्ष २ जैसे पत्ता हवा से गिरे वैसे काल निमित्त से शरीर त्याग किया
३ ईर्षा का दुःख

४ श्री अभिनन्दननाथ पूजा

स्थापना, गीता छंद

अवधि[१] नगरी नृपति संवर सिद्धिअर्था है प्रिया।
कपि चिन्ह वंश इक्ष्वाकु अभिनंदन सुजाके सुत प्रिया ॥
वपु[२] वरन सुवरन धनु उंचाई तीनसो साढ़े कही।
तजि विजय नाम विमाण लख पंचास पूर्वायु लही ॥

सोरठा

तजि सब जंगत समाज, भये लोक चूड़ामणी।
अभिनन्दन महाराज, करि करुणा यहां आव अब ॥

ओं ह्रीं अभिनन्दनजिनेन्द्र अत्रावतरावतर सम्वौषट् (इत्याह्वाननं)।
ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनं)।
ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधी करण) ॥

अथाष्टकं गीता छन्द

जल पद्म हृदको[३] ल्याय उज्जल कनक घट भरवाय के।
दे धार तुम पद-नख को अति मन अनन्द बढ़ाय के ॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिव[illegible]
संसार पण[४] विधि हमभिनन्दन नाशिये [illegible] जई ॥

ओं ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगवि[illegible]

१ अजुध्या २ शरीर ३ तालाब ४ पाँच

गोशीर[1] कृष्णा-अगरु कदलिके केशर[2] ल्यावहूँ।
घसवाय करि कंचनकटोरी नाथ पदहि चढ़ावहूँ॥ अष्टद्रव्य॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

तंदुल प्रछाले नीर प्रासुक खरे भरिले थाल में।
चंद्रकान्ति समान तिनसों करौं पूजा सार में॥ अष्टद्रव्य॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद चंपक राय बेला कुंज और कदंबके।
ले फूल नाना भांति तिनसों जजौं पद अभिनंद के॥ अष्टद्रव्य॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गोक्षीर तंदुल सरकराजुत फेनि शतछिद्रा[3] घनी।
लखि क्षुधारोग नसात तिनसों पूजहूँ जग के धनी॥ अष्टद्रव्य॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकदीपो सुरभिसर्पि[5] कपूरबाती बारिके।
सब दिशा करत उद्योत तासों जजौं पद हितधारिके॥ अष्टद्रव्य॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

वर धूपदहमें धूप धरि दह धूमकरि सुदिगावली[4]।
भरपूर महकत जजौं प्रभुपद जलै मोहमहाबली॥ अष्टद्रव्य॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ कमल की समान गंधवाला चंदन २ केसर ३ घेवर ४ दिशाओं में ५ घी।

दाखफल अरु केमरी वर रक्तकुसुम दशांगुली२।
भरिलेविशाल सुथाल मुनिपद जजौं जोरि करांगुली३॥ अवकुन्द॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत फूल चरुवर दीप धूप फलौघ कै।
शुभअरघसों पदकमल पूजत करमगणजासों जरै॥ अवकुन्द॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद

गरभस्थिति महराजा वैसाखसित अष्टमी दिना कैसे।
जिमि सीपी मधि मुक्ता राजै अभिनंदनप्रभू वैसे॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं
(यहां वैशाख सुदी ६ शुद्ध पाठ चाहिये)

माघसुदी चौदसि को जन्मो अखंड प्रतापधीर सूर।
जगमिथ्या तम सारो निज किरनतैं कीयोदूर॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय माघशुक्लाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

माघशुक्ल द्वादश दिन द्वादश भावन भाय प्रभू मनमें॥
योगाभ्यास सम्हारा तज गृह जाय बसे वनमें॥
ओं ह्रीं श्री अभिनंदननाथजिनेंद्राय माघशुक्लाद्वादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं।

पोषसुदी भूतादिन३ केवलपद लहि है महाज्ञानी।
चतुरानन मनभावन जगपावन४ करत सुखखानी॥

---

१ जायफल २ हाथों की दशों अंगुलियां जोड़ कर नमस्कार ३ चतुर्दशी,
४ पवित्र,

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय पौषशुक्लाचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणकायं अर्घ्यं ।

वैसाख सुदी षष्ठी ज्ञानावरनादि कर्म निरमुक्तं ।
सिद्धपविपद लीन्हो सम्मत्तादि अष्टगुनयुक्तं ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेंद्राय वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

अथ जयमाला—छंद चौपैया ।

स्वामी अभिनन्दन के अति सुन्दर पद सरोज सम सोहै ।
है भौंरा भविजन तिन ऊपर लहि आनन्द सुखिया होहै ॥
तनक पराग[१] धरे तिन तरकी सिर पावन कर जग मांहै ।
ते निसिदौस बसौ मेरे घट फिरि देखो मद अरि[२] कोहै ॥

छंद स्रग्विणी

जय अभिनन्द संसार को आसना ।
खूब कीन्हीं तिहूँ लोक में वासना ॥
नेक हेरो हमारी तनै हालिमा ।
दूर हो जाय मो भाव की कालिमा ॥ १
काम जीत्यो भली भांति के देव तैं
थान लीन्हो महाध्यानके भेव तैं ॥ नेक हेरो २
क्रोध को मान को लोभ को मोह की ।
टेव राखी न माया तनी छोह की ॥ नेक हेरो ३
ध्यानमय दण्ड लै पाप फोरे सभी ।
चौथ औतार भू माँहि हूओ सही ॥ नेक हेरो ४

---

१ फूलों पर जो सुगंधित रज होती है उसे पराग कहते हैं, २ अष्ट मदों को नाश करनेवाला, अर्थात मुक्त हो जाऊँगा ।

अब्धिमंडूकिकी१ आस मो है रही।
ताहि तू स्वाति की बूंद आओसही॥ नेक हेरो ५
अष्टकर्माटवीने२ महामित्र हो।
झूंठ कीलाल३ सूखावने मित्र४ हो॥ नेक हेरो ६
पन्च इन्द्री महाकबु५ कौ केहरी६।
शक्र७ लोटे सदा आयतो देहरी॥ नेक हेरो ७
लोक में एक तू पुण्यकी है ध्वजा।
लेय जो आसरो सो करे है मजा॥ नेक हेरो॥ ८॥
झांझरी नावमो बोझ गरुवा भरी।
वायु वाई महा अब्धि माही परी॥ नेक हेरो॥ ९॥
अन्ध को लाकड़ी ज्यां मुझे नाम ता।
डूबते धार आलम्बकै पावतो॥ नेक हेरो॥ १०॥
भो महाअब्धि के पारगामी सुनो।
कान लगाय के व्याधि मेरी लुनो८॥ नेक हेरो॥ ११॥
दीन के काज को कीजिये देर ना।
नाथ कोजे मुकति अब कहा हेरना॥ नेक हेरो॥ १२॥

घत्ता, छंद मरहटा।

अभिनन्दन स्वामी अन्तरजामी की पूरी जयमाल।
जो पढ़े पढ़ावे मनवचतनकरि सो पावे शिव हाल॥

---

१ समुद्रकी सीपी २ अष्ट कर्मरूपी ३. जल ४ सूर्य ५ हाथी ६ सिंह ७ इन्द्र ८ काटो,

तहँ बसै निरन्तर कालअनन्ते आरूत अचल कहो जु।
फिरि जनम न पावे मरन न आवे जग गुण गावेरोजु१२

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा।

अभिनन्दन भगवँत, तो प्रसादते जगतजन।
सुखिया होय महन्त ईति१ भीति२ सब छांडिके॥इत्याशीर्वादः॥

"ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय नमः" अनेग मँत्रे या जाप्यं दीयते

——:o:——

५ श्रीसुमतिनाथ पूजा।

स्थापना छँद गीता

कौसिला नगरी मेघप्रभु पितु मँगला माता कही।
शुभ वैजयँत विमान तज हूवे सुमति जिन सुतसही॥
पग चकव अँक इक्ष्वाकु वंश चालीस लख पूर्वायु है।
जिनकाय हाटक३ वरन धनु सौतीन को सु उचाउ है॥

सोरठा

सुमतिनाथ भगवान, सुमति देओ मो दीन लखि।
भव जल तारन जान, आय इहां तिष्ठो प्रभू॥

---

१ सात प्रकारकी आपत्ति, निजसेना, परसेना, ऊँदर, टीडीदल, शुक, अति वृष्टि, अनावृष्टि २ सात प्रकार का भय—हाथी, सिंह, सर्प, अग्नि, गद, जल, सँग्राम
३ सुवर्ण।

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्र अत्रावतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)॥

छंद नाराच।

महान गंध धार नीर ल्याइये सुक्षीरसों।
पवित्र कुम्भ हेमके[1] भराइये गहीरसों॥
पदाब्जद्व[2] सुबुद्धिनाथके सुबुद्धि देत ही।
जजौं अनन्त दर्श ज्ञान सौख्य वीर्य हेतही॥

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति. स्वाहा।

हिमोदरा सुगंध सारकैं घसी मयोधरम्।
लियाय सीतकार सा महान तप्तताहरम्॥पदाब्ज

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चँदनम् नि०॥

कहे अखँड अच्छतँ पवित्र स्वेत भावही।
भरे महान थार ल्याय कुन्दको लजावही॥पदाब्ज.

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०॥

गुलाब बन्धु द्वैपदा सुसेवती चुनाय के।
हजार पत्र को सुकँज[3] हेमको बनायके॥पदाब्ज

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् नि०॥

पचाय अन्न चारुचारु[4] थार मैं भरायके।
सुहाथ माहिं लेय शुद्ध भाव को लगायके॥पदाब्ज

---

(१) सुवर्ण, (२) चरण कमल (३) कमल. (४) उत्तम २

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि० ।

कपूर बाति दीप में बड़ो उदोत ल्यावती ।
कहूँ न लेश धूम को महान् ज्योति जागती ।। पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् नि० ।

करूं मंगाय धूपसार अग्नि के सुसन्मुखा ।
सुखारि होय आयके सुवास लें शिलीमुखा¹ ।। पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् नि० -

लवंग मालती सुत शुकप्रिया² सुद्राखड़ी ।
निकोचर्क³ सुगोस्तनी⁴ भराय थालिका बड़ी ।।पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम् नि० ।

सुवारि गंध अक्षतं प्रसूनले चरु वरं ।
सुदीपधूप औ फलं बनाय अर्घ सुन्दरम् ।।पदाब्ज

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

सोरठा

श्रावन सित पख जान, द्वैत महादिन जान शुभ ।
रहे गर्भ में आनि पूजों तिन पद अर्घ सों ।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं

चैत सुदी परवान, रुद्र⁵ संख्य तिथि के दिना ।
जन्म लीन भगवान, सुमति प्रभु भव भीति हरि ।।

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय चैत्रशुक्लैकादश्यांजन्मकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

---

(१) भौंरा (२) अमरूद (३) पिस्ता (४) अंगूर, मुनक्का (५) रुद्र

सांनि सुदी बैसाख, नौमी दिन तप ग्रहण किय।
छांड़ि संकल मन माख[१], जजौं अर्घ लै तिन चरण॥

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय वैशाखशुक्लनवम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं।

केवल ज्ञान प्रकाश, एकादशि सुदि चैत की।
इन्द्र रहत पद पास, मैं पूजत शुभ अर्घ सों॥

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यं।

चैत सुदी गण लेहु, एकाद[illegible] सम्मेद तैं।
जगत जलांजलि देय. परम निरंजन होत भे॥

ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय चैत्रशुक्लैकादश्यां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं।

अथ जयमाल – छन्द त्रिभङ्गी

जय दुरमति खंडन बिपति विहंडन पातिक दण्डन सुमतिपती।
जय शिव सुखमंडन भव भ्रम छण्डन,जय परमेश्वर परमजती॥
जय तुम मुख चन्दा लखि भव फन्दा, लहत अनन्दा विगिरिमिता[?]
जय गुण रत्नाकर शचिपति चाकर रहन निशाकर गुणकथिता॥

छंद मोटक।

नहीं खेद नहीं मल रंच कहो, शुभ शोणित[२] क्षीर समान लहो।
वज्र वृषभनाराच सहननम्, सम चौसंस्थान मलौगननम्॥१
अति सुन्दर रूप सुहावत है, सहजै तन गन्ध सुभावत है।
दुससौ अरु आठ सुलक्षणते, सब विञ्जन सें सब अक्षन[४] ते॥२
प्रभु के नहिं वीरज केरि मिता[५], प्रियवैन भले निकसै रुचिता।

---

[१] मनसे विकल्पत्याग करके, [२] बेहद, [३] रुधिर, [४] आंख से देखनेकी विषयता आद हो, [५] हद।

जनमें तब के दश जे अतिशय, अब केवल के कहिये अतिसै ॥३
चहुँ से कहि कोस सुभिक्ष महा, चलिवो शुभ अम्बरको१ सुमहा।
वध जीव भयो न कवौ सुनिये, न अहार कह्यो मनमें गुनिये ॥४
उपसर्ग न केवल ज्ञान भये, शुभ आनन चोहक चार लये।
सब ईश्वरता विद्यापन की, कहु छांह न लेश परे तनकी ॥५
कला २ चिकुरार नहिं वृद्धि कदा, पलके न लगैं कहु नेकु सदा।
इम केवल ज्ञान तनो दश है, अमरान करी शुभ चौदश हैं ॥६
शुभवाणि खिरै अर्ध मागधिया, तजिदें हैं सबे तहँ वैर जिया।
फल फूलत वृक्ष छहों ऋतु के, जन पावत चैन सबै हितके ॥७
चले मंद बयारि ४ सुगंधमई, शुभ आरसि जेम सुभूमि भई।
और गंध मिली जलकी बरषा, तहँ होत लखौ जिय मो हरखा ॥८
बिन कँटक आदिक भूमि कही, कमलों परि है मति देव सही।
फल भार नमें सब धान्य जहां, मल वर्जित कीन्ह अकाश महा ॥९
सुर चारि प्रकार आह्वान५ करें, अतिही चितमें सुअनंद धरें।
अर शासन चक्र अगारि चले, वसु मंगल द्रव्य सुहाव भले ॥१०
प्रभुके अतिशय वर देव कृता, अपनी मति माफिक मैं उकता।
कहिये प्रतिहारज नाथ तने, सुनतेहि नसै जग फँद घने ॥११
नहँ राजत शोक अशोक द्रुमो, तसु ऊपर गुँजत भूरि अली।
बरषै सुमना सुख ऊपर के, अरु हेठ६ कहो सो रहै तरका ॥१२
ध्वनि दिव्य निरन्तरि नीसरिता, इक योजन घोष मिता धरिता।
चतुषष्टि७ कहे वरचामर ही, लिय ढारत ठाढ़ि सुखावर८ ही ॥१३

---

(१) आकाश (२) नाखून (३) बाल (४) पवन (५) शब्द करें (६) नीचे
(७) ६४ (८) यक्ष

छवि आसनकी गिरी ते सुथरी, द्युतिमंडल सोभत सप्त परी।
सुर दुंदुभि बारह कोटि बजै, अघकोटि अधिक्क महागरजै॥१४
त्रयछत्र सुधाकर१ ज्यों उकता, उडुर२ से जनु सेव्य रहैं मुकता।
प्र तहारज अष्टविभूति रही, तिंह धारि भये अरिहन्त सही॥१५
करि चारिय घातिय घात जबै, लहि नंत चतुष्टय पट्ट तबै।
दर्शन अरु ज्ञान सुसौख्य बलं इन चारहु ते तुम देव अलं॥१६
- व्यवहार कहे गुण छालीस जे, निहचै नयते गुण नन्त सजे।
सुसुरेश नरेश गणेश लिजे असुरेश कहे धनईश तिते॥१७
तुम पावन पार न एक रती, भगवान बड़े तुम हो सुमती।
विनती सुनले अपने जनकी, अब मेटु विथा६ सुगरीधनकी॥१८
धर्शन रीति कही जुश्र वाहन४ की, जग डूबत ताहि निवाहन का।
प्रभु तो प्रभुता कवलौं कहियैं, लखिके छवितो चुप है रहियें४॥१९

घत्ता

जिन सुमति विशाला ! जगमें वाला तिन जयमाला यह सुथरी।
जो कठी करिहै, आनन्द धरिहै नहिं मरिहै तिहि काल अरी॥२०
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ॥

सोरठा

सुमतिनाथ सुखकार, घनइव७ गरजनि८ करि सहित।
बर्षो आनंद धार, भविजन खेती ऊपरै॥इत्याशीर्वादः॥
"ओंह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते।

(१) चंद्र (२) तारागण मरपूर (३) दुख (४) तीर्थंकरजहाज (५) ध्यान में मग्न हो जाइये (६) शत्रु (७) बादल (८) दिव्यध्वनि का शब्द

६—श्रीपद्मप्रभजिनपूजा

छन्द गीता

नगरी कुसंबी पिता धारन है सुसीमा मायसो ।
जिन पद्मप्रभ धरि पद्म अङ्क सुवरण तनु तुव ठाइसौ ॥
ग्रैवेयक ऊपर लौं तजो तेवीस लखि पूर्वाऊ सो ।
शुभवंश भूषित करि इक्ष्वाकु गये शिवालय१ चाउसो२ ॥

सोरठा

सोई पद्म जिनेश, धरे अङ्क पद्म पद्म छवि ।
आयवसौ लवलेश३, प्राणन के प्यारे यहाँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्) ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्) ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्) ।

अथाष्टकं छन्द चामरा

नीर ल्याय सीयरो४ महानमिष्ट सारसों ।
आनि शुद्ध गंध मेलि वेश५ तीन धारसों ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद आनि के ।
पंच भाव हेत मैं जजौं आनन्द ठानि के ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वेत चन्दनम् कपूर सो मिलाय धारतो ।
पात्र मों धमाय ल्याय गन्ध को पसार६तो ॥ पद्मनाथ०

---

१ मोक्ष, २ आनन्द, ३ थोड़ी देर के लिये, ४ ठंडा, ५ अच्छी, ६ फैलता हुआ।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुलम् भले सुपांडु[१] वर्ण खंडवर्जितम् ।
हेम थार में धराय चंद्रकांति लज्जितम्[२] ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच वर्ण के प्रसून गन्धता बड़ी बहै ।
पाय पाय गन्ध भूरि[३] मत्तता अली गहै ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षीर मोदकादि वृन्द स्वच्छपात्र[४] में धरौं ।
भाव को लगाय पाय चैन पाप को हरौं ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूम को न लेश शुद्ध वत्तिका कपूर की ।
रत्न दीप में धराय अन्धकार दूर की ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप गन्धसार औ कपूर को मिलायके ।
धूप दाह मांहि खेय धूम को बढ़ायके ॥ पद्मनाथ०

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोच[५] दन्तबीज[६] वातशत्रु[७] ल्याय के घने ।
कामवल्लभादि[८] जे फलौघ मिष्टता घने ॥ पद्मनाथ०

१ सफेद २ शरमाती ३ घनो ४ साफ ५ केला ६ दाड़म ७ नीबू ८ आम

ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय१ गंध अक्षत२ प्रसून सूप औ दिया।
धूप ले फलौतिसार३ अर्घ शुद्ध यों किया॥ पद्मनाथ॥

ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द शिखरिणी

बदी षष्ठी जानो शुभतर कहो माघ महिना।
बसेमाता कुक्ष्या रतन बरषे कहा कहिना॥
जजौं मैं ले अर्घं पद्मप्रभ के द्वन्द्व चरणा।
बसो मेरे ही मो सतत४ अबकै लेहुं शरणा॥

ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय माघकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

मति श्रुतिम अवधि लसत शुभ ज्ञानं अलखको।
भली त्रयोदश्यां कार्तिक महीना प्राकपक्षको५॥
प्रभू जात भू पै दिनपति मनौ कोटि उदितम्।
लखे जाके नित्यं भविकजलजा६ होत मुदितम्७॥

ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

कही त्रयोदश्यां कातिक महिना पक्ष पहिला।
तजी माया सारी बनमधि बसे छांड़ि महिला८॥
करे सेवा देवाधिप९ सकल९ आनंद मनसों।
जजौं मैं ले अर्घं मन वचन और शुद्ध तनसों॥

---

१ जल, २ नैवेद्यम्, ३ उमदा, ४ निरन्तर, ५ बदी, ६ भव्यजीवरूप कमल, ७ हर्षित, ८ महल, मकान, ९ इन्द्र।

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।

कही पूनो आछी मधुमहिनमा केरि जुदिना ।
हने घाती चारों महत शुभ ले ज्ञान सुजिना ॥
महामिथ्या रूपी तम हरण को भानु प्रगटा ।
नसें जाके देखे दुधन[1] कलुष की अविघटा ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय चैत्रशुक्लापूर्णमास्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वदी सातैं जानौं सुभग महिना फागुन कहा ।
बड़ी संयोगम् शुभ मुक्ति रमणी सो तिन लहा ॥
करी पूजा भारी शिखर पर निर्वाणपद की ।
यहां मैं ले अर्घं अजन करिये पद्मपद की ॥

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णासप्तम्यांनिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं ।
(यहां फाल्गुनवदी४ शुद्ध पाठ होना चाहिये)

छंद दंडिका

जय तन छवि छज्जै[2] रविद्युति लज्जै शरदसमय शशि इवसुखदोरु
लखि भयसिग भज्जै भविगण गज्जै[4] अनन्त चतुष्टय मय सुखतो ॥
चउ घाती चूरे गुणगण पूरैं क्षपक श्रेणि चढ़ि ज्ञान लह्यो ।
इन्द्रादिक ध्यावत शीश नवावत सुयश फैलि तिहं लोक रह्यो ॥

छंद मुक्तादाम

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु जिनेश, न राखत हो तुम लेश कलेश ।
रखावनको जनकी सब लाज, घड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ २ ॥

---

१ राग द्वेष दोनों मैल, २ छाय रही है, ३ सुखदायक ४ आनन्दित हैं ।

न शत्रु न मित्र समान समस्त, करे कर्मादिक शत्रु निरस्त१
लियो सब करिकैं आतम काज, बड़ो प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥३॥

छः द्रव्य पंच सति काय प्रशस्त, दिखावन सूर२ सदैव न अस्त
बतावन कौ सिग तत्व समाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥४॥

पदार्थ त्रिकाल जनावन दक्ष, मनावन का शुभ आनि प्रतक्ष।
भजावन संशय संकट गाज३ बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥५॥

छः काय कही तिनके तुम रक्ष, बनाय दही४ दुखदा पन अक्ष५।
नसावन को तृष्णा अति खाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥६॥

कियो कृतपाप दूरकर अस्त, स्वरूप सम्हार भये तुम मस्त६।
सिंहासन पै अन्तरिक्ष विराज, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥७॥

सुशील कृपाण लियो निजहस्त कियोपण७ सायक८ लस्तपलस्त।
लही बिजगीपु९ कहों सुकहाल, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥८॥

प्रभु तुम हो अवलम्बन हस्त, निकास कियो भगवान उरस्त१०।
भवाब्धि परे जिनको महाराज, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥९॥

मनीमनकी११ लखिके मनथंभ, बनी न रहे कित कोउक दंभ।

---

१ नाश, २ सूरज, ३ हाथी ४ जलाई, ५ पांच इन्द्री, ६ ध्यान में लवलीन, ७ पांच ८ कामके वाण ९ आपने जो [illegible] उसकी महिमा कहां तक कहूं, १० दिलमें रहनेवाला, ११ मानीन–आपके समवशरण के मानस्तम्भ को देखकर मानी का मान बाकी नहीं रहा।

प्रताप तिहारा कहो सिरताज, बड़े प्रभुपद्म गरीबनवाज ॥ १०
न होट न तालु लगै कहुं रंच, धुनी निकलै नहिं अक्षर संच१ ।
गणी२ परखैं हरखैं दुख त्याज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ ११
तजी लक्ष्मी की सबै तुम आस, सुआय रही इकठी पद पास ।
पुनीत पनेकी सुगाय गनाज३ बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १२
सुकीरत फैलरही चहुं ओर, लजावहि चंदहि कुन्दहि जोर४ ।
हराय मने मिथ्यातम भाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १३
पलोटत पाय सदा शिव तीय, कहा कथनी दिवि भांति तनीय५ ।
करो बस में मन चंचलवाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १४
न होय मुझे जब लौं शिव सिद्धि, लहौं तबलौं पदभक्ति समृद्धि६ ।
यही तनि मो सुनि लेहु अवाज, बड़े प्रभु पद्म गरीबनवाज ॥ १५

घत्ता

यह मुक्ति निसानी सब जगजानी आनंददा जयमाल पढे ।
सो होय अजाची मनरंग सांची फेरि न जाचक पन पकड़े ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं निः ।

---

१ अनक्षरी, २ गणधर, ३ बजाते या सुगन्ध, ४ चन्द्रमा और कुमुदिनी, ५ मुक्ति स्त्री आपके चरणों में तो स्वर्ग लक्ष्मी की क्या बात ६ ऐश्वर्य ।

सोरठा

पद्मनाथवर मीर, तुम पावन परतापते।
जग प्राणिनकी पीर रहे न जो भवभव तनी ॥

इत्याशीर्वादः

"ओंह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते ॥

——:o:——

७ श्रीसुपार्श्वनाथपूजा

गीताछंद।

है पुर बनारस नृप प्रतिष्ठित माय पृथवि सुहावनी।
चय मध्य ग्रैवेक ते सुपारस देह हरित१ प्रभा बनी ॥
धनु दो शत उन्नत काय आयुष पूर्व लख वीसी भनी।
शुभ चिन्ह सथिया लसत वंश सवनि शिरोमनी२ ॥१॥

दोहरा।

सो सुपार्श्व शिव तिय तने चंवत अधर विशाल।
सतत हरत दुख दीन के आवो यहां कृपाल ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओं ह्रीं अत्र तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्) ओं ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधीकरणम्)

इन्द्रवज्रा

पानी अमीनान३ लियाय मिष्ट शुद्धं भरो कंचन पात्र शिष्टं।
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करूं होय आनंद ढेरी ॥

(१) हरा रंग (२) श्रेष्ठ (३) अमृत के समान

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा,

चू न कही सो सुरभि मंगाई, चन्दा लजै जानि जाकी सिराई, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा.

ल्याऊं महा अक्षतं पाय साता, खंड बिना खंड भले बदाता१, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा.

लेके खरे फूल सुगंधकारी, मीठी अली लेय परागर भारी, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा.

पूवा पुरी खज्जक ल्याय फेणी, लाडू महासुख बतास फेणी, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

दीयो कल धौत ३ जराय बाती, लायो प्रभु पास अन्धेरघाती, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा.

धूआं उठै तापर भौर सावा, गुंजै करै धूप इह भांति ल्यावा, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा.

पिस्ता सुबादाम नवीन हरे, थारा भराऊँ कलधौत केरे, दोनों.
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

पा च अ फू न दी धू फ४ गनाऊँ, आठौ मिलै अर्घ महाबनाऊँ,
दोनों सुपार्श्वप्रभु पाद केरा, पूजा करौं होय आनँद ढेरी ।७।
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

---

१ सफेद, २ पुष्परज, ३ सुवर्ण, ४ पा—पानी, च—चन्दन, अ—अक्षत, फू—फूल, न—नैवेद्य, दी—दीप, धू—धूप, फ—फल

छन्द दोधक

भाद्रव शुक्ल छठी तिथि जानी, गरभ धरे पृथ्वी महारानी,
तासम आनंदकार न दूजा, अर्घ बनाय करों पद पूजा।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्।

जेठ सुदी जो द्वादशि आनी, जन्म लियो भुवि पै सुखदानी,
मैं युग पाद सरोज निहारी, पूजत हौं धरि अर्घ सिधारी।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्।

द्वादशि जेठ तनो उजियारी, तादिन होत दिगंबर भारी,
पादसरोज जजौं जिनजीके, जाकरि कर्म शत्रु अति फीके[१]।

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यम्।

फाल्गुणकी छठि जानि अन्धेरी, केवल पट्ट लहो गुण ढेरी,
पूजत इन्द्र सभाकर मांही, पूजत मैं कर अर्घ कराही।

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णाषष्ठ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्।

सप्तमि फाल्गुण कृष्ण विचारी, जाय समेद महाहितकारी,
लीन शिवालय थान विशाला, अर्घ बनाय जजौं तिरकाला।

ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णासप्तम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्।

मनहरण—भूप सुप्रतिष्ठित के वंश सर[२] माहि जात[३],
देखे चितना अघात आनन्द बढ़े रहैं।
धारे मकरन्द बड़ी दशों दिशा फैलि रही,
आय भवि भौंरा, नित्य ऊपर मढ़े रहैं[४]।

---

१ कर्म शत्रु निर्बल होते हैं, फीके पड़जाते हैं, २ तालाब, ३ पैदा, ४ भव्य जीव रूपी भौंरे एकत्रित हों

तीन लोक इन्दिरा[१] सुवास[२] पाय हरषात,
कर्णिका सुनख जोति[३] तासों उमड़े रहैं।
तेरे युग चरण सरोज देखि देखिके,
कमल बिचारे एक पायन खड़े रहैं।

छन्द चौपाई

जय आनँद घन सुकृत[४] निवासा, पुजवत[५] सब जगजनकी आसा,
जय सुपार्श्व देवनके देवा, हुतभुक[६] नयनकरत पद सेवा ॥
जो पद नख पर द्युति उमड़ाही, तापर कोटि काम लजिजाही,
जय दरिद्र चूरन भगवाना, पूरन छवि सागर गुणखाना ॥ जय.
भरम हरण जय सरम[७] निकेता, कायोत्सर्ग धारि शिव लेता ॥ जय.
जयपण[८] ऊण शतक गण ईशा, सुनसुन गिरा[९] नवावत शीसा। जय.
जय बिन भूषण भूषित देहा, बिना वसन आनँद के गेहा ॥ जय.
तुम प्रताप विप अमृत सिरसा[१०] रङ्क होय निहचैकरि हरिसा[११] ।जय.
जलथल होय विपम सम नीके, पन्नग[१२] होय हार छवि हीके ॥ जय.
प्रभुप्रताप पावक सियराई[१३] दुश्मन[१४] महा पीतम[१५] हो जाई ॥ जय

---

१ लक्ष्मी २ सुगंध, ३ आपके नाखून की चमक कमल की कर्णिका के समान है और इस कारण भव्य जीव रूप भौंरा घेरे हैं, ४ पुण्य, ५ पूरी करते हो, ६ देवता, ७ सुख का स्थान, ८ - ९५ गणधर, ९ वाणी, १० समान, ११ इन्द्र के समान, १२ सांप, १३ ठण्डी हो जाती है, १४ दुश्मन, १५ मित्र ।

बन शुभ नगर अचल१ महरूपा, मृगपति मृग सो होय अनूपा॥ जय.
तुम प्रताप बिल होय पताला२, तुम प्रताप हो आल१ शृगाला ॥ जय.
शस्त्र होय अम्बुज दल माना, वज्रपात सिर छत्र समाना ॥ जय.
सहस्र जीभ करि तो प्रभुताई, कथन करै तो पार न पाई ॥ जय.
मैं नर हीन बुद्धि कहँ पाऊं, जो प्रभु तो महान गुणगाऊं ॥ जय.
भक्ति सहाय करूं जयमाला, दुखी जानि प्रभु करहु निहाला ॥ १५
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा ॥

घत्ता

इह दारिद हरणी संकट टरनी जयमाला सुख की करनी,
जो पढ़े निरन्तर मन वच तन करि सो पावे अष्टम धरनी।
ओंह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ।

शार्दूल विक्रीडितम्

जो या शुद्ध सुपार्श्वनाथ प्रभु की पूजा करै कारिता,
अनुमोदै मन बचन काय सततं संसार सो हारिता।
पावै ईश पनो महा विभु पनो लोके अलौके लखै,
पूजें देवपती त्रिकाल चरणा आनंद पावे चखै। इत्याशीर्वादः
'ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते।

——:o:——

१ पर्वत, २ गढ्ढा बराबर हो जाय, ३ शेर,

८—श्रीचंद्रप्रभपूजा

छंद गीता (स्थापना)

शुभ चन्द्रपुर नृप महासेन सुलक्षणा माता जने,
सो चन्द्रप्रभ वपु१ चन्द्र सम पद चन्द्र अङ्क सुहावने।
तजि वैजयन्त विमान वंश इक्ष्वाकु नभ के भानु मे,
आऊष दश लख वर्ष उन्नति डेढ़ सै धनुमान मे।

सोरठा

कुमुदचन्द्र भगवान, भविकफुलां२ प्रफुलित करन,
अमिय३ करावत पान, अत्र आय तिष्ठो प्रभो।

ॐह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्)

जोगी रासा

रतनन जड़ित कनकमय भाजन तामधि गंगा पानी,
फटिक समान मिलाय अरगजा गंध बढ़ै मनमानी।
चन्द्रप्रभ के पद नख ऊपर कोटि चन्द्र दुति लाजै,
दरवित भावित भाव शुद्ध करि जजौं सप्त भय भाजै।

ओंह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीतिस्वाहा।

---

१ मुख, २ भव्य रूपी फूल, ३ अमृत।

मलयागिर घसि चन्दन नीको भलौं सितभ्र[१] मिलाऊं,
अग्नि सिखा[२] मिश्रित करि आछो कनक कटोरा ल्याऊं ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल धवल प्रछालि मनोहर मिष्ट अमी समतूला[३],
चुने खंड वर्जित अति दीरघ लखैं मिटत क्षुध शूला ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बरमचकुन्द कुन्द कुन्दन के पुष्प[४] सम्हारि बनाये,
नसत काम की बिथा चढ़ावत पावत सुखमन भाये ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूपकार[५] कृत षटरस पूरित व्यंजन नाना भाँती,
पुष्टि करत हरि लेत दीनता क्षुधा रोग को घाती ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निश्चल ज्योति महा दीपक की प्रभु चरनन के तीरा,
ल्याय धरौं हितपाय आपनो हतै न ताहि समीरा[६] ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंचन जड़ित धूप को भाजन[७] जा मधि धूप जराऊं,
उठत धूम्र मिस करम जनौं वसु फेरि न जग में आऊं ॥ चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ कपूर, २ केसर, ३ जो मिठाई में अमृत की बराबरी कर रहा है, ४ एक किस्म का फूल, ५ रसोईदार, ६ हवा, ७ बर्तन ।

वृन्दारक१ कुसुमाकर द्राक्षा२ क्रमुक३ रसाल४ घनेरे,
इन्हें आदि फल नानाविधि के कंचन थार भरेरे। चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जल गंध अक्षत वर कुसुमा चरु दीपक मणि केरा,
धूप महाफल अरघ बनाऊं पद पूजन की बेरा। चन्द्र
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द शिखरिणी—कही पांचै आछी असित पक्षकी चैत्र महीना,
महाप्यारी रानीभल सुलक्षना नाम कहिना।
बसे रात्रि स्वामी सुभग दिन जाके उदरमा,
जजौं लेके अर्घ मिलत जिहिसो धाम परमा।
ओंह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं।

जने माता भूपै शुभ इकदशी पूस बदि की,
बजे घंटा आदि भेसब अपुनसों क्षोभ अधिकी।
वहां पूजा कीन्ही अमरपति ने जन्म दिनकी,
यहां मैं ले अर्घ जजत करिये चन्द्र जिनकी।
ओंह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं।

कपाली५ संख्याकी तिथि बदि कही पूष पक्ष में,
धरी दीक्षा स्वामी विभव तजिआरण्य६ थल में।

---

१ सुन्दर फूल, देवताओं के फूल, २ किशमिस, ३ सुपारी, ४ आम, ५ ग्यारह, ६ जंगल।

हरे शत्रु सारे कलमष कहे आदि जितने,
लिये अर्घम् भारी चरण युग पूजौं तुम तने।

ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय पौषकृष्णैकादश्यांतपकल्याणकाय अर्घ्यंम्।

भये ज्ञानी स्वामी नवमि कहिये फाल्गुन वदी,
निवारे चौघाती जगत जन तारे सुजलदी।
करें पूजा थारी सुरनर कहे आदि सबते,
इहाँ मैं ले अर्घम् पूजहु मन लगी आस कबते।

ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णानवम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यंम्।

(यहां फाल्गुन वदी ७ शुद्ध पाठ है)

सुदी सातें जानी सुभग महिना फाल्गुन कहा,
भये स्वामी सो तादिन शिखरते सिद्धपर१ महा।
बजे बाजे भारी सुर नर कृत आनन्द वरतें,
करौं पूजा थारी शुभ अरघ ले आज करतें।

ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय फाल्गुणशुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं।

(यहां फाल्गुन वदी ७ शुद्ध पाठ चाहिये)

झूलना—महासेन कुलचन्द गुणकला के वृन्द,
नहिं निकट आवे कदा२ मोह मंथी३।
देखि तुव कांति अति शांतिता की सुगति४,
लाजि निजमन स्वपद रहत मंथी५।
बढ़ी छवि छटाधर६ असित तो तिमिर,
हर अहर्निश मंदता७ लेश नाहीं।

---

१ सिद्ध स्थान को प्राप्त करते हुए, २ कभी, ३ काम, ४ खूबी, ५ कामदेव अपने ही स्थान पर रहा आगे नहीं बढ़ सका, ६ सुन्दरता की झलक लिए हुए, ७ रात दिन मंद नहीं।

कहत 'मनरंग' नित करे मन रंग,
जो धरे मन प्रभू तो चरण मांही।

भुजंग प्रयात

नमस्ते नमस्ते नमस्ते जिनंदा, निवारे भली भांति के कर्म फन्दा.
सुचन्द्र प्रभुनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।१
लखे दर्श तेरी महा दर्श पावे, जो पूजें तुम्हें आपही सो पुजावे,
सुचन्द्र प्रभु नाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।२
जो ध्यावे तुम्हें आपने चित्त माँही, तिसे लोक ध्यावें कछू फेर नाहीं,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ३
गहे पंथ तो सो सुपंथी कहावे, महा पन्थ सो शुद्ध आपै चलावे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ४
जो गावे तुम्हें ताहि गावे मुनीशा, जो पावें तुम्हें ताहि पावें गणीशा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ५
प्रभू पाद मांही भयो जो अनुरागी, महा पट्ट ताको मिले बीतरागी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ६
प्रभू जो तुम्हें नृत्य करकर रिझावे, रिझावे तिसे शक्र गोदी खिलावे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।७
धरे पादकी रेणु माथे विहारी, न लागे तिसे मोह दृष्टिर भारी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा।८
लहे पच्छ तो जो वो है पच्छधारी, कहावे सदा सिद्धि को सो बिहारी

१नजर।

सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। ९
नमावे तुम्हें सीस जो भाव सेरी, नमें तासुको लोक के जीव हेरी[1],
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा १०
तिहारो लखे रूप ज्यों दीसदेवा[2] लगें भोर के चांद से जे कुदेवा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा, ११
भली भांति जानी तिहारी सुरीती, भई मेरे जीमें बड़ी सो प्रतीती,
सुचन्द्रप्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। १२
भयौ सौख्यजोमा कह्यौ नाहिं जाई, जनों आजही सिद्धिकीऋद्धिपाई।
सुचन्द्रप्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। १३
करूं बीनती मैं दोऊ हाथ जोरी, बड़ाई करूं सो सबै नाथ थोरी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पाद की जासु पूजा। १४
थके जो गणी चारि हू ज्ञान धारें, कहा और को पार पावें विचारे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा। १५

घत्ता—चन्द्रप्रभु नामा गुण की दामा[3] पदेभिरामा भरि मनहीं,
अन्तक[4] परछाही परिहै नाहीं तापर कबहूं झूठ नहीं।
ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यम् नि०।

दोहा—पन्थी[5] प्रभु मन्थी मथन[6] कथन तुम्हार अपार,
करो दया सब पै प्रभो जामें पावें पार॥ इत्याशीर्वादः॥
"ॐह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते।

१ देखकर, २ सूर्य्य, ३ माला, ४ मौत, ५ रहनुमा, ६ काम जीतनेवाले, ।

९–श्रीपुष्पदंतजिन पूजा

छंद गीता

काकन्द नगरी पितु सुग्रीवक रमा माता जासु की,
इक्ष्वाकु वंश सुपेद देह उचाव धनु शत तासु की।
स्वर्ग आर्णव तजि द्विपूरव लख सुआयु धरी भली,
पग तरे चिह्न सु मगर सोहत पुष्पदंत महाबली॥ १॥
आवो यहां कृपाल कृपा करो तनि अब आयके,
मैं करूं पूजन अष्टविधि मन वचन सीस नवायके।
जो सरैं मेरे काज अटके करम ठग घेरे खड़े,
तो बिना निवरण[१] होत नाहीं महाभ्रम झगड़े पड़े॥२॥

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)।

उपेन्द्रवज्रा

निर्मल जहां श्रीद्रह[२] को सुनीरं, लेकर भरे कुम्भ महा गहीरं[३],
सुपुष्पदन्त प्रभुपाद पद्मं, पूजूं मिले जो निर्वाण सद्मं।
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ बचाव, २ श्रीनदी, ३ गंभीर।

तनमें घसौं चन्दन कासमीरा, लागे न जो अन्तक[१] की समीरा[२]
सुपुष्पदंत० ॐह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय भवातपविनाशनाय चन्दनम् ।

सुतन्दुलं लज्जितमार[३] गोती, लिये महा तेज अभेद[४] मोती,
सुपुष्पदंत० ॐह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् ।

भले भले फूल चुनाय लीन्हे, स्वअञ्जली में इकठे सुकीन्हे,
सुपुष्पदन्त० ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् ।

सच्छिद्रफेणी सुरमा सुवाजे, भरे महाथार आनन्द लाजे।
सुपुष्पदन्त० ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ।

दीया जरे ज्योति महा प्रकासो, फटे महा जो तम की उदासी[५] ।
सुपुष्पदन्त० ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ।

कही महाधूप सुगंधकारी, दसौं दिशा आसु सुगन्ध[६] जारी ।
सुपुष्पदन्त० ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

दशांगुली[७] दाख बदाम गोला, भरे माथार महाअमोला ।
सुपुष्पदन्त० ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

अड़िल्ल छन्द

हर्षिहर्षि जियभूरि सुतूर बजायके, आठौं अङ्ग नवाय बड़ा हित पायके
महा सु अरघ बनाय अनेगुण उच्चरों, तेरे शुभयुगपदम सरोजन पै धरों
ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं ।

---

१ तीन सम्यग्दर्शनादि, २ मौत, ३ हवा, ४ मरकत मणि की सफेद किरणें जिनके सामने शरमाती हैं, ५ अंधेरे की बेचैनी, ६ फैली, ७ आविश्री ।

सोरठा— नौमी बदी महान, फागुन की शुभ आ दिना,
गरभ रहे भगवान, जजौं अर्घ सो चरन युग।

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

जनमे प्रभु गुण खान, अगहन सुदि एकम दिना,
नमो जोरि जुगपाणि, जजौं अरघ सो चरण युग।

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अगहन शुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं ।

सुदि एकम् अगहान, तप लीन्हों घरबार तजि,
धरत महाशुभ ध्यान, जजौं अर्घ सो चरनयुग।

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय अगहन शुक्ला प्रतिपदि तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।

उपजो केवल ज्ञान कातिक सुदि द्वितीया दिना,
भये सयोगि भगवान, जजौं अरघ सों चरणयुग।

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

सुदि अष्टमि परवान, भादों मास समेद ते,
शिवपद लियो महान, जजौं अरघ सो चरणयुग।

ओंह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय भाद्रपदशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

जयमाल छन्द काव्य

जय कुल कमल दिनेश, चन्द्र[1] भवि कुमुद प्रकाशी,
जय अघहरन प्रताप करन, सुख सिद्ध निवासी।
जय नवीन वर ज्ञान-मित्र[2] के शुभ उदयाचल,
जय अद्रिमा[3] धरि ध्यान सुमनरद[4] लहत परमफल[5]।

---

१ भव्यजीव, २ सूर्य, ३ अचल, ४ कामदेव को रद करने, ५ मोक्ष।

पद्धरि छंद

जय जन्म मरण रुज[१] के हकीम, परमेश्वर परतापी सुसीम[२]:
जग जीव उधारण को महन्त, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त ।
जय खलक[३] जपत तेरो स्वरूप, सो अलख महा आनन्दरूप ।जग.
हो लाभ महा रिपु को कुखेम[४] सब जीवन पै राखत सुखेम ।जग.
जय आदि अन्त वर्जित सदैव, आनादि निधन हो महादेव ।जग.
संशय बन दाहन को कृशानु[५] जय मिथ्या तम नाशन सुभानु। जग.
जय लोक अलोकहि लखत येम[६] धात्री फल[७] लीन्हे हस्त जेम ।जग.
जय ज्ञान महालोचन अपार, सब दरशी भे सर्वज्ञ सार ।जग.
गुण पर्यय द्रव्य कहे त्रिकाल, प्रभु वर्तमान सम लखत हाल ।जग.
जय परम हंस सम्यक्त सार, परमावगाढ़ के धरनहार ।जग.
निज परणतिमें भे परम लीन, प्रभु पर परणति लखि त्याग कीन्ह ।जग
जय दुराराध्य[८] दुख करन शांति, तन फटिक समान महा कांति ।जग
जय दीन बन्धु तुम गुण अपार, सुर गुरु कथि पावत नाहिं पार ।जग
याते प्रभु अब करुणा करेहु, जन जानि आपनो सुक्ख देउ ।जग.

छंद काव्य—पुष्पदंत भगवंत तनी यह वर जयमाला,
पढ़े पढ़ावे कंठ करे सो सब में बाला[९] ।

---

१ रोग, २ बड़े दरजे के प्रतापी, ३ जहान, ४ नाश करनेवाले, ५ आग, ६इस तरह, ७ आंवला, ८ परमेश्वर, जिसकी आराधना मुश्किल है, ९ ऊंचा :.

होय महागुण वृन्द१ त्रास२ सुपने नहिं पावे,
लेय सिद्धि पद अचल फेरि नहिं लोक मंझावे.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ।

सोरठा—पुष्पदंत भगवान, तुम चरणन परतापते,
बरतो सकल जहान पुत्र पौत्र परताप सुख ।इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यंदीयते.

—:०:—

१० श्रीशीतलनाथ पूजा

गीताछंद ।

है नगर भद्दिल भूप द्रढ़रथ सुष्टुनंदा ता त्रिया,
तजिअचुत दिवि३ अभीराम४ शीतलनाथ सुत ताके प्रिया.
इक्ष्वाकु वंशी अंक५ श्रीतरु हेम वरण शरीर है,
धनु नवे उन्नति पूर्व लखइक आयु सुभग६ परी रहे.

सोरठा—सो शीतल सुखकंद, तजि परिग्रह शिव लोक गे,
छूट गयो जग धंद, करिय तसो७ अह्वान अब.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिसन्निधीकरणं)

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

---

१ समूह, २ भय, ३ स्वर्ग, ४ सुंदर, ५ चिन्ह ६ सुंदर ७ इसलिए

अष्टक छंद गीता ।

नित[1]तृषा[2] पीड़ा करत अधिकी दाव अबके पाइयो,
शुभ कुम्भ कंचन जड़ित गंगा नीर भरि ले आइयो.
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भवकी तापसों,
मैं अर्जों युगपद[3] जोरि करि[4] मो काज सरसी आपसों.

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

जाकी महक सों नीम आदिक होत चन्दन जानिये,
सो सूक्ष्म घसिके मिले केसर भरि कटोरा आनिये, तुम०

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

मैं जीव संसारी भयो अरु मरयो ताको पार ना,
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे अक्षय पदके कारना। तुमनाथ

ओंह्रीं श्रीशीतलजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

इन मदन मोरि सकति थोरि रह्यो सब जग छायके,
ता नाश कारन सुमन ल्यायो महाशुद्ध चुनायके। तुमनाथ

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा ।

क्षुधा रोग मेरे पिंड लागो देत मोगेना[5] घरी,
ताके नसावन काज स्वामी लूपले[6] आगेधरी। तुमनाथ

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ हमेशा, २ प्यास, ३ दोनों चरण, ४ हाथ जोड़कर, ५ क्षुधा मेटने के अर्थ सारे समय लगा रहता है, कोई घड़ी भी नहीं बचती, ६ नैवेद्य

अज्ञान तिमिर महान अन्धाकार करि राखो सबै,
तिस पर सुभेद पिज्ञान कारण दीप ल्यायो हूँ अबै ।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
जे अष्ट कर्म महान अतिबल घेरि मो घेरा कियो,
तिन केर नाश विचारि के ले धूप प्रभु ढिग खे पियो ।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुभ मोक्ष मिलन अभिलाष मेरे रहत कबकी नाथजू,
फलमिष्ट नाना भांति सुथरे ल्याइयौ जिन हाथ जू ।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल गंध अक्षत फूल चरु दीपक सुधूप कही महा,
फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हो दोष सो वर्जित कहा ।तुमनाथ
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यं पदप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक गाथा

चैत वदी दिन आठें, गर्भावतार लेत भये स्वामी
सुर नर असुरन जानी, जजहूँ शीतल प्रभू नामी.
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्रायचैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भ कल्याणकाय अर्घम्

माघ वदी द्वादशि को, जन्मे भगवान् सकल सुखकारी,
मति श्रुति अवधि विराजे, पूजों जिन चरण हितधारी.
ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय माघकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घम्
द्वादशि माघ वदी में, परिग्रह तजि बन बसे जाई,
पूजत तहां सुरासुर, हम यहां पूजत गुण गाई.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णा द्वादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्.

चौदशि पूस वदी में, जग गुरु केवल पाय भये ज्ञानी,
सो मूरति मनमानी, मैं पूजों जिन चरण सुखखानी.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णा चतुर्दश्यां ज्ञानकल्याण अर्घ्यम्.

आश्विन सुदी अष्टमदिन, मुक्ति पधारे समेद गिरिसेती,
पूजा करत तिहारी, नसत उपाधि जगत की जेती.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्.

अथ जयमाल ॥ छंदत्रिभंगी ॥

जय शीतल जिनवर परम धरमधर छविके[१] मन्दिर शिव भरता[२] .
जय पुत्र सुनन्दा के गुण वृन्दा[३] सुखी के कंदा[४] दुख हरता,
जय नासा दृष्टी हो परमेष्टी तुमपदनेष्टो[५] अलख[६] भये,
जय तपो चरनमा रहत चरनमा सुआचरणमा कलुषगये.

छन्द स्रग्विणी

जय सुनंदाके नंदा तिहारी कथा, भापि को पार पावे कहावे यथा,
नाथ मेरे कभी होय भव रोग[७] ना इष्ट वियोग अनिष्टसंयोगना॥१
अग्नि के कुण्ड में वल्लभा रामकी-नामतेरे बची सो सती कामकी
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना, इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना॥२
द्रोपदी चीर बाढ़ो तिहारी सही, देव जानी सबों में सुलज्जा रही

---

१ शोभा के स्थान, २ मोक्ष लक्ष्मी के स्वामी, ३ गुण का समूहकारी, ४ मूल, ५ चरण में लीन, चरण भक्त, ६ परमात्मा, निराकार, ७ जन्म मरण संसार,

कुष्ठ राखो न श्रीपालको जो महा, अब्धि ते काढ़ लीनो सितावी तहां।
अंजनाको टिथांसीगिरोजोहतो, भौसहाईतहांतो बिनाकोहतो ।नाथ
शैल फूटो गिरो अंजनीपूत[१] के, चोट ताके लगी ना तिहारे तके ।नाथ
कूदियो शीघ्र ही नाम तो गाय के,कृष्णकालीनथोकुण्डमेंजाय के ।नाथ
पांडवा जे घिरे थे लखागार[२] में राह दीन्हीतिन्हेंतेमहाप्यारमें ।नाथ
सेठ को शूलिका पै धरो देख केकीन्हसिंहासनंआपनो लेखके ।नाथ
जो गनाये इन्हें आदि ऐके सबैपाय परसाद ते भे सुखारी[३] सबै ।नाथ
बार मेरी प्रभू देर कीन्ही कहा कीजिये दृष्टिदायाकीमोपेअहा ।नाथ
धन्य तू धन्य तू धन्य तूमैंनहा जो महा पंचमोज्ञाननीकेलहा ।नाथ
कोटि तीरत्थ है तेरे पदों केतलेरोज[४] धावेंमुनीसोबतावें भले ।नाथ
जानि के यौंभलीभांतिध्याऊं तुम्हेभक्तिपाऊं यहीदेवदीजेमुझे ।नाथ

गाथा—आपद सब दीजे भार भोकि यह पढ़त सुनत जयमाल,
होत पुनीत करण अरु जिह्वा बरते आनंद जाल,
पहुंचे जहं कबहूं पहुंच नहीं नहिं पाई पावे हाल,
नहीं भयो कभी सो होय सबेरे, भापत मनरंगलाल.

ओंह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि०।

सोरठा—भो शीतल भगवान, तो पद पक्षी जगत में,
हैं जेते परवान, पक्ष रहे तिन पर बनी, इत्याशीर्वादः॥

---

१ हनुमान, २ लाख के महल में, ३ दुख भोगनेवाले, ४ काम को नष्ट करने वाला,

११—श्रीश्रेयांसनाथपूजा

स्थापना-छंद गीता

सिंहपुर राजा विमल जाके त्रिया विमलामली,
तजि पुहुप उत्तर श्रेयांस सुत भये हेम वरण महाबली।
धनु असी उन्नत चिह्न गैंडा महत वंश इक्ष्वाकु है,
शुभ वरष लषचउ असी आयुष पुण्यको सुविपाक है। १
तजि राज्यभूति१ धरी दिक्षा तप करो अति घोर ही,
बल शुक्ल श्रेणी क्षपक चढ़ि लहि ज्ञान पंचम जोर ही।
करि करि विहार उतारि अधमनि भव उदधि ते तुम प्रभू,
पुनि आप हू शिवनाथ लिय सो यहां नित आवो विभू। २

ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छंद मालिनी—घनरस२ भरि चोखा रत्नथारी मंझारी,
मिलय हरि सुधारी दीर्घ सौगंध कारी,
नयमन भरि पूजूं पाद श्रेयांस के रे,
नसत असत३ कर्म ज्ञान वर्णादि मेरे। १
ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

---

१ विभूति २ मेघजल ३ बुरे।

सुमन सुरभितामें मेलिह के जो कपूरै,
अति निकट सुजाके भौंर गुञ्जार पूरे। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम्।

अखत अखत नीके श्वेत मीठे सुभारी,
जल करि परछाले खंड वर्जे हकारी। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्।

सुमन ग्रथित माला पंचधा वर्ण बाला१,
लखत लगें नीके प्राण होवे खुशाला२। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम्।

सुरभि घृत पचाई शुद्ध नैवेद्य ताजी,
कनक जड़ित थारा मांह नीके सुसाजी। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।

परम बरत बाती धूम जामें न होई,
तिमिर कटत जासों दीप ऐसी संजोई। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्।

जलत ज्वलन मांही धूप गंधै छटासो,
उड़त मगन भौंरा पाय धूआं घटासो। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।

मधुर मधुर पाके आम्र निम्बू नरङ्गी,
रस चलित सो नाहीं कीजिये जानि अङ्गी। जयमन०

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।

---

१ अच्छा, २ सुखी।

अब करियत अर्घ मे लह के द्रव्य आठों,

मन वच तन लीन्हें हाथ उबारि पाठों। लयमन०

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम्।

छंद चाली—वदि जेठ तनी छठि जानी, जिन गरभ रहे सुखखानी,

जह पूजत सुरपति आई, हम पूजत, अर्घ बनाई.

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णषष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्.

फाल्गुण वदि ग्यारसि नीकी, जननी विमला जिनजीकी,

जनि पुत्र भइ खुशहाला, पूजों जिन पद सुखजाला.

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि फाल्गुन ग्यारसि आई, भावन द्वादशि जु कहाई,

प्रभु होत भये बनवासी, तुम पाद जजों गुणरासी.

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णैकादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि माघ अमावस गाई, ऋद्धि केवल की शुभ पाई,

प्रभु नाशत कष्ट घनेरे, ले अर्घ जजों पद तेरे.

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय माघकृष्ण मावास्यायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

श्रावण की पूरन मासी सम्मेद शिखर ते पासी,

शिव रमणी परणी जाई, तुम चरण जजों सिरनाई.

ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला पूर्णमास्यांमोक्षकल्याणकायअर्घ्यम्.

छंद त्रिभंगी—जय पद सर तेरे तीक्षण टेरे कहरी घनेरे गरम हरी,

जय तिन गति सूधी धरत न मूंदी बात न मूंदी यह सुखरी.

तुम चरण तनी परसादपाय, विनभ्रमचिन्तामणिमिलतआय,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ, मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।
बलिहारी इन चरण की जाऊं, नहिं फेर धराऊं कतहुनाऊँ । अब

घत्ता—श्रेयनाथ भगवन्त तनी यह बर जय माला,
मन वच तनय लगाय पढ़े जो सुनहि त्रिकाला ।
सिद्धि ऋद्धि भरपूर रहे ता गृह के मांही,
मंगल वृद्धि महान होय नहिं घटे कदाही ।

ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ।

सोरठा—श्रेयनाथ भगवान, श्रेय करण को प्रण भले,
लियो कहत मतिवान, सो करिये सब जग विषे ।इत्याशीर्वादः

"ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

१२ श्रीवासुपूज्यपूजा

छन्द गीता

शुभ पुरी चम्पा नृपति जहँ वसु पूज्य विजया ता त्रिया,
तजि महाशुक्र विमान ता घर वासुपूज्य भये प्रिया ।
सिंह बरन उचाव सत्तरि चाप वंश इक्ष्वाकु हैं,
सत्तरि औ द्वै लख वर्ष आउष अंक महिष भला कहैं ।

सोरठा—वासुपूज्य जिनदेव, तजि आपद जिन पद लयौ,
करत इन्द्र पद सेव, मैं टेरत इह आव अब ।

ॐह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्)

भरि सलिल महा शुचि झारी, दे तीन धार सुखकारी,
पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई।
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा,
घसि पावन चन्दन लाऊं, नाना विधि गन्ध मिलाऊं। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा
अक्षत ले दीर्घ अखंडे, अति मिष्ट महाद्युति मंडे। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षतपदप्राप्तये अक्षयान् निर्वपामीति स्वाहा
मन्दार कलक के फूला, बहुल्याय धरों सुखमूला। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा
मधुरा पक्वान्न घनेरा, ले मादक लाडू पेरा। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा
करि रत्न तनो शुभ दीयो, निज हाथन पै धरि लीयो। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा
कृष्णागरु धूप मिलाई, दहिये शुभ ज्वाल मंगाई। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा
फल आम नरंगी केरा, बादाम छुहार घनेरा। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा
ले आठों द्रव्य सुहाई, जल आदिक जे शुभताई। पद पूजन
ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा

आसाढ़वदी छठि गाई, जिन गर्भ रहे सुखदाई,
हम गरभ दिना लख सारा[१] ले अरघ जजों हितकारा।

---

१ शुभ

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय आषाढकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वदि फाल्गुन चौदशि जानी, विजया जिन जने सुखदानी,
वह मूरत मो मन भाई, जजिये पद अर्घ बनाई ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं ।

वदि फागुन चौदशि दीक्षा, लीन्हीं अपनी शुभ इच्छा,
तप देवन जय जय कीन्हीं, हम पूजत हैं गुण चीन्हीं ।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं ।

दिन माघ सुदी दुतिया के, अपरान्ह[1] समय सुखदाके,
उपजो केवल पद केरा, पद पूज लहौ शिव डेरा ।

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय माघशुक्लाद्वितीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं ।

चंपापुर ते सुखदानी, भादों सुदि चौदशि मानी,
अविनाशी जाय कहाये ले अर्घ जजों गुण गाये ।

ओंह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं ।

छन्द जयमाला

जय जय विजयासुत सकल जगत नुत अष्टकर्म च्युत जित मयना[2]
गुण सिंधु निहारे चरण निहारे, सफल हमारे भे नयना ।
जो हता[3] कालिमा कुगुरु लखनकी भाजि गई सो छक[4] पलमा,
पाई, मैं साता[5] नासि असाता शान्ति परी मो अन्तर मा[6] ।

---

१ तीसरे पहर, २ काम, ३ थी, ४ एक पलमें, ५ सुख, ६ मेरे मन में शान्ति हुई ।

छन्द—जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र देवजू,
पुलोमजापती करे पदारविंद सेवजू।
दीन बंधु दीन के सम्हारि काज कीजिये,
मो कवै[1] निहारि आपमें मिलाय लीजिये।
राग दोष नासिके भये सुवीतराग जू,
मुक्ति वल्लभा तनो जगो महान भाग जू। दीनबंधु०
भूख प्यास जन्म रोग जरा मृत्यु शोगना,
खेद स्वेद भीति भाव हू अचंभ सोग ना। दीनबंधु०
नींद मोह आर्ति लाभ आदि है नहीं सदा,
वर्जित अरत्ति है अचिंत भाव तो सदा। दीनबंधु०
दोष नासि के अदोष देव तू प्रमान है,
दोष लीन देव जो कुदेव के समान है। दीनबंधु०
पाय के कुदेव साथ नाथ मैं महा भ्रमो,
लक्ष चारि औ अशीति योनि माँझ ही गमो[2]। दीनबंधु०
देख तो पदारविंद नाथ सूधि मो भई,
जानि के कुदेव त्याग रूप बुद्धि परनई। दीनबंधु०
जो पदारविन्द नाथ शीस पे नहीं धरे,
बूड़ते समुद्र यान छांडि पाहने गहे[2]। दीनबंधु०
ते बिना न देव जीव मोक्ष राह पावही,
तो विवेक आप और को न भावही। दीनबंधु०

---

१ मेरी तरफ नजर करके, २ भ्रमण किया ८४ लाख योनि में, २ जो आपके चरण कमल सिर पर नहीं रखता वह उस पुरुष के समान है जो डूबते हुए नौका को छोड़ के पत्थर का सहारा ले।

मान त्याग भाव तो चरन में लगावही,
सो अमान१ पूज्यमान सिद्धि ठाम जावही ॥
दीनबंधु दीन के सम्हारि काज कीजिए०
तो प्रसाद नाथ पंगुला चढ़े पहाड़ पै,
जो चढ़े अचंभ नाहिं जीत लेय मार पै२ ॥ दीनबंधु ॥
मूक बोल बैन मिष्ट इष्टता धरे महा,
तो प्रभाव सिद्धिनाथ होय ना कहा कहा ॥ दीनबंधु ॥
रेणुका पदारविंद की महा पुनीत सो,
सीस पै धरे सुधार होत है अभीत सो ॥ दीनबंधु ॥
भे भवाब्धि पार जे निहारि रूप तो तनो,
मअरंगलाल को सदा सहाय तू बनो ॥ दीनबंधु ॥

घत्ता—वासुपूज्य जिनराज प्रभू की शुभ जयमाला,
करम तनो ऋण हरण काज बरनी सुखशाला।
पढ़त सुनत बुधि बढ़त कढ़त दारिद्र दुखदाई,
जस चमकत दश दिशा धरम सो होत मिताई।

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि० ।

सोरठा—वासुपूज्य महाराज, तुव पद नख अति चन्द्र दुति,
निज निज साधो काज, जासु चन्द्रिका में सकल३ । इत्याशीर्वादः ।

'ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते ।

---

१ मान रहित पुरुष, २ कामदेव को जीतले, ३ आपके चरण कमल रूप चाँद की चाँदनी में सब जीव अपने-अपने काम सिद्ध करो ।

१३—श्रीविमलनाथजिनपूजा

छंद गीता

कंपिल्ला नगरी सुकृतवर्मा पिता स्यामा मात के,
सुत विमल वंश इक्ष्वाकु अङ्क बराह शुभ जगतात के।
साठ धनु उन्नत सुकंचन वर्ण देह विराजही,
सहस्रारतें[1] चय साठ लख वर्ष सुआऊषा लही।
प्रभु विमल मति कर विमल मति मो विमलनाथ सुहावने,
गुण कन्द चन्द अमंद आनन जगत फन्द मिटावने।
अब लगी मो मन की सुआसा पाद पूजन की भली,
तनि करो किरपा धरो पग इह आयजो पाऊं रली[2]।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)
ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्रममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

मैं ल्याय सुभग कबन्ध[3] चन्दन मंद मंद घसाय के,
मिलवाय त्रिषा निकंद कारन झारिका भरवायके।
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड सुहावने,
पद अर्जों सिद्धि समृद्धि दायक सिद्धि नायक तो तने।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

घसवाय चन्दन अरगजा[4] कर्पूर वासव वल्लभा[5],
धरि रतन जड़ित सुवर्ण भाजन मांहि जाकी अति प्रभा। प्रभु०

---

१ स्वर्ग का नाम, २ सुख, ३ जल, ४ अगर, ५ केसर, इन्द्र की प्यारी।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

अति दीर्घ तंदुल धवल छाले पुंज साजे थार में,
चन्द्रमा लज्जित शरद ऋतु के कुन्द सकुचें हार१ में। प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

बहु अमल कमल अनूप अनुपम सहस दल विकसे कहे,
सो धारि कर पर देखि शुभतर भाव कर वर ते लये२ । प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

शतछिद्रफेनी धवल३ चन्द्र समान कांति धरे घनी,
वर क्षीर मोदक शालि ओदन मिले खांडा सोहनी४ । प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

मणि दीप दीपति जोति दश दिशि झोक लगै न पौन की५,
ना बुझत धरि कंचन रकेबी कांति प्रसरित जौन की । प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायदीपं निर्वपामीति स्वाहा

ले धूप गंध मिलाय बहु विधि धूमकी सुघटा लिये,
सो खेय धूपायन विषय६ सब कर्मजाल प्रजालिये । प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा .

---

१ धोए हुए और खुशबूदार ऐसे हैं कि चांद और फूल शरमाते हैं, २ हजार दल के खिले हुए कमल अच्छे देखकर हाथ में लिए, ३ फेनी एक मिठाई है- सुराखदार, ४ अच्छी खांड़मिलाके, ५ हवा, ६ धूपदान

ले क्रमुक१ पिस्ता बांगली२ अरु दाख बादामे घनी,
शुभ आम्र कदलीफल३ अनूपम देवकुसुमा४ सोहनी ॥प्रभु०
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

शुभ जीवन५ चंदन अक्षतं सुमना प्रवर६ चरु७ ले दिवा८
और धूप फल इकठे सुकरि के अरघ सुन्दर मैं किया ॥प्रभु०
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा

छन्द मालती.

जेठ वदी दसमी गनिये प्रभु गर्भावतार लियो दिन आछे,
इन्द्र महोत्सव कर सुसुरी बहु९ राखि गयो जननी ढिग पाछे,
देविकरैं जननीकी तहा बहु सेव अभेव१० अनंदही आछे११ ।
मैं अब अर्घ बनाय जजों पद मो मन औरभिलाष न राखे ।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्

माघ वदी गनि द्वादशि के दिन सुकृतवर्म घरे सुतिया१२ के,
निर्मलनाथ प्रसूत भये जग भूषण हैं वर मुक्तिप्रिया के,
जौ लग केवल की पदवी नहिं लेत अहार निहार न जाके,
पूजत इन्द्र शची मिलि के सब मैं पद पूजत हौं युग ताके ।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां शुद्ध पाठ माघ शुक्ल ४ होना चाहिये)

१सुपारी, २ नारियल, ३ केला, ४ देव वृक्षके फूल, पारिजात मंदार संतान कल्प वृक्ष, हरिचन्दन, ५ शुद्ध जल, ६ उत्तम, ७ क्षीर, ८ दीपक ९ सुंदर देवियां, १० निरन्तर, ११ मैं हैं, १२ सुकृत वर्म राजा की सुन्दर रानी के

माघ वदी शुभ चौथ कहावत छोड़त यावत राजविभूती,
वास कियो वनमें मनमें लख जानि सबै जग की करतूती,
केश उपारि सुखारि भये शिव आस लगी सुखकी सुप्रसूती[१]
मैं पदकंज सिधारि[२] जजू अब मोहि खिलाहु सो अमरूती[३]

ॐह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा चतुर्थ्यां तप कल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां भी माघ शुक्ला ४ होना चाहिये)

केवल घातक जो प्रकृती सो तिरेसठ घात करी तुम नीके,
माघ वदी छठि में उपजो पद केवल भे प्रभु दीन दुनी के,
दे उपदेश उतारि भवोदधि काज सिधारि दिये सबही के,
पूजत मैं पद अर्घ बनायके तो लखि देव लगे सब फीके,

ॐह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णाषष्ठयां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां माघ सुदी ६ होना चाहिये)

छांड़ि सयोग[४] सुथानलियोसुअयोग[५]कहोजिहिकीथितिआनी[६]
पंचहि ह्रस्व समय तिहि भूरि[७] कहे अवसान समय युगमानी[८]
हानि पचासी अघातिय की प्रकृति तिनमें सुबहत्तरि मानी[९]
अन्त समय करि तेरह चूरन सिद्ध भये पद पूजहु जानी[१०]

---

१ सुख के पैदा करने वाली, २ सिर पर धार, ३ अमृत, ४ सयोग केवली नामा तेरहवां गुण स्थान, ५ चौदहवां गुण स्थान, ६ तिस अन्तिम गुण स्थान की नियत स्थिति कहते हैं, ७ सो कुल इतनी है जितना काल अ, इ, उ, ऋ, ऌ, इन पांच स्वरों के उच्चारणमें लगता है, ८ अन्त के दो समय में, ९ अघातिया ८५ प्रकृति में से बहत्तर का नाश किया, १० अन्त समय में बाकी १३ का भी नाश करके मोक्ष गये

दोहा—शुभ आषाढ़ कृष्णाष्टमी, विमल भये मल दूर,
पूरि रहे शिवगण विषे[१] जजहु अरघ ले भूरि।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय आषाढ़कृष्णाष्टम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं।

अथ जयमाला-छंद त्रिभंगी

जय सुकृत वरमा के शुभ घर मा पूरन करमा[२] भे परमा,
जय करत सुधरमा, रहित अधरमा रहत जगन्मा पदतरमा[३]।
जोगुणतोतरमा[४] नहिं गणधरमा बसतअकरमा[५] शिवसरमा[६],
आवा तजिशरमा[७] जोतुम घरमा[८] फेरि न भरमा दर दरमा।

भुजंग प्रयात—गुणावास[९] श्यामा भली जासु अम्बा,
भये पुत्र जाके दिखाये अचंभा,
रहे जासु के द्वार पै देव देवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा॥ १
लखी चाल मैं नाथ तेरी अनूठी,
बिना अस्त्र बांधे करे शत्रु मूठी[१०],
लई जय तिहूं लोक मैं जीत एवा। नमो जय॥ २
पड़ी कण्ठ में नाथ के मुक्ति माला,
विराजे सदा एकही रूप शाला[११],

---

१ सिद्धों के बीच में जा विराजे, २ कृत कृत्य, ३ जिनके चरण कमल में लक्ष्मी निवास करती है, ४ आपमें जो गुण हैं, ५ जिनके कर्म समाप्त होगए हैं, ६ हे सर्व कल्याण मूर्ति, ७ शरम, लाज, ८ जिनके मंदिर, देवालय, ९ गुण-निधान, १० दुश्मन को मुट्ठी में करे, ११ रूप मन्दिर।

सुरासुर तेरे लगी देन जेवा[1],
नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा ॥ ३
लखे रूप तेरो करे शुद्धताई,
न लागे कभी ताहि कर्मादि काई,
महा शान्तिता सुख ही में धरेवा । नमो जय ॥ ४
प्रभू नाम रूपी दीवा जीभ द्वारे[2],
धरे बाहिर[3] सो बाह्याभ्यंतर निहारे,
पिछाने भली भांति सो आतम भेवा[4] । नमो जय ॥ ५
न देखा कभी सो लखे मुक्तिवामा,
वहां जायके वेश[5] पावे अरामा,
विराजे तिहुं लोक में जो मथेवा[6] । नमो जय ॥ ६
नवावे तुम्हें लोक में माथ जेते,
करें पाद पूजा भली भांति ते ते,
तिन्हों की सदा त्रास भव की कटेवा । नमो जय ॥ ७
अतः[7] देव तुम्ह नमस्कार कीजे,
बड़ाई तिहुं लोक में पाय लीजे,
सबै जन्म की कालिमा जो मिटेवा । नमो जय ॥ ८
महा लोभ रूपी घटा को हवाजू[8],
वर्द्धमान सुण्डाल[9] कण्ठीरवा[10] तू,

---

१ आपके पास बसे में नेग अथवा देवे लगी, २ जिह्वा, ३ उजाला, ४ भेद, ५ प्रवेश, ६ तीन लोक के शिखर पर अर्थात् मस्तक पर विराजमान है, ७ इस कारण, ८ हवा, ९ हाथी, १० शेर।

न राखी कबौ दोष की आनि टेवा। नमो जय ॥ ९

कुतृष्णा महामीन को मीनकेतू१,
मिटावन्न को व्याधि एके कहा तू,
न दूजा कोऊ और तोसो कहेवा। नमो जय ॥ १०

नहीं शर्ण कोऊ बिना तुम हमारो,
तिहुं लोक में देखिही देखि हारो।
न पायो प्रभू सो कोऊ सुद्धि लेवा। नमो जय ॥ ११

जगत काल को है चबेना बनाई,
कछू गोद लीन्हे कछू ले चबाई,
गहे पाद में जानि रक्षा कि टेवा। नमो जय ॥ १२

भलो वा बुरो जो कछू हों तिहारो,
जगन्नाथ हे नाथ मो पै निहारो,
बिना नाथ तेरे न एकौ बनेवा। नमो जय ॥ १३

चले काल ब्यारी२ भरे झूठ पानी,
नवैया३ हमारी महाबोझ चानी,
करैया तुही नाथ मो पार खेवा। नमो जय ॥ १४

घत्ता—मतिमाफिक हम करी मढ़त यह विमलनाथ प्रभुकी जयमाल,
पढ़त सुनत मन वच तन नीके नसत दोष दुख ताके हाल४।
सुमति बढ़त नित घटत कुमति भ्रमदुरत५ रहत दुरागमनओकाल,

---

१ मीन नाशक, २ हवा, तुफान, ३ नौका, ४ जल्दी, तत्काल, ५ छिप रहता है

भरमनाशि शुभ शर्म१ दिखावत करम न पावत जाकी चाल।

ओंह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि० ॥

सोरठा—विमलनाथ जगदीश, हरहु दुष्टता जगत की,

तुम पद तर सुखदीश२, सो करिये सब जगत पै। इत्याशीर्वाद:

"ॐह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यंदीयते।

—:o:—

१४–श्रीअनन्तनाथजिनपूजा

गीता छंद—अवध नगरी बसत सुन्दरधराधिप हरिसेन हैं,

ता त्रिया सुरजा सुत सुजाके नन्त प्रभु सुख देन हैं।

तजि पुष्प उत्तर धनुष अधशत३ वपु उचाई स्वर्ण में,

इक्ष्वाकु वंशी अङ्क सेही आउ तिस लख वर्ण में।

सोरठा—सो अनन्त भगवन्त, तजि सब जग शिवतिय लई,

भजत सदा सब सन्त, आय यहां तिष्ठो प्रभो।

ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

हिमवन द्रह को नीर ल्याय मन मोहनो,

पय समान अति निर्मल दीसत सोहनो।

प्रभु अनन्त युगपाद सरोज निहारि के,

जपहु अटल पद हेत हर्ष उर धारि के॥

---

१ कल्याण, २ जो सुख आपके चरणों में दिखलाई देता है, ३ पचास धनुष।

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

मलयज घसौं मिलाय शुद्ध कर्पूर ही,
गंध जासु प्रति प्रसरित दश दिश पूरही।
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज निहारि के॥

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्रायभवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल विशाल बड़े मन भावने,
उठत छटा छवि तिन अति दीखत पावने। प्रभु अनन्त॥

ॐह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

सुमन मनोहर चंप चमेली देखिये,
प्रफुलित कमल गुलाब मालती के लिये। प्रभु अनन्त॥

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

हरत क्षुधा अति करत पुष्टता मिष्टते,
व्यञ्जन नाना भांति थार भर इष्टते। प्रभु अनन्त॥

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक जोति जगाय गाय गुण नाथ के,
निज पर देखन काज ल्याय निज हाथ में। प्रभु अनन्त॥

ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

खेवूं धूप मंगाय धूप दह में भली,
जासु गंधकरि होत सु मतवारे अली। प्रभु अनन्त॥

ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

मधुर वर्ण शुभ नाना फल भरि थार में,
ल्याय चरण ढिग धरहुं बड़े सतकार में। प्रभु अनन्त॥

ओंह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन वर तंदुल सुमन सूप ले,
दीप धूप फल अर्घ महा सुख कूप[१] ले प्रभु अनंत

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

नृप सौध[२] ऊपर हरषि चित अति गज्य[३] गुण असमान,
षट् मास आगे रतन बरषा करत देव महान।
कातिक वदी एकम कहावत गर्भ आये नाथ,
हम चरण पूजत अरघ ले मन वचन नाऊं माथ।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कार्तिक कृष्ण प्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं,

शुभ जेठ महीना वदी द्वादशि के दिना जिनराज,
जन्मे भयो सुख जगत के चढ़ि नाग[३] सहित समाज।
शचिनाथ आय सुभाव पूजा जनम दिन की कीन,
मैं जजत युगपद अरघ सो प्रभु करहु संकट छीन।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं

वदि जेठ द्वादश जाय बन में केश लुञ्चत धीर,
तजि बाह्याभ्यन्तर सकल परिग्रह ध्यान धरत गंभीर।
मैं दास तुम पद ईह[४] पूजत शुद्ध अरघ बनाय,
तहँ जजत इन्द्रादिक सकल गुणगाय चित्त हरषाय।

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णाद्वादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यं

अम्मावसी वदि चैत की लहि ज्ञान केवल सार,
करि नाम सार्थक प्रभु अनंत चतुष्ट लहत अपार।

---

१ सुख का भंडार, २ राज भवन, ३ हाथी, ४ यहां

करुणा निधान निधान सुख के भव उदधि के पोत,
मैं जजत तुम पद कमल निरमल बढ़त आनन्द सोत।

ओंह्रीं श्रीमनंतनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्णामावस्यायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं।

बदी पंचदश कहि चैत की करुणा निधान महान,
सम्मेद पर्वत ते जगत गुरु होत भये निर्वान।
तह देव चतुरनि काय विधि करि चरण पूजे सार,
मैं यहां पूजत अर्घ लीन्हे पद सरोज निहार।

ओंह्रीं श्रीमनंतनाथजिनेंद्राय चैत्रकृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं।

जयमाला - छंद त्रिभङ्गी

जय जिन अनन्त वर गुण महंत तर परम शान्ति कर दुख न दरे,
निज कारज कारी जन हितकारी अधम उधारी शर्म धरे,
जय जय परमेश्वर कहत वचन फुर[1] रहत सदा सुर पग पकरे,
प्रभु करहु निवेरा पातक घेरा मनरंग चेरा नमत खरे।

पद्धरि छंद

जय जय अनंत भगवंत संत, जग गावत पद महिमा महंत,
ते पावत जावत सिद्ध राज, जाके मारग में दिवि समाज[2]।
प्रभु मूरत भय भंजन विशेष, भविजन सुखपावत देखि देखि,
रंजन भविनीरज[3] वन दिनेश, निरअञ्जन अञ्जन बिनु विशेष।
घट आवत जाके तुम दयाल, सो घट घट की जानत त्रिकाल,
भटकत नहिं जो संसार माहिं, नहिं अटकत कोई काज ताहि।

---

१ सत्य, २ मोक्ष के रस्ते में स्वर्ग भोग पड़ते हैं, ३ भव्य जीव रूपी कमलों के वन को प्रफुल्लित करने में सूर्य के समान है।

फटकत नहिं जाकी ओर मोह, पटकत सो चौपट मांझ द्रोह[१]
लटकत नित जाकी कृत[२] पताक, भटकत माया बेली झटाक ।
सटकत लखि जाको रूप मान, बच ताके गटकत सिग जहान[३]
छटकत चहुँ गिरदा सुजस जासु, खटकत नहिं दृगमधि[४] छबिसुतासु
तुम धन्य धन्य किरपा निधान, जो करत जानि जन निज समान
इह खूबी का पर कहिय जाय, जय जय जग जीवन के सहाय ।

जय जय अपार पारा न वार, गुण कथि हारे जिह्वा हजार ।
मथि डारो तुम बैरी मनोज, बलिहारी जैयत[५] रोज-रोज ।
जय अशरण को तुम शरण एक, सब लायक दायक शुभ विवेक
जग नायक मन भायक सरूप, जय नमो नमो आनन्द कूप ।

जय सुख वारिध बेला[५] निशेप, नहिं राखत आरति जानिलेश ।
दुति ऊपर वारो कोटि भानु, प्रभु नासत मिथ्या तम महानु ।
तुम नाम लेत करुणा निधान, टूटत गाढ़े बन्धन महान ।

पवनाशन[६] पग तल चांपि लेत, विषम स्थल जाको नित सुखेत ।
ऐरावत सम अति क्रोधवान, सनमुख आवत दन्ती महान ।
वस होय तिहारे नाम लेत, जय-जय शुभ अतिशय के निकेत[७]
तुम नाम लक्ष जाके निधान, नहिं अग्नि करै दग्धायमान ।
पावै ठग बटमारो न कोय, इह प्रभुता जानत सकल लोय[८] ।

---

१ द्वेष, २ कीर्ति की ध्वजा, ३ समस्त संसार, ४ जाऊं, ५ ज्वारभाटा अर्थात् निराकुल सुख, ६ सर्प, ७ स्थान, ८ लोक ।

करुणा कटाक्ष तनि करौ हाल, जासो हूँ[१] होउ अति विहाल ।
वसु कर्म विशोऊं निमष मात्र, जाऊं निज पद तजि सकल गात्र[२]।

घत्ता— इह अनन्त भगवन्त तनी सुन्दर जयमाला,
पढ़ि जाने जो कोय होय गुण गण की माला ।
सुनत धुनत अति क्रोध, बोध पावे सुखकारी,
जाय पढ़े ते मिलत सिद्धि तिय जो अति प्यारी ।

सोरठा— हे अनन्त जिनराज, कलुष काट करिये जलद,
पूरण पुण्य समाज, जो सुख पावे जगतजन । इत्याशीर्वादः

'ओंह्रीं श्रीअनन्तनाथ जिनेंद्राय नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

—:o:—

१५-श्री धर्म्मनाथ पूजा

छन्द गीता [स्थापना]

पुर रतन राजा भानु जाके सुव्रता रानी महा,
सुत भये ताके धर्मनायक बज्र[३] अंक भला कहा ।
इक्ष्वाकुवंशी हेम सा तनु बरष दस लख आयु है,
सर्वार्थ सिद्धि विमान तजि पैताल[४] धनुष उचाव है ।

ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

दोहा— सो वृषनाथ जहाज सम, तारण को जगजीव,
करुणा करि आवो यहां, दुखरोधन[५] शिवपीव[६] ।

---

१ मैं, २ शरीर परिग्रह, ३ आयुध विशेष, ४ पैंतालीस, ५ दुखनाशक, ६ सुखप्रिया, ।

ले अति मिष्ट अमल गंगाजल नाना गंध मिलाये,
पुरट[१] कुम्भ शुभ जटित रतन सो जतन समेत भराये।
धर्मनाथ जिन धर्म धुरंधर तिन पद जलरुह[२] केरी॥
अजन आत्म अनुभव के कारण कीजत आज भलेरी,

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

हुतभुकलयनप्रिया[३] युत चंदन नाम अरगजा जाको।
मिले कपूर सुगंध उठावत ल्याय कटोरा ताको। धर्मनाथ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

शालि महाअवदात[४] मधुर अति दीरघ कांति घनेरी,
भरि कलधौत[५] तने शुभथारा सुन्दर पुञ्ज अनेरी। धर्मनाथ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन सुमन वच तनसों चुनि चुनि चम्प चमेली केरे,
ललित गुलाब तामरस[६] फूले औरहु फूल घनेरे। धर्मनाथ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध अन्न घृत माहिं पक्व करि व्यञ्जन अधिक बनाऊं,
भरि थारा चित चाव बढ़ावत लो प्रभु आगे ल्याऊं। धर्मनाथ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जोति जगाय पाय चित साथा घातित मोह अन्धेरा,
रतनन जडित कनक मय दीपक कर पर धारहु सबेरा। धर्मनाथ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ सोना, २ कमल, ३ अग्नि के मुख के समान लाल एवं प्रिय अर्थात केसर,
४ सफेद, ५ सोना, ६ कमल।

महकत छिगावली जा खेये ऐसी धूप भली सो,
दाहि धूपदह में प्रभु आगे लेत सुवास अली सो।धर्मनाथ
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

चिरमट१ अम्रपनस२ दाड़िम३ ले दाख कपित्थ४बिजौरे५
भरि भरि थार सदा फल नीके करि करि भाव सुधीरे६।धर्मनाथ
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

धरि धरि चाव भाव दोऊ शुभ अन्तर बाहर केरे,
करि करि अर्घ बनाय गाय नित कई सगुण बहु तेरे।धर्मनाथ
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय सर्व सुखप्राप्तये अर्घ्यम् नि० स्वाहा

अड़िल्ल—मात सुब्रता उर में जिनवर आनियो,
तेरसि सुदि वैसाखवनी शुभ जानियो।
गर्भ महोत्सव इन्द्र भली विधि सों कियो,
मैं पूजत हों अघ लिए हुलसे हियो।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय वैशाख शुक्ल त्रयोदश्यां गर्भ कल्याणकाय अर्घ्यम्

माघ महीना तेरसि उजियारी कही,
जगत उधारण दीन बन्धु प्रगटे मही।
भविक चकोरा देखि देखि आनन्द हिये,
लिये अर्घ मैं पूजत शिव आशा किये।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म कल्याणकाय अर्घ्यम्

---

१ फूट, २कटहल, ३ अनार, ४ कैथ, ५ एक प्रकार का नींबू, ६ सुंदर, ७ परिजन बंधु

विषय भोग सब विष के सम जाने मने,
राजपाट धन धान्य पुत्र दारा जने १।
माघ श्वेत त्रयोदश के दिन छांड़ि के,
संजम ले वन बसे जजहु पद जानिके।

ओं ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय माघ शुक्ला त्रयोदश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

पूस पूर्णिमा के दिन केवल होत ही,
भयो जगत मधि छोभ और उद्योत ही।
निज-निज वाहन चढ़ि इन्द्रादिक आयके,
जजत भये हित पाय जजहुं मैं भायके।

ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय पौष पूर्ण्याम् ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यम्।

निज कारज पर कारज करि जिन धर्म जू,
जेठ तनी सित चौथ हने वसु कर्म जू।
मुक्ति कन्या का वरी सिखर सम्मेद से,
मैं पूजत युग चरण बड़ी उम्मेद से।

ॐ ह्रींश्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थ्याम् मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्

त्रिभंगी.

जय धरमनाथ वर धरम धराधर आतम धरम हर टेक धरी,
तजि सकल अनातम लहि अध्यातम रात मिथ्यातम नाशकरी।
जय तुम पद पक्षी[२] पावत अक्षी[३] जो शिव लक्ष्मी प्रगट पने,
मन बच तन ध्यावे मनरंग गावे कष्ट न पावे सो सुपने।

स्रग्विणी.

जय मुदा[४] रूप तेरे क्षुधा रोग ना, ना तृषा ना मृषा लस्यना शोकना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोक मैं आवना।

---

१ परिजन बन्धु, २ आपके भक्त, ३ मोक्ष को देखने वाले ज्ञान-चक्षु
४ आनन्द स्वरूप.

तात ना मातना मित्र ना शत्रु नापुत्र दारादि एको कहे कुत्र ना।पूरिये
वर्णना गंध ना ना रस स्पर्श ना भेद ना खेदना स्वेद ना दर्शना पू०
कर्म ना भर्म ना और नोकर्म ना पंच इन्द्री भई रंच हू सर्मना१।पू०
रागना रोष ना मानना मोहना पापबा पुण्यना बंधना छोह२ ना।पू०
मार्गणा ना गुणस्थान संस्थान ना जीवसमासनाक्लेशस्थानना।पू०
मक्ति छपादि ना शंख कंखादिना लिंगना विंगना ज्ञान मर्यादना।पू०
ना उदय कोऊना वर्गणा वर्गना४ शीततप्तादिकोऊहीउपसर्गना।पू०
आदिना अन्त ना वृद्धना बालना, ना कलंकादि एको कहो कालना।पू०
गर्जना हर्जना ना कर्ज ना दर्ज ना श्लेष्मऔवातपित्तादिकामर्जना५
धार ना पार ना नाहिं आकारना, पारना वारना कोई संस्कार ना।पू०
नहिं बिहार अहार नीहारना तोहि योगी बतावें तरंतारना ।पू०
योगना काम संयोग को हेतु ना, एक राजै सदा ज्ञान में चेतना पू०
देव यातें नमो तोहि है;फेरना, कीजिये काज मेरो करो देरना ।पू०

घत्ता, छंद मालती ।

जो जिन धर्म तनी जयमाल धरे निज कंठ महा सुख पावे.
होय न लोक तिसे निहचे जनमादि बड़े दुख ताहि मिटावे ।
पाय सो काल सुलब्धि भया फिरि जायके सिद्धि इते नहिं आवे,
लोक अलोक लखे सुख सो वह ताहि सबै जग सीस नवावे ।

---

१ इन्द्रिय सुख कम न हुआ, २ निर्जरा, ३ मक्खी, भौरा, सँख, कान खजूरा, अँगहीन, अल्पज्ञता, ४ जाति पर्याय ५ फ़ारसी—मतलब, नुकसान, उधार देना, लेखा रोग.

छंद-ऐसो स्वामी धर्म देवाधि देवा, पूजे ध्यावे तो हि इन्द्रादि एवा,
जेते प्राणी लोक में तिष्टमाना, ते ते पावो तोदये[१] सुक्ख नाना।

इत्याशीर्वादः

"ओंह्री श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय नमः" अनेन मंत्रेण आर्घ्यं दीयते।

१६-श्रीशांतिनाथपूजा

छंद गीता

शुभ हस्तिनापुर नृपति जहं हैं विश्व सेन महावली,
पितु मातु ऐरा शांति सुत भये कनक छवि देही भली।
कुरु वंश आयुष वरष लख चालीस धनु ऊँचे खरे,
सर्वार्थ सिद्धि विमान तजि मृग चिन्ह धरि इह अवतरे।
जो होय चक्री रतिपति अरु तीर्थ करता सोहने,
करि राज सब विधि सबन के फिरि भये शिव तिय मोहने।

दोहा-सो हरो पातक करा किरपा धरो चरण यहाँ तनी,
मैं करूं पूजा होउ जासों, शुद्ध पातक को हनी।

ओंह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

लेके नीको नीर गंगा नदी को, जीते नीके मान छीरोदधीको,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी, जासों नासे कालिमाकाल केरी।

---

१ आपकी दया से।

ओंह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा

जाकी आछी गंध ते भौर माते, ऐसी गंध चंदनादि सुताते,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्री श्रीशांतिनाथजिनेंद्रायभवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा ।

गंगा पानी सीचि हुए ऽवदाता. शाली सोने पात्र मौ धारि साता
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ॐह्री श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

नाना रंग के स्वर्ग माहीं ‍.येजे, तेले आने पुष्प सुरभी लयेजे
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्री श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्टं तिष्टं शुद्ध पक्वान्न कीने, जिव्हा काजै सौख्यदाजानिलीन्हे
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

दीयो लियो द्योततो[१] सो बनाई[२] नासे जासों मोहअंधेरताई,
कीजे पूजा शांति स्वामीसुतेरी०

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

खेऊं धूपं शुद्ध ज्वाला प्रजाली, फैले धुँआ छादित अंशुमाली,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

ओंह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

लीजै पिस्ता दाख बादाम नीके, नीके नीके रत्न थारा भरीके,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी०

---

१ चमक रहा है, २ खूब ।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्निर्वपामीति स्वाहा ।

आठो द्रव्य कीजिए एक ठाहीं, लेके अर्घ भाव के नाथ मांहीं१
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी, जासों नासे कालिमा काल केरी

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यंम्निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द शिखरिणी– महा ऐरादेवी कमलनयनी चन्द्रवदना,
सुकेशीचम्पा-भा वपु लख शची होत अदना२
वसे जाके स्वामी गर्भ सतमी भाद्र सितना,
जजौं मैं ले अर्घम् नमत भव है पाप कितना.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदी जाने जो चांदशि सुभग है जेठ महिना,
जने माता भूपै हुवो खलक३ को भाग दहिना४
महा शोभा भारी शचिपति करी जन्म दिन की,
करौं पूजा मैं इहां शुभ अरघ ले शांति जिनकी

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

तिथि भूता५ नीकी सुभग महिना जेठ वदि मा,
तजो बाधा सारो मगन हूवे साता उदधि मा.
तहां देवाधीशं चरण युग पूजे अघ हरे,
यहां मैं ले पूजों अरघ शुभ ते पाद सुथरे.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

---

१ नाथ भगवान में भाव धरके, २ नाची, ३ दुनिया, ४ किस्मत जागी, शुभ भाग का उदय हुआ, ५ चतुर्दशी ।

सदाशिव१ संख्या की तिथि शुभ कही पूस शुक्ला,
हने घाती चारों जादिन धरके ध्यान शुक्ला,
विराजे सो आछे समवसृत में ईश जगके,
जजों मैं ले अरघम् कलुष नशि जावें कुमग के.

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

(यहाँ पाठ पौष सुदी १० होना चाहिये)

किते पापी तारे जग भ्रमण ते क्यों सरहिये२,
भलो जानो भूतादिन महिनमो जेठ कहिये ।
लियो नीके स्वामी सिखर पर ते सिद्धि थलको,
जजों आछो अर्घम् ले चरण भूलूं न पल को ।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यम् ।

त्रिभङ्गी

जय जय गुणगणधर धर्म-चक्र-धर मुकति-बधू-वर रटत मुनी,
जय त्याग सुदर्शन लहत सुदर्शन३ चित अति परसन परमधुनी ।
जय जय अघ टारन कुमति निवारन तुम पद तारन तरन सदा,
जय जो तुम ध्यावत कष्ट न पावत करम तनौ ऋण होत अदा४.

नाराच छन्द

पदारविंद शुद्ध जानि देव जाति चारिके,
नमें सदा आनंद पाय मंदता प्रजारिके ।
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये ।

---

१ एकादशी, ११ रुद्र, २ कहाँ तक किस प्रकार गुणगान करूं, ३ सुदर्शन चक्र छोड़कर सम्यक दर्शन को ग्रहण किया है, ४ चुकजाता ।

लखे पवित्र होत नैन चैन चित्त में बढ़े,
महामिथ्यात् अन्धकार तात काल में कटे,
जिनेन्द् शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनंत काल जीजिये । २ ।
नशाय जाय कोटि जन्म के अरिष्ट देखते,
भले सु वीतराग भाव होय रूप पेखते ॥ जिनेन्द्र ॥ ३ ॥
निशाप[१] सो मुखारविंद देखि पाकशासना[२]
चकोर के अधीन रूप और की चितास[३] ना ॥ जिनेन्द्र ॥४॥
विनाशनीय चक्रवर्ती की विभूति त्याग के,
भये सुधर्म चक्रवर्ती आत्म पंथ लागि के ॥ जिनेन्द्र ॥५॥
नमो नमो सदा आनंद कँद तोहि ध्यावही,
गणाधिपादि जे अनन्त मोक्ष पन्थ पावही ॥ जिनेन्द्र ॥६॥
अनङ्ग रूप धारि मार[४] मर्दि गर्दि[५] कर दिये,
निरस्त के कुभाव भाव शुद्ध आपमें कियो ॥ जिनेन्द्र ॥७॥
महान भानु ज्ञान सो उदोत होत नाथ जू,
विवेक नेत्रवान आप जानि भये सनाथ जू ॥ जिनेन्द्र ॥८॥
खगेस[६] वाल पाद तो सहाय होय जासु को,
कहा करे महान काल व्याल कृष्णतासु को ॥ जिनेन्द्र ॥९॥
अनादि कर्म काष्ट जालि बालि होत भये महा,
प्रकाशवान लोक में न दूसरो कहो कहा ॥ जिनेन्द्र ॥१०॥

---

१ चन्द्रमा, २ इन्द्र, ३ इच्छा, ४ काम, ५ नाश ६ गरुड़ ।

अनेक देव देखिया न देव तो समान को,
लखा न मैं कभी कहूँ अनन्त ज्ञानवान को। जिनेन्द्र॥११॥
रहूं विहाय नाथ पाद कौन ठौर जायके,
कृपाल दीन जानिके दयालु हो बनाय के। जिनेन्द्र॥१२॥

घत्ता— जो पढ़े अहनिश शुद्ध इह जयमाल शांति जिनेशकी,
ताके न धन की होय कमती हास्य करे धनेशकी,
पद पास लोटे रोज रानी रति अवर की क्या चली,
पुनि भोगि दिवि के भोग सुन्दर वरे शिव रामा भली।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

शार्दूल विक्रीडित

स्वामी शांति जिनेन्द्र के पद भले जो पूजसी भावके,
सो पासी अमलान पद्द सतत वैकुण्ठ में चावके, ।
सौमत्तादिक अष्ट शुद्धगुणको धारी भली भांति सों,
होसी लोकपती सहाय सबको जोगी भणें शांति सों। इत्याशीर्वादः

'ओंह्री श्रीअनन्तनाथ जिनेंद्राय नमः' अनेन मन्त्रेण जाप्यं दीयते

—:o:—

१७ श्रीकुन्थुनाथ पूजा
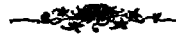
स्थापना छंद गीता।

शुभ नागपुर जहां सूर राजा पट्ट रानी श्रीमती,
जिन-कुन्थु जिन घर पुत्र हुये सरवार्थसिधि ते आगतो,
बपु कनक छवि धरि धनुष पैंतिस छाग १चिन्ह विराजही,
आयुष पंचानु सहस२ की वंश कुरु मधि छाजही।

१ बकरी २—९५०००

मालती

सो जिन राज गरीब निवाज निवाजहु १ मोहि यहाँ पग धारो,
पूजूं जो मन ल्याय भली विधि आज गरीबन को हित पारो।
काल अनादि तनी दुविधा मुझ सो अब के दुविधा पद टारो,
मैं भव कूप परो जिनजी जन आपन जानि सिताब निकारो।

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

द्रुति विलँबित

अमल नीर मुभिक्षुक २ चित्त सो, परम ३ कुम्भ भरे लब४नित्यसो
जजन कुन्थु जिनेश्वर की करों जिमि न जाचक की पदवी धरों

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

अधिक शीतल चन्दन ल्याय के अधिक सो कपूर मिलाय के। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चँदनम् निर्वपामीति स्वाहा

सदक उज्जल खंड विहाय के, सुभक मंद प्रक्षालित भायके। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

कनक के शुभ पहुप बनावहूं विधि अनेकन के शुभ ल्यावहूं। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

नशत रोग क्षुधातिह देखते, इमि सु व्यंजन लेप प्रलेपते। जजन

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ कृपा करो, २ मुनि, ३ बड़े, ४ मुंह तक पूर्ण ।

ज्वलित दीपक जोवि प्रकाशही, दशदिशा उजियार सुभासही। जजन
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दहन कीजे धूप मंगायके, अगनि में प्रभु सन्मुख आयके। जजन
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रमुक दाख बदाम निकोतना, सरस ले और लै कम होतना। जजन
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहरा—जल चन्दन अक्षत पहुप, चरू वर दीपक आनि,
धूप और फल मेलि के, अर्घ चढ़ाऊं जानि।
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द चाली

सावन दशमी अंधियारी, जिन गर्भ रहे हितकारी,
प्रभु कुन्थु तने युग चरणा, ले अरघ जजों दुख हरणा।
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्।

परिवा वैसाख सुदी की, लक्ष्मीमति माता नीकी
जिन कुन्थु जने सुख पायो, हम ह यहां अर्घ चढ़ायो।
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

करि दूरि परिग्रह ताको, वैसाख सुदी पडिवा को,
सिर के जिन केश उपारे, मै पूजों अरघ सिधारे।
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय वैसाखशुक्लाप्रतिपदायां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि चैत तृतीया ज्ञानी, हूवे प्रभु मुक्ति निशानी,[१]
तहं देव अदेवन आनी[२] पूजें हम पूजें जानी।

---

१ दर्शानेवाले, २ सर्व जीव,।

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेन्द्राय चैत्रकृष्णा तृतीयायां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां चैत्र सुदी ३ पाठ चाहिये)

तिथि शुभ वैशाख उजेरी, पड़िवा समेद गिरि सेरी,
करुणा निधि शिव तिय पाई, पूजों मैं अर्घ बनाई.

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय वैसाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणकायअर्घ्यंम्

त्रिभँगी—जय चक्रीवीरा काम[१] शरीरा नाशत पीरा जग जन की,
जय गणपति नायक हो सुखदायक शोभालायक[२] छवितनकी
जय कुन्थ पियारे जग उजियारे, सब सुख धारे अलख गती
जय शिव पुर धरिये[३] आनंद भरिये जल्दी करिये विपुल मती।

छन्द त्रोटक

जय सूर तनय[४] तव मूरति मा, तप तेज तनी जनु पूरतिमा,
जय-शक्र शत क्रतु[५] सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा[६]
धरि काम सभी रति नार[७] तिमा, चित राखत ना कहु आरति मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा।
पट खंड तनी राज्य रमा, निज आतम भूति करी करमा[८]
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
हनि मुष्टिक काल तने सिरमा, घर त्यागि वसे शिव मंदिर मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।

---

१ काम जैसे सुन्दर, २ सुन्दर, ३ परमात्मपद दीजिये, ४ सूर राजा के पुत्र, ५ इन्द्र, ६ दूर, ७ सब काम भाव रति में छोड़कर आप काम रहित हुए, ८ हाथ में, कब्जे में

धरि जीव उधारन को तुकमा१ जग जीत लियो यह कौतुक मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
करि शांति सुभाव हि जोर दमा२, मन आतम घायकचोर दमा३
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
भट मोह अरी पर मारनमा, नहिं चूक प्रभू तिहि मारन मा,
जय शक्र शत क्रतु सेव अदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
दुखदा छल चोरि दिया नद मा, चिद रूप विराजत आनंद मा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
लहि ज्ञान दिवाकर लोक तमा, हनि होत भये प्रभु शुक्ल तमा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
गृह त्याग रहे जन तो घरमा४ तिन को न विक्रोध५ तनी घरमा६
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
तुम पादन राज हिये कलि मा७, धरि सूर कहावत सो कलिमा८
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
प्रभु नाम रहे जिन तुण्डन९ मा, हैं पावन१० वे सब तुण्डनमा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।
तुम नाम सहाय हमें कलिमा, नहिं दूसर देखि परे कलिमा११
जय शक्र शतक्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।

---

१ पदक, २ वश, ३ दमन करके, ४ जिन मंदिरमें, ५ विशेष क्रोध, ६ गरमी,
७ फूल, ८ कलिकाल, पंचमकाल, ९ मुख, १० पवित्र, ११-मंत्र

कछु न कमती प्रभु तो बलमा, जय हो जय हो सब के बलमा,
जय शक्र शत-क्रतु सेव सदा, करु कुन्थु जिनाधिप कर्म अदा।

घत्ता छंद मालती।

कुन्थ तनी वर या जयमाल भवाब्धि तनी तरनी जग गावे,
जो जन आस तजे जग की चढ़ि या पर सो शिव लोक समावे,
पावे चैन अनँत तहां मनरँग अनंग की रीति गमावे,
को कवि भू पर सिद्ध इसो, जह के सुख की कथनी कथि पावे,

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

सोरठा— कुन्थु नाथ भगवान, जे भव बाधा में पड़े,
तिन सबको कल्यान, करो आपनी ओर लखि ॥ इत्याशीर्वादः

'ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथ जिनेंद्राय नमः' अनेन मंत्रेण जाप्यं दीयते

——:o:——

१८—श्रीअरनाथ पूजा

छन्द गीता [स्थापना]

शुभ नागपुर में नृप सुदरशन वँश कुरु मित्राप्रिया,
ता गेह अपराजित विमान हि त्याग अरह भये पिया
पाठीन१ लक्षण धनुष त्रिंशति कनक वर्ण प्रभा धरी,
चौरासि सहस प्रमाण वरषन की सु आऊश परी,
दोहा– सो कल्याणनिधि विमल चित सहस छानवे बाल२,
तजि शिव कामिनि काज भयेः३ इहां धरो पग ताज४

१ मछली, २ भ्रज-रानी, ३ मोक्ष स्त्री के पति हुए, ४ चरण के तलुवे।

ओंह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द वसंततिलका- पानी महान भरि शीतल झारिका में,
धारा प्रमाम भव लोचन गन्ध आमै,
पूजूं सदा अरह पाद सरोज दोऊ,
नासैं कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ,

ओंह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर पूरित कपूर सु चन्दनादी,
नीके घसो मधुप[1] लुब्धत शब्द वादी ॥ पूजूं सदा ॥

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दा समान अवदात अखण्ड शाली,
नीके प्रक्षालित अनेक भराय थाली ॥ पूजौं सदा ॥

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा।

चम्पा कदंब सरसीरुह[2] कुन्द केरी,
माला बनाय निज नैंन बनाय हेरी ॥ पूजूं सदा ॥

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार पकवान क्षुधापहारी,
मेवा अनेकन मिलाय सु-मिष्ट भारी, ॥
पूजूं सदा अरह पाद सरोज दोऊ,
नासैं कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ,

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

---

१ भौंरे मोहित हुए गुंजार कर रहे हैं, २ कमल, ।

दीपावली ज्वलित जोर कपूर वाती,
धारूं जिनाधिप पदाग्र जुडाय१ छाती । पूजूँ सदा ।

ओंह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपमीति स्वाहा।

धूपादि चन्दन मिलाय कपूर नाना,
एकाग्र चित्त कर खे ऊं छांडि माना । पूजूँ सदा ।

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

मीठे रसाल कदली फल नालिकेरा,
पिसता बदाम अखरोट लिये घनेरा । पूजूँ सदा ।

ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

जल चंदनवर अक्षत पुहुप सिधारिकै
नाना विधि चरु दीपक धूप प्रजारिकै,
फलसु मिष्ट लै सुन्दर अरघ बनाइये,
अरहनाथ पद ऊपर नित्य चढाइये ।

ॐह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यम्निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द मालती तेईसा

है गुण शील तनो सरिता अरनाथ तनी जननी सुख खानी,
भाग सराहत लोक सवै धनि दीरघ भागवती महारानी,
जा सम और न दूजी तिय मेहिमंडल मांझ कहू पहिचानी,
फागुण की सित तीज दिना तसु कोखि बसे जिन पूजहूं जानी,

ओंह्रींश्रीअरनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

चौदशि सेतकाह अगहन तनी अरह जादिन जन्म लियो है,
तादिनकी प्रभुता सुनिके भवि जीवन केर जुडात हियो है२,

---

१ जो ठण्डक पड़े, २ मन प्रसन्न होना है ।

इन्द्र शची मिलके सब देवन आवके जन्म उत्साह कियो है,
सो दिन जानि विचारि सभी वह आनन्द सो हम अर्घ दियो है

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अगहन शुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

सुन्दर हैं अगहान सुदी दशमी शुभ सो गनियो तिथि भारी,
सोचत तादिन एम प्रभू जगजाल सदा जियको दुखकारी,
लेत दिगंबर भेश भलो तृण जीरण के सम त्यागत नारी,
सो दिन देव सहाय हमें नित होउ चढावत अर्घ सिधारी.

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अगहन शुक्ला दशम्याम् तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

कातिक बारसि सेत दिना लहि केवल ज्ञान महान अनूठा,
इन्द्र रचौ समवसृत सुन्दर योजन एक गनावत हूठा।
बैठत देव सिहासन ऊपर अन्तरीक्ष जहां भरि मूठा,
पूजत अर्घ बनाय तुम्हें फिरि चूमहिगो कहकाल अंगूठा।

ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्राय कार्तिक शुक्ला द्वादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

चैत्र अमावस को जगदीश्वर छांडि दियो गुण चौदम ठाणा।
एक समय मधि सिद्ध पती जिन देव भये सुरनायक जाना॥
ले निज साथ प्रिया पृतिना[१] करि मोद समेद पहार पिछाना।
कर निरवान तना विधि ठान इहां हम पूजत पाद महाना॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथ जिनेंद्राय चैत्र कृष्णा अमावस्यायां मोक्ष कल्याणकायअर्घ्यम्

छंद काव्य—जय जय अरह जिनेन्द्र देवाधिदेववर।
जय जय मिथ्या निशा हरण को महत दिवाकर॥

---

१ सेना।

जय अकलंक स्वरूप दोष मोचन अति सोहै ।
जय तिय लोक मझार दीनपति तो सम को है ॥

छंद पद्धरि

जय मिश्रा देवी के सुनन्द, मुख शोभित तुम अकलंक चन्द ।
जय दुरित तिमिर नाशन पतंग, माया वेली भंजन मतंग ।१।
जय चक्र किंकिणी छत्र दंड, चूड़ामणि चरम१ अरु असिप्रचंड।
ये सात अचेतन मणि महान, प्रभु छांडिदीन तिनके२ समान ।२।
रति राणी सेनानी मतंग, प्रोहित शिल्पी गृहपति तुरंग ।
सातौ चेतन मणिमन विचारि, लखि अथिर हृदय संवेग धारि।३
जो नाना पुस्तक देत दान, सो तजी काल निधि सहित ज्ञान ।
असि मसि साधन जो महतकाल, तासों निरप्रेही भये कृपाल ।४।
हाटक भाजन मणि जटितसार, नैसर्प देत नाना प्रकार ।
तसु त्यागत छिन में ह्वै प्रबुद्ध, निज अंजुल भोजन करत शुद्ध।५
चौथी पांडुक निधि नाम होय, अर्पत सब रसमय धान्य सोय ।
तातें संवर करि जगतपाल, जग जीवनकौ कीन्हे निहाल ।६।
जो अप्पत पाटंबर३ विशाल, तसु नाम पद्मनिधि कहत हाल ।
तिहि त्याग कीन्ह दिगवसन नाथ, जय कीजे स्वामी अब सनाथ।७
निधि मानव नाना शस्त्र देत, ताऊपर रंच न करत हेत ।
भये शान्त स्वभावी तीन लोक, जीते प्रभु ने हुवे अशोक ।८।
पिंगला देत भूषण अनेक, तसु आस छांडि किय नगन भेक ।

---

१ ढाल, २ तृणके समान, ३ पीताम्बर

इह प्रभु की प्रभुताई मनोग, कर इन्द्री वश शुभ धरत योग। ६
निधि संख कहावत जो प्रधान, वाजित्र देव सो वेपमान।
सो छांडी जस पटहा१ बजाव, जय धन्य धन्य स्वामी सहाय।१०
निधि सर्वरत्न नामा मनोग, बहु रत्नन देवे को सुयोग।
तिहि कांच खंडवत् त्याग दीन, निज हिय में धारत रतन तीन।११
इम आदि अनेकन राज्य अँग है तिनसौ विरकत भये निसङ्क।
अध ऊर्ध मध्य परताप जास, छिटको रवि ते अधिकी प्रकास।१२।
जय जय साताकारी जिनन्द, छवि ऊपर वारों कोटि चन्द।
जय चिंतित अर्थादिक सुदेत, चिंतामणि इव करुणा समेत।१३।
जय पाप प्रहारी अगम पंथ, जय शिव तिय के आछे सुकन्थ,
जय गुण निधान कल्याण रूप, जय तीन लोक के भले भूप।१४।
हे चतुरानन प्रणमों सुतोहि, करिये प्रभु साता रूप मोहि,
यह अचरज हमारी मान लेहु, मो तमि तुम अपनी दृष्टि देहु।१५

छँद अडिल्ल— अरह जिनेन्द्र तनी शुभ जय माला बनी,
जो धारत निज कँठ होय शोभा घनी,
शिव रमणी तसु आय अलिंगै आपुही,
मनरँग स्वर्ग श्रियाकी का कथनी कही।

ॐह्री श्री अरनाथजिनेंद्राय जयमालार्घ्यं नि०

दोहरा— जामनीश२ भगवान मुख, पद कुवलय३ युत मोद४।
लखि लखि भविक चकोर अलि, सुखलीजो भरि गोद ॥ इत्याशीर्वादः
"ॐह्री श्री अरनाथजिनेंद्राय नमः" ॥

---

१ ताली चुटकी बजाने में, २ चन्द्रमा, ३ कमल, ४ हर्ष सहित।

१९ श्रीमल्लिनाथ पूजा

छंद गीतका

नृप कुंभ मिथला पुरी अद्भुत मात नाम प्रजावती
ता पुत्र अपराजित विमान हि त्यागि मल्लि भये जती ।
पच्चीस धनुष उचाय लक्षन कुंभ कनक प्रभा बनी.
आऊष पचपन सहस वरष इक्ष्वाकु वंश शिरोमणी ।

दोहा—कुंभ चिन्ह धारी प्रभो, कुम्भ नृपति सुत आज,
आप चरन धारौ इहां, जो सुधरै मम काज,

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छंद वसन्ततिलका—आछो प्रवाह गंगा जल नीर तासौ,
झारी भराय शुभ रुक्मननीय[१] जासौ,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौं सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी ।

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

श्री चन्दनादि बहु गंध मिलाय धारी,
गुंजै दुरेफ तसु ऊपर पुंज भारी,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी,

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

---

१ सोने की झारी ।

जो चन्द्रमण्डल लजावत शुद्ध शाली,

खंडं बिना विमल दीर्घ सु साजि थाली ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

चम्पा कदंब मचकुन्द सुकुन्द केरे,

लीये सुगन्धित प्रफुल्लित फूल हेरे ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी सुमोदक अनेक प्रकार नीके,

मीठे अमान १ करि शुद्ध विहायफीके ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

माणिक्य दीपक महान तमोपहारी,

दिक्चक्र २ सम्यक प्रकाशित तेजधारी ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

भूचक्र पूरित सुगन्ध सुधूप आनी,

दाहूँ जिनाधिप प्रदाग्र महान जानी ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्राक्षा बदाम शुभ आम्र कपित्थ लीये,

नाना प्रकार भरि थार सुभाव कीये ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

पानी सुगंध वर अक्षत पुष्प माला,

नैवेद्य दीप अरु धूप फलौघ आला ॥ श्रीमल्लिनाथ ॥

---

१ खूब, २ सर्व दिशा ।

वर्षावत शुभ रत्न इन्द्र शोभा करी,
मैं पूजत ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं

वदी वैसाखमहीना दशमी रोजही,
आनन्द कंद जिनेंद्र चंद्र प्रगटे मही।
जन्म महोत्सव विधिपूर्वक कीन्हो हरी,
मैं पूजन ले अर्घ धन्य सुख को घरी।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

दशमी वदि वैशाख तपस्या काज जू,
वसे लोचकरि बनमें तज सब राज जू।
सोकिरपा कर धन्य सुमति दीजे खरी,
मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख को घरी।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय वैसाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

नौमो वदि वैसाख मांहि लहि ज्ञानको,
पतित उधारे केते गए निर्वान को।
तीनों लोक मंझार सो कीरति विस्तरी,
मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

वदि फाल्गुन की द्वादशि तिथि नीकी कही,
गिरि समेद ते लीन्ही अष्टक जो मही।
तिन्हें अष्ट मद मोचि शोचि पदवो खरी
मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय फाल्गुणकृष्णाद्वादश्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यम्

जयमाला—छंद त्रिभंगी

जय जय मुनिसुव्रत, धरत महाव्रत, कर निरमल चित्तपरम[१] मये
देवन के देवा सब सुख देवा शचिपति सेवा माहि[२] ठये ॥
जय जय गुणसागर जगत उजागर हो नर नागर दोष हरे ।
तेरी अद्भुत गति लखत न गणपति मनरंग मित प्रति पैर परै ॥

छंद स्रग्विणी—जय कृपा कन्द अनन्द रूपी सदा,
हरिहारचो विडोजा[३] न तृष्णा कदा,
देव थारी शविह[४] छवी मारकी[५] मारणी[६],
रोग सोग व्यथा भव[७] व्यथा[८] आरनी,
मोहनी[९] मुक्ति वामा तनी सोहनी,
सोहनी तीन भू की महामोहनी ।देव थारी० ॥२
चंद्रकी चंद्रिका को तिरस्कारणी,
सूरकी जोति सोभा अनन्ती धणी । देव थारी० ॥३
पुद्गलाणु जेती लोक में थी भली,
ल्याय धाता रचं. एक भामंडली ।देव थारी० ॥४
कर्मनासा शिवासा दुरासा[१०] नहीं ।
दृष्टिनासाधरे नाहि गासा[११] कही ।देवथारी० ॥५
क्षुत्पिपासा दे द्वाविंश पीरा हरी,

---

१ महान् पूज्य, २, श्रेष्ठ, ३ इन्द्र, ४ मूर्ति, ५ काम, ६ नाशक, ७ संसार, ८ दुःख, ९ मोक्षकी उमेद देनेवाली, १० निराशा, ११ खेद ।

छंद घत्ता—भवि जनमन प्यारे तारे दुखी बहु का कहु,
कथि कवि-जन हारे ना रे लगी गणना तहु।
तिह कर जय माला आला महा गल जो धरै,
निज करि शिव-बाला १ बाला २ वनै भव सो हरै।

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

सोरठा—अहो मल्लि जिन देव, करिये करुणा जगत पै।
जो सुख पावें एव, तो थिनि सुख कहु रैंचना ॥इत्याशीर्वादः॥

"ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

:—※—:—※—:

२० श्रीमुनिसुव्रतनाथपूजा

स्थापना—नृपसदन ३ नगरी कहत ताको भूप नामसुमन्त है।
श्यामा सुराणी जासु सुत मुनिसुव्रत नाम महंत है ॥
तनु श्याम ऊंचे वीस धनु हरि वंश कच्छप अंक है।
तजि स्वर्ग प्राणत तीस सहस सुवर्ष आयु निशंक है ॥

दोहा— हे मुनि सुव्रतनाथ, जगत कष्ट दारुण हरण।
मो पर धरिये हाथ, इहां चरण ढारों प्रनो ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

---

१ मोक्ष लक्ष्मी को अपनी कर लेता है, २ उत्कृष्ट पद ले, ३ राजगृह।

चौपाई—शीतल नीर कपूर मिलाय, हाटक तने कलश भरवाय।
पूजूँ श्री मुनिसुव्रत पाय, पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं नि० स्वाहा
केसर मलयागिर कर्पूर, मिलै कटोरा भरि भरिपूर। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् नि० स्वाहा
मुक्ताफल समान अति प्यारे, अक्षत धवल सम्हारि सिधारे। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा
नाना वरण तने ले फूल, निकसत तिनते गंध सुथूल। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा
व्यंजन नाना भाँति बनाय, मिष्ट मिष्ट देखत मन भाय। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा
घृत पूरित दीपक ले आनौ, प्रज्वलित जाकरि तिमिर पलानौं। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।
धूपायन कंचन का लेय, तामे धूप दशांगी खेय। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.
मातुलिंग कदली फल भरे, थार ल्याय कंचन मणि जरे। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा
नीर आदि वसु द्रव्य मिलाय, शुभ भावन सो अर्घ बनाय। पूजौं०
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा

छंद अडिल्ल—श्रावनवदि दुतिया मुनि सुव्रतनाथ जू,
श्यामा उर में बसे सकल सुख साथ जू।

ओ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय सर्व सुखराशये अर्घ्यम् नि० स्वाहा

दोहरा—चैत्र शुक्ल पडिवा बसे, गरभ माहिं जिन मल्लि.

पूजत शुद्ध सु अर्घले, दूरि होत सब सल्लि ।

ओ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय चैत्र शुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

मगसिर सुदि एकादशी, जन्म लीन महाराज,

अर्घ लिये पूजत तिन्हैं, बाढत पुन्य समाज ।

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

अगहन सुदि ग्यारसि दिना, केश सुलुंच करन्त,

पूजत तिन पद अर्घसो पातक सकल नसंत ।

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय अगहन शुक्लैकादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

करम मल्लि निरसल्लि करि, दोज पूष वदि माहि,

लहत नवल केवल लबधि, पूजौं अर्घ चढाहि ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्णा द्वितीयायां ज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यम् ।

पांचैं फाल्गुण शुक्ल की त्यागि समेद पहार,

अष्टकर्म हनि सिद्ध भये, जजौं अर्घले थार ।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणकायअर्घ्यम्

छंद झूलना

जय सुबुधि के धनी, सुभग मूरत बनी, नाथ नावें गणी रोज तोही.
जानि सुंदर गिरा, असुर नर खग सुरा, लोक की इन्दिरा आनिमोही
कर्मोते देखते, भजत दुख दूरते, मिलत पद अटल, जो कहत वोही
हे दया गल, मम हाल पै हाल दै करो जेम निष्कर्म आनन्द होही

छंद त्रोटक

जय लोकित लोकअलोक नमो, सब शोषित शोक अशोक नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेववरम्॥[१]
जय पोषित आतमधर्म्म नमो, प्रभु नाश किये वसुकर्म्म नमो।जय
जय भवदधितार जहाजनमो, सब राखत हो जन लाज नमो।जय
जय दारिद-भंजन नाथ नमो, सुख वारिधि वर्द्धक साथ नमो।जय
जय ज्ञान कृपाण प्रचंड नमो भट मोह करो शतखण्ड नमो।जय
जय पाप पहार समीर[२] नमो जनकी हरिले भवपीर नमो।जय
जय देह महादश ताल[३] नमो, करुणाकर नाथ कृपाल नमो।जय
जय नायक भाषत तथ्य[४] नमो. सब बातन में समरथ्थ नमो।जय
तुम आतमभूति प्रशस्त नमो. किय भूषित लोकसमस्त नमो।जय
जय काम कलंक निवार नमो,तुम भये भवसागर पार नमो।जय
जय आनन चार प्रसन्न नमो, अरु दोष अठारह शून्य नमो।जय
जय इन्द्र प्रपूजित पाद नमो, अन-अक्षर निसृत नाद नमो।जय
जय मान-बली-हत वीर नमो, गुणमण्डित है सब धीर नमो।जय
पद दे अपनो जगदीश नमो, मनरंग नवावत शीस नमो।
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेव वरम्।

---

१ श्रेष्ठ, २ आंधी, ३ जिन प्रतिमा का लक्षण शिल्प शास्त्रों से (१२ अंगुलका-१ ताल) ४ तत्व।

रूप सौंदर्य की है पताका खरी,
देव थारो शबिह मार की मारनी,
रोग सोग व्यथा भव व्यथा टारनी ॥६
लोकते[१] जासुके लोक[२] होवे नहीं,
लोकको भद्रकारी सुलोको[३] कहीं। देव थारी० ॥७
ज्ञानकी राजधानी बखानी वर',
लोक जात.प्रवानी[४] सुहानी[५] गिरा[६] । देव० ॥८
दक्ष[७] जोकी गहे पक्ष[८] प्यारो भले,
चक्रधारी[९] तनी लक्ष[१०] पावैं दलैं[११] । देव० ॥९
खूब खूबी लसै जो वसै ना कही,
जाहि देखे नसे पाप जेते सही। देव थारी० ॥१०
राम केसौ[१२] रुशेषौ[१३] न लैशौ लहै।
पार[१४] गामे[१५] गनेसो[१६] कलेसौ[१७] दहै[१८] । देव० ॥११
पादराजीव[१९] जो जीवरा[२०] जी धरै[२१],
सो मिजाजी[२२] महामोह माजो[२३] करै। देव० ॥१२
जे जना आस तेरी सदाही करैं,
ते शितावी[२४] भली मुक्ति वामावरै। देव थारी० ॥१३

---

१ दर्शन, २ संसार, ३ भद्रपुरुषों ने कहा है, ४, पवित्र ५ सुन्दर, ६ जिनवाणी, ७ बुद्धिमान जो कोई, ८ मत, ९ चक्रवर्ति १० लक्ष्मी, ११ लात, मारे, १२ केशव, १३ शेषनाग, १४ जरासी बयाकरी नहीं कर, १५ स्तुति करें, १६ गणधर, १७ दुःख, १८ नाश करें, १९ चरणकमल, २० भव्य जोव, २१ मनमें रक्खे, २२ घमण्डी, २३ परास्त, २४ जल्दी.

और झूठी सबै बात तेरे बिना,
रोजजपै[1] महा सो महा जो गिना[2] ॥ देव थारी० ॥१५
मंदभागी न जाने तिहारी कथा,
वर्ण वीवर्ण आंधो ल.खे न यथा ॥देव थारी० ॥१६

छन्द—इय जयमाला मुनिसुव्रत की जो भवि पढ़ै त्रिकाल,
ह्वै निरद्वन्द्व बन्ध सब तजि कै जागे ताकर भाल[3]
पराधीन नहिं होय कदाचित पावै आनन्द जाल,
तजि जग भवन[4] भवन सिद्धनकी सो नर परसै[5] हाल[6]

ॐह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि०

दोहा—हे करुणानिधि शर्म निधि, मुनि सुव्रत व्रत सीव[7]
तो प्रसाद भवि जीवसब फूलौ फलौ सदीव। इत्याशीर्वादः ॥

" ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय नमः " इति जाप्यं ।

२१ श्रीनमिनाथ पूजा

स्थापना गीता छन्द

शुभ बसत मिथिला पुरी जननी नाम विपुला जानिये,
पितु नाम आखो विजयरथ नमिनाथ तिन सुत मानिये।
इक्ष्वाकु वंशी हेम सा तनु कंज[8] चिह्न सुहावने,
दससहस बरष सुआयु पंद्रह चाप[9] ऊंचे ही बने।

---

१ जप करे, २ वह बड़े योगी हों, ३ पशानी किस्मत, ४ संसार, ५ स्पर्श करे, पावें, ६ जल्दी, ७ सीमा, हद, ८ कमल पंखुड़ी, ९ धनुष,

दोहरा— मो परमेश्वर परम गुरू, परमानंद निधान,
करि करुणा मुझ दीनपै, इहां विराजो आन ।

ओं ह्रीं श्री नमिनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

अथाष्टकी छन्द— मधुर मधुर पयसा१ शरद चन्द्रा सु जैसा२
मुनिवर चित जैसा ल्याय पानीय तैसा,
नमि जिनवर केरे कज आभा सु हेरे,
पद कमल घनेरे पूजिये भक्ति प्रेरे,

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा

घसित ले पटीरं३ शुद्ध जासो शरीरं,
भ्रमत भ्रमत तीरं जो हरै सर्व पीरं ॥ नमि जिनवर ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

चुनि चुनि सित४ आने वेश तंदुल बखाने,
परम रुचिर जाने देखि नैना लुभाने ॥ नमि जिनवर ॥

ओं ह्रीं श्री नमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

सुमन मन पियारे चम्पक मंदार वारे,
कालेयन कहना रे खूब फूले सिधारे ॥ नमि जिनवर ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

---

१ दूध, २ साफ, जैसे शरद पूर्नों की चांदनी, ३ चन्दन ४ उज्ज्वल ।

चातुर जनन साजी पक नैवेद्य साजी,
क्षुध कर्आस १ गमाजी२ देखि चंदाद्रु लाजी, ॥ नमि ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु तिमिर नसावै दीर्घ उद्योत ल्यावै,
निज परहि लखावै दीप एव बनावै ॥ नमि जिनवर ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

दहन करत नीके धूप नाना सुरंगी,
जिहपर बहुभृंगी नृत्यतं होव रंगी ॥ नमि जिनवर ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल शुकप्रिय२ नीके आम्र निंबू न फीके,
दरशन शुभहीके रत्न थारा भरीके, ॥ नमि जिनवर ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गीता छन्द— जलगंध अक्षत सुमनमाला चारु दीप जरायके,
वर धूप नाना मधुर फल ले अर्घ शुद्ध बनायके।
पद [illegible] आकृति देखि दुखहर पूजिये हरषायके,
[illegible] अनुपम इन्द्र पदवी पायके।

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा— [illegible], [illegible] बदी द्वितिया दिना,
गर्भ [illegible] तिन पद पूजौं अर्घ सौं,

ओं ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय [illegible] कृष्ण द्वितीया गर्भकल्याणअर्घ्यम्

---

१ रोग, २ दूर करने वाली, ३ अमरूद।

वदि अषाढ़ तिथि वेश, दशमी जन्म लियो प्रभू,
नमत सकल अमरेश, तिन पद पूजों अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय आषाढ कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

भये दिगम्बर भेश, वदि अषाढ़ दशमी दिना,
लीनो आतम देश, तिन पद पूजों अर्घ सों,

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय आषाढ कृष्णा दशम्याम् तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

ग्यारसि अगहन श्वेत, ज्ञान भाव उद्योत किये,
जीत अघाती खेत, तिन पद पूजों अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

चौदश वदि वैसाख, पर्वत सुभग समेदते,
अष्टकरम करि राख, तिन पद पूजें अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्

त्रिभंगी छंद

जय जय निसप्रेही मुक्ति सनेही[1] हो निर्मोही कुशल भये,
जय जय सिंहासन ऊपर आसन करि वच भाषन सुरल थये,
जय जय तह केरे सुख बहुतेरे भुगतन मेरे कलुष हरो,
जय जय नमि स्वामी अंतर्यामी मनरंगको निजदास करो,

छन्द

जय मङ्गल रूप प्रताप धरे, करुणारस पूरित देव खरे,
जगजीवन के मन भायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो। १

---

१ पवित्र,

मन माल न राखत एक रती, परमागम भाषत शुद्ध मती,
सुख इन्द्रिनके२ नसायक हो, नमिनाथ नमौ शिव दायक हो। २

लहि केवल तेरम ठाम ठये, अकलंक भये अरु दोष१ गये,
सब ज्ञेय पदारथ ज्ञायक हो, नमिनाथ नमौ शिवदायक हो। ३

चतुरानन देखत पाप खिलै, दश चार रत्न नव निद्धि मिलै,
गणनायकके प्रभु नायक हो, नमि नाथ नमौ शिव दायक हो। ४

प्रभु मूरति आनन्द रूप बनी, दुति लज्जित कोटि दिनेश तनी,
तुम दीनन के दुख घायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो। ५

समवसृत२ सार विभूति धनी पदपूजत इन्द्र; नरेंद्र गणी,
जिनराज सदा सब लायक हो, नमिनाथ नमौ शिवदायक हो। ६

प्रभु कांति विलोकित मान हनी, दुति चँद सकोच करी अपनी,
यम मारन तीक्षन सायक३ हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ७

जग माहि कुतीरथ उथ्थपिता४ तुम भूरि५ उधार६ करे पतिता
प्रभुतीरथ८ के प्रभु पायक९ हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो। ८

भव आर्णव१० पार उतारत भये, प्रभु आप तरे अरु तारन भये,
तिहुँ लोकन माहि सहायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ९

अरिहंत स्वरूप विशाल लहो, झषकेतन११ मारन लोभ दहो,
चव घातिय कर्म खपायक हो नमि नाथ नमौ शिवदायक हो१०

---

१ द्वेष, २ समवसरण, ३ तीर, ४ कुतीर्थ व कुमत को उठाने या हटानेवाले, ५ बहुत, ६ उद्धार ७ पापी, ८ परमात्मा-पद, ९ पहुँचानेवाले, १० संसार-समुद्र, ११ कामदेव।

प्रभु मागधि भाष खिरे सुखरी, सुनि जीवनकी सब भ्रांति हरी.
चव वेदन१ के प्रभु गायक हो नमि नाथ नमो शिवदायक हो ।११
सिगका ज करि कृतकृत्य भये गुण पूरति आनन्द लेत भये,
भट मोह की चाट बचायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो।१२
एक नाथ विना सिगरो कछु ना, तिहिं ते शरणा गहिये अबुना,
ममता हरता निकषायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो ।१६
कविराज थके बुधि मो कितनी, वरणूं कहलों छवि नाथ तनी,
तुम भाव धरे शुभ लायक हो, नमि नाथ नमो शिवदायक हो।१४
छंद-श्री नमिनाथ जिनेश कृपाकर की जयमाल महा सुखकारी,

जानि मने निज कंठ धरै नर सो सब सुक्ख करै नित जारी
जाकर हेत चले दिविसे अमराधिप आय करै बहुचारी,
को कहि बात बढ़ावहि जा कहि आपुन आप मिलै शिवनारी,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घम् नि० ॥

सोरठा-भो नमिनाथ दयाल, ऋद्धिसिद्धि दायक सदा,
तुम प्रसाद जगपाल, आनंद बरतौ भविनको इत्याशीर्वादः
"ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

:—:—:

२२ श्री नेमिनाथपूजा

गीता छंद-शुभ नगर द्वारावती राजत समुद्रविजय प्रजापती,
तसु गेह देवी शिवा ताके नेमिचन्द्र भये जती.
तन श्याम वर्ष हजार आयुस धनुष दशकि सोभितम्
यदुवंशकुलमणिवर शंख लक्षण धरको तजि अपराजितम्.

१ प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग, २ अंक

दोहा—समुद विजयके लाडले, पशुन छुडावन हार,
रजमति रानी त्यागि के, जाय चढे गिरनार ।
तहं शुभ आतम ध्यान धरि, पाये केवल ज्ञान
शिव देवी के नंदवर, इहां विराजो आन ।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घं
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय फाल्गुनकृष्णाष्टम्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घ्यम्
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

छन्द गीता—शुभ कुंभ कंचनके अति सुख कलश भाकृ लेको लिये
भरवाय तिन भरि अमल पय १ पयर सम मधुर सुखवा लिये
श्री नेमिचंद जिनेन्द्र के चरणारविंद निहारि के,
करि विधधातकर चतुर चर्चित अजतहु हित धारिके ।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

ले श्वेत चंदन कृष्ण अगर कपूर वासित शीतलम्,
तसु गंध वश मधुपावली४ मदमत्त नृत्यत कैकलं । श्री नेमि ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

नहि खंड एको सब अखंडित स्नाय अक्षत पावने ।
दिशि विदिशि जिनकी महक करि महकै लगै मन भावने । श्री नेमि ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

मनहरन वर्ण विशाल फूले कमल कुंद गुलाब ये,
केतुकी चंपा चारु मरुवा पुष्प भार भुताबके५ । श्री नेमि ॥

---

१ पानी, २ दूध, ३ ध्यान लगाकर, ४ भिनार भौंरे गुंजार कर रहे हैं, ५ चमक दमक ।

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

पक्वान्न पूरित गाय घृत सौ मधुर मेवा वासितम्,
गो क्षीर मिश्रित थार भरि भरि क्षुधा पीर विनाशितम्। श्री नेमि

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

कँचन कटोरी माहिं बाती वारि के घनसार[1] की,
प्रभुपास धारत मिलत मग[2] भव[3] उदधि के[4] उस पारकी। श्री नेमि

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि० स्वाहा।

अति उबलत ज्वाला माहिं खेवत धूप धूम्र सुहावनी,
बस गँध भौंरा पुँज तापर करत रव[5] सुख वासिनी। श्री नेमि॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा.

फल आम्र दाडिम् वर कपित्था लांगली[6] अरु गोस्तनी[7],
खरबूज पिस्ता देवकुसुमा नवल[8] पुँगी[9] पावनी। श्री नेमि॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

जल गँध अक्षत चारु पुष्प नैवेद्य दीप प्रभाकरम्
वर धूप फल करि अर्घ सुन्दर नाथ आगे ले धरम्। श्री नेमि॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय सर्व सुखप्राप्तये अर्घ्यम् नि० स्वाहा

छँद मालिनी

कातिक मास सुदी छठि के दिन श्री जिननेमि प्रभू सुखकारी,
गर्भ रहे यदुवंश प्रकाशक भासत भानु समान सम्हारी,

---

१ कपूर, २ डगर मार्ग, ३ संसार, ४ समुद्र, ५ शब्द, ६ नारियल
७ मुनक्का, ८ नई ९ सुपारी

मात शिवा हरषी मन में जनु आज प्रसूत अली 'अहनारी,
सो दिन आज विचार यहां हम पूजन अर्घ सँजोयके भारी,
ॐह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय कार्तिक शुक्ला षष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं

श्रावण की शुक्ला छठि के दिन जन्मत पातक दूर पलाने,
जानि सुरेश गयो विधि पूर्वक मात घरे जहँ आनन्द ठाने,
जाय शची धरि बालक दूसर लेय जिनेश्वर होत रवाने
जन्माभिषेक१ कियो उनने हम अर्घ चढावत आनन्द माने,
ओंह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला षष्ठयां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यंम्

साजि चले यदुवँश शिरोमणि व्याहन काज निशान बजाये,
देखि पशू दुखिया बिललात कह्यो प्रभु ये किहिं काज घिराये,
सारथि के मुखते सुनि बात उदास भये पशुवान छुड़ाये,
योग धरयौ छठि श्रावण की शुकला दिन जानिके अर्घ चढ़ाये,
ओं ह्रींश्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय श्रावण शुक्ला षष्ठायां तपकल्याणकाय अर्घम्

लेकरि योग रहे दिन छप्पन लौं छद्मस्थ प्रभू शिवगामी,
कारसुदी परिवाके दिना, चव घातिय घातित अन्तर्यामी,
केवल ज्ञान लह्यो भगवान दिवाकर मान भये जिन स्वामी,
सो दिन आप चितारि यहां हम अर्घ चढावतहू जिननामी,
ॐ ह्रींश्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय आश्विनशुक्ला प्रतिपदायांज्ञान कल्याणकाय अर्घ्यम् ।

मास असाढसुदी सतमी गिरिनार पहार ते कीन्ह पयाना,
जाय बसे शिवमंदिर माझ अनन्त जहां सुख को नहिं माना,

१—अभिषेक ।

जानत मोक्ष कल्याण तबै शम्भि नाथ समेत सबै गिरवान[1]
पूजि यथा विधि गे घर सो हम पूजत अर्घ लिये तजिमान[2]

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ शुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यम्

छन्द काव्य—जय यादव वर वंश तने शृङ्गार विश्वपति,
जय पुरुषोत्तम कमलनयन प्रभु देत सुगति गति,
जय अनमित वर ज्ञान धरन बैकुण्ठविहारी,
जय मिथ्या मत तिमिर हरन सूरज हितकारी।

त्रोटक छन्द

जय नेमि सदा गुणवास नमो, जय पूरहु मो मन आस नमो,
जय दीन हितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो।
जय कालिम लोकतनी सगरी, तसु नासन कों तुम मेघ झरी। जय०
जय काल वृकोदर नासक हो, मत जैन महान प्रकाशक हो। जय०
घनश्याम[3] जिसा तनश्याम लहो, घननाद[4] अरोशरि नाद लहो। जय०
तुम लोक पितामह लोक[5] दही, पितु मात धर कुलचन्द सही। जय०
तुम सोचतसोच न होतकदा, जयपूरित आनन्द जालसदा। जय०
जय ज्ञानरतन तनी छिति[6] हो, तुम राजत दासन की मिति हो। जय०
जय नासत हो भव भ्रामरिका[7] तुम खोलिदई शिव पामरिका[8]। जय०
तुम देखत पाप पहार खिले, तुम देखत सज्जन कञ्ज खिले। जय०

---

१ देवता, २ मान रहित होके, ३ कृष्णजी, ४ मेघनाद, ५ संसार, ६ छिति; पृथ्वी, ७ भूल भुलय्यां, ८ दासी, मुक्ति रूप दासी को आजाद कर दी,

तुम लोक तने शुभ भूषण हो, जिनराज सदा गत दूषण हो। जय०
तुम नाम जहाज चढ़ै नर जे, तिनि पार भये सुखभाजन जे। जय०
कुसुमायुध मारनहार भले, वसु कर्म्म महान कठोर दले। जय०
तुमसे तुमही नहिं दूसर को, सब छांडि ममत्त दया परको। जय०
तुम पाद तनी रज सीस धरै, जन सो शिव कामिनि जाय वरै। जय०
प्रभु नेमि निशाप[1] निसाप[2] करो, मनरंग तनी भव पीर हरो। जय०

घत्ता छन्द—यह शिवानन्द[3] प्रभु नेमिचन्द की गुणगर्भित जयमाल
जो पढ़ै पढ़ावै मन वच तन सौं निज दरसे दरहाल[4]
पातक सब चूरे आनन्द पूरे नासे यम की चाल,
पूरनपद होई लखे न कोई भापत मनरंगलाल।

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र जिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं नि०

सोरठा—समुद विजयके नन्द, नेमिचन्द करुणायतन,
तोरि देउ जगफन्द, जो स्वछन्द वरतै भविक। इत्याशीर्वादः॥
" ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेंद्राय नमः " इति जाप्यं।

—:—:०:—:—

२३ श्रीपार्श्वनाथ पूजा

गीता छन्द

नगरी बनारसि अश्वसेन सुपिता वामा मात है,
तजि स्वर्ग प्राणत पार्श्व स्वामी लसत नव कर गात[5] है।

---

१ नेमिचन्द, २ इन्साफ न्याय, ३ शिवादेवी के नन्दन पुत्र, ४ फौरन,
५ नौ हाथ का शरीर,

इक्ष्वाकु वंशी भुजग लक्षण वर्ष इकशत आव है,
घनश्याम इव तन धरत आभा देखि मो मन भाव है।

दोहा—हे पारस भगवान अब, दयासिंधु गम्भीर,
यहां आय तिष्ठो प्रभो, उसरि जाय भवपीर।

ओंह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द त्रिभंगी

पन्नग ठकुराई सहजै पाई तुम वच सुनि के पवनभखी[१]
तिनकी ठकुराई कहिय न जाई प्रभु प्रभुताई यह सुलखी,
वामा के प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और संवारे शिव दरसों।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

सो भुजंग गुसाई पुनि इत आई फण की छाई करत भली[२]
ताकरि मद हारयौ कमठ विचारयो प्रभुढिग धारयौ सीस चली
वामाके प्यारे जग उजियारे चन्दन सो थारे पद परसों। जिन०

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चँदनम् निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु केवल पावा ऐलविल[३] आवा रुचिर बनावा समवसृतम्,
तामाहि विराजे सूरज लाजे इम छविछाजे कहत श्रुतम,
वामा के प्यारे जग उजियारे अक्षत सो थारे पद परसों। जिन०

---

१ सर्प, २ अच्छी प्रकार, ३ कुबेर,

ओंह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

आसनते सूबे अंगुल ऊंचे चव चव आनन नाथ भये,
तिनते सुख दानी खिरत सुबानी मुनि भवि प्राणी सुगति गये,
वामाके प्यारे जग उजियारे पुष्प सो थारे पद परसों। जिन०

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

बहु देशन माहीं प्रभु विहराही भवि जीवन संबोधि दये,
मिथ्या मतभारी तिमिर विदारी जिन मत जारी करत भये,
वामाके प्यारे जग उजयारे चरु सो थारे पद परसों। जिन०

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्रायक्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कछु इच्छा नाही१ विन डगधारी होत विहारी२ परमगुरु,
जिन प्राणिनकेरा तरव३ सवेरा४ तिते नाथ मग होत सुरू,
वामाके प्यारे जग उजियारे दीप सो थारे पद परसों। जिन०

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

सो शविह तिहारी आनन्द कारी रोज हमारी पीर हरे,
जाकी दुति भारी जग विस्तारी दरसत कारी घननि दरे,
वामाके प्यारे जग उजियारे धूप सो थारे पद परसों। जिन०

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पारसस्वामी अन्तर्यामी हो बड़ नामी विश्वपती,
थारे गुण गाऊं शीस नवाऊं बलि बलि जाऊं दे सुगती,
वामाके प्यारे जग उजियारे फल सो थारे पद परसों। जिन०

---

(१) निरिच्छक हो गये (२) पांव छिलाए विना, आकाश गमन करते हुए,
(३) तिरना, संसार से पार होना, (४) निकट अर्थात् निकट भव्य.

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

जल चन्दन शुभ अक्षत पुष्प सुहावने,
दीपक चरू वर धूप फलौघ१ सुपावने२,
ये वसु द्रव्य मिलाय अर्घ कीजै महा,
तुम पद जजत निहाल होत औ हित कहा ।

ओंह्री श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंचकल्याणक—वैशाखवदी दुतियाके दिन गर्भ रहे निज माके,
वामा उर आनन्द वाढे हम अर्घ चढावत ठाढे ।

ॐह्री श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायवैशाख कृष्णा द्वितीया गर्भकल्याणकायअर्घ्यम्

वदि पूष चतुर्दशि जानो, प्रभु जन्म लिये सुखखानी,
करि अर्घ यहां हम ध्यावें, मनवांछित सुख अब पावें ।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पौषकृष्णा चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

(यहां शुद्ध पाठ पौष कृष्णा एकादशी होना चाहिये)

लखि पौष एकादशि कारी, प्रभु ता दिन केश उपारी,
तप काज रहे वनमाहीं. हम यहां पर अर्घ चढ़ाहीं,

ओं ह्री श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्राय पौष कृष्णैकादश्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

तिथि चैत्र चतुर्थी कारी, भये केवल पदके धारी,
इन्द्रादिक सेवन आये, हम हूँ यहां अर्घ चढ़ाये ।

ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णा चतुर्थ्याम् ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

सुदि सातैं श्रावणमासा, सम्मेद थकी गुणवासा,
लीन्ही शिव की ठकुराई, पद पूजत अर्घ चढ़ाई ।

ओंह्रींश्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला सप्तम्यां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यम् ।

---

१ फलों के ढेर, २ पवित्र

छन्द त्रिभंगी

जय पारस देवा आनन्द देवा सुरपति सेवा करत रहैं,
जयजय अरिहंता देह महंता ध्यावत संता दुख न लहैं।
जय दिगपटधारी[१] गगनविहारी, पापप्रहारी छबि सुथरी,
जयजय कुलमंडन विपति विहंडन दुरमति खंडन मुकतवरी।

छन्द पद्धरि

जय अश्वसेन कुलगगन चन्द, जय वामादेवीके सुनन्द,
जय पासनाह[२] भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।
जयदुरित[३] तिमिरनासन पतंग[४] जयभविककमल लखिहोतदंग[५]
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल,
जय अजर अमर पद धरनहार, जय दुखी दुःखभंजन विचार। जय०
जय धारि पंचमा अमल[६] ज्ञान, पंचम[७] गति लीन्ही सो महान,
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।
जय पंचभाव धारन महंत, सब भव रोगन को करो अन्त। जय०
जय करत पुनीत पुनीत आप, जय दारिदभंजन नाथ जाप। जय०
जय सिद्धि सिलाके बसनहार, जय ज्ञानमई चेतनप्रकार[८]
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।
जय चिंतितार्थ फल देत लाल, जो ध्यावे ताको खोज खोज। जय०
जय धन्य धन्य स्वामी दयाल, जय दीन बंधु तुम लोकपाल,
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।

---

१ दिगम्बर, २ पार्श्वनाथ, ३ संसार का दुःख, ४-सूर्य, ५-हर्षायमान, ६ केवल शुद्ध, ७ मोक्ष, ८ आकार,

जय तुम पदतर की रेणु अंग, जो धरे लहेसो छवि अनंग। जय०
जय तुम कीरति छाई जहान, चहुधा१ छिटकी फूलन समान। जय०
तुम अकथ कहानी कथै जौन, जाकी मती एती है सुकौन। जय०
निति थके शेष२से कथन गाय, नर दीनन को कह कथन आय। जय०
जय करत अरज मनरंगलाल, हम पर किरिपा निधि हो दयाल,
जय पासनाह भवभीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल।

छन्द शार्दूल विक्रीडित

या जयमाला पार्श्वनाथ जिनकी आनन्दकारी सदा,
जो धारे निज कंठ भाव धरिके देखे न नीची कदा,
ऊंचे ऊंचे पद लहत नर सो ताकी कहो का कथा,
पाछे भौ दधिपार लेय सुख सो आनन्द पावे जथा।

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यम् नि० ॥

छंद—जेते प्राणी मोहने बांधि डारे, औरोके ते दुःख दीये निवारे,
तेते थारे पादकी आस लावे, जासौ जाकी श्रृंखला तारि पावै इत्याशीर्वादः

"ॐह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

❀:—:❀:—:❀

२४ श्रीवर्द्धमान पूजा

छन्द गीता

शुभ नगर कुण्डलपुर सिद्धारथ राय के त्रिशलातिया,
तजि पुष्प उत्तर तासु कुक्षा वीर जिन जन्मन लिया।
कर सात उन्नत कनक सा तनु वंश वर इक्ष्वाकु है,
द्वै अधिक सत्तरि वर्ष आयुष सिंह चिह्न भला कहै।

छन्द मालिनी

सो जिन वीर दया निधिके युग पाद पुनीत करेंगे,
व्याधि मिटाय भवोदधि की गुण गावत गावत पार परेंगे,
जावत मोक्ष न होय हमै शुभ तावत स्थापन रोज करेंगे,
आय विराजहु नाथ इहां हम पूजिके पुण्यभंडार भरेंगे।

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द द्रुत विलम्वित

कनक कुंभसुवारि भराय कै, विमल भाव त्रिशुद्ध[१] लगाय कै,
चरम[२] देव जिनेश्वर वीर के चरण पूजत नासक पीर के.

ओंह्री श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं नि० स्वाहा

परम चंदन शीतल वामना[३], करि सुकेसर मिश्रित पावना,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

धवल अक्षत चाव बढावही, करि सुपुंज महा मन भावही,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षताम् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप माल बनाय हिराय[४] के, जुगति[५] सों प्रभु पास लियायके,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

---

१ मन, वचन, काय की शुद्धि, २ अन्तिम, ३ मलयागर, ४ चुनाय, ५ प्रयत्न से।

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

नवल घेवर बावर लाय के, घृत सुलोलित पूव बनाय के,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर अमोलक रत्न मई दिया, जगत ज्योति उद्योत मई किया,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

उठन धूम घटावलि जासुते, इम सु धूप सुगंधित वासुते,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पनस दाडिम आम्र पके भये, कनक भाजन में भरके लिये,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि० स्वाहा

अरघ ले शुभ भाव चढाय के, धवल मंगल तूर बजाय के,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

ओंह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय सर्वसुख प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

छन्द गाथा

मास अषाढसुदी में, षष्ठी दिन जानि महासुखकारी
त्रिशला गर्भ पधारे, तुम पद जजत अर्घ सिरधारी,

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय आषाढशुक्ला षष्ठयां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यम्

चैत्र त्रयोदशि उजयारी, ता दिन जनमे प्रभाव विस्तारी,
अर्घ महाकर धारी, जजत तिहारे चरण हितकारी,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय चैत्रशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घ्यम्

दशमी अगहन वदि में, लखि सब जग अथिर भये वैरागी,
प्रभू महा व्रत धारे, हम पूजत होत बड़भागी,

ओं ह्रींश्रीवर्द्धमान जिनेंद्राय अगहनकृष्णा दशम्यां तपकल्याणकाय अर्घ्यम्

केवल ज्ञानी हुवे, दशमी वैसाख सुदी के माही,
सकल सुरासुर पूजे, हम इह पद लखि अर्घ चढाही,

ओं ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ला दशम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यम्

कार्तिक नष्टकला दिन[१] पावा पुर के गहन[२] ते स्वामी,
मुकति तिया परनाई, हम चरन पूजि होत बड नामी,

ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेंद्राय कार्तिकावास्यायां निर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यम्

छन्द झूलना

वीर जिन धीर धरसिंह पग चिह्न धर तेजतप धरन जया शूरमारी
धर्म्मकी धुराधर अधर[३] बिनु गिराधर परम पद धरन जयमदनहारी
दयाधर सीमधर पंचवर नामधर अमलछबि धरणजय सरम[४]कारी
पंचावर्त की भमंणा[५] ध्वंसि के अचल पद लहत जय जस विथारी

छन्द त्रोटक

जय आनन्द के घन वीर नमो, जय नाशक हो भवभीर नमो
जय नाथ महा सुख दायक हो जमराज विहंडन लायक हो ।२
जय चरम शरीर गम्भीर नमो, जय चर्म तीर्थंकर वीर नमो
जय लोक अलोक प्रकाशक हो, जन्मांतर के दुख नाशक हो ।३

---

१ अमावस, २ उद्यान, ३ निरक्षरीभाणी, ४ शर्म आनन्द, ५ पंच परिवर्तनरूप संसार को नाश करके।

जय कर्म्म कुलाचल छेद नमो, जय मोह बिना निरखेद नमो,
जय पूज्य प्रतार सदा सुथिरा, प्रगटी चहुँ ओर प्रशस्त गिरा।
तन सात सुहाथ विशाल नमो, कनकाभ महादश ताल नमो,
शुभ मूरति मो मन मांहि बसी, सिगरी तब ते भवभ्रांत नसी।
जय क्रोध दवानल मेह[१] नमो, जय त्याग करों जग नेह[२] नमो,
जय अम्बरछांड़ि दिगम्बर भये, गति अम्मरकी धरि अम्मर भये।
जय धारक पंच कल्याण नमो, जय रोज नमे गुणवान नमो,
जयपाद गहे गणराज रहें, शचिनायक सो मुहताज रहें।
जय भवदधि तारन सेत[३] नमो, जय जन्म उधारन हेत नमो,
जय मूरति नाथ भली दरसी, करुणामय शांति सुधाकरसी[४]।
जय सार्थक नाम सुवीर नमो, जय धर्म्म धुरंधर वीर नमो,
जय ध्यान महान तुरी चढ़के, शिव खेत लियो अति ही बढ़िके।
जय पारन वार अपार नमो, जय मार बिना निरधार नमो,
जय रूप रमाधर तो कथनी, कथि पार न पावत नाग फनी।
जय देव महाकृत कृत्य नमो, जय जीव उधारन अत्य[५] नमो,
जय अक्ष बिना सब लोक जई, ममता तुमते प्रभु दूर गई।
जय केवल लब्धि नवीन नमो, सब बातन में परवीन नमो,
जय आत्म महारस पीवन हो, तुम जीवन मूरत जीवन हो।
जय तारन देव सिपारस[६] मो, सुनिले चितदे इह बारसमो,

---

१ मेघ, २ स्नेह, मोह, ३ पुल, ४ चन्द्रमा, ५ जीव के उद्धार करने का है स्वभाव जिनका, ६ सिफ़ारिश अर्ज़,

दुख दूषित मो मन की मनसा, नहिं होव अराम इको छन सा।
तकि तो पद भेषजनाथ भले, तुम पास गरीब निवाज चले,
मनकी मनसा सब पूजन को, तुम ही इहि लायक दूज न को।
इहि कारज के तुम कारण हो, चित लाय सुनो तुम तारण हो,
जग जीवन के रखपाल भले, जब धन्य धन्य किरपाल मिले।
सब मो मनकी मनसा पुजि है, अब और कुदेव नहीं सुजि है,
सुभि है तुमरे गुन गावन की, बुझि है तृष्णा भरमावन की।

छन्द काव्य—पूरण यह जय माल भई अन्तिम जिनकेरी,
पढ़त सुनत मनरंग कहे नसिहै भव फेरी।
वसि है शिव थल मांहि, जहां काया नहिं हेरी,
ज्ञान मई भगवान जाब ह्वै हैं गुण ढेरी।
हरो मोहतम जाल हाल शिव बालनिहारो,
हरो मिथ्या जाल नाल[१] चहु[२] कित्ति[३] पसारो।
सारो कारज वेस लेस सम माल न धारो,
धारो निजगुण चित्त मित्त जिन राज पुकारो।
मरो न एके काल माल विद्या की डारो,
डारो औगुन भार भार दुनिआवी[४] जारो[५]।
जारो नहिं निजरीति पीति दुरगति की मारो,
मारो सन्निधि[६] होय दोह[७] रंचक[८] न विचारो[९]

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेंद्राय जयमालार्घ्यं नि०।

---

१ जल्दी, २ चौतर्फा, ३ कीर्ति यश, ४ संसारी, ५ जलादो, ६ पास आके सूरता से, ७ दोष पाप, मोह, ८ जरा भी, ९ फिकर करो,

छन्द छप्पै—

होहू अनंग स्वरूप भूपको पद विस्तारो,
तासे अपन न कुलै१ भुलै२ मद माया टारो,
टारहु नहिं निज आनि वानि३ ममता की गारो४
गारौ ना कुलकानि जानि के मदन प्रहारो,
मनरंग कहत धन्यधान्य अरू पुत्र पौत्र करि घर भरो,
श्री वीरचंद जिन राज तें तुमको ये कारज सरो। इत्याशीर्वादः

"ॐह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

इति श्रीचतुर्विंशति जिनवर्तमान पूजन संपूर्णम्

छन्द—विषम स्थल सम होय शत्रु मित्रता विचारे,
सुत अर्थी सुतलहे निर्धनी भरे भंडारे।
रोगी होय अरोग शोक की भूमि विदारे,
नीच कुलीकुललहे कुरूपी रूप सम्हारे।
मन वचन काय जो पाठ यह पढ़े पढ़ावे सुने नित,
मनरंगलाल ता पुरुष को देख इन्द्र होवे चकित।

इति शुभम्

१ समस्त कुल, २ भूलाकर, ३ आदत, ४ छोड़ दो,

अथ शान्तिपाठः

[शान्तिजिनं शशिनिर्म्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्,
अष्टसहस्रसुलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ।१
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरंप्रणमामि ।२
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभि रासन योजन घोषौ,
आतपवारण चामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ।३
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं[१] पठते परमां च ।४

वसन्ततिलकावृत्तम्

येऽभ्यर्चितामुकुटकुण्डलहाररत्नैः
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवर वंश जगत्प्रदीपा-
स्तीर्थङ्कराः सततशान्तिकराभवन्तु ।५

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्यतपोधनानाम्,
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शान्तिं भगवान्जिनेन्द्रः ।६
क्षेम सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।७
प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः,
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ।

---

१ अरम्—जल्द,

अथेष्टप्रार्थना—

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्य्यैः
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्,
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे
सम्पद्यन्तां मम भव भवे यावदेतेऽपवर्गः।६
तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्,
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः।१०
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं,
तं खमउ णाणदेव य मज्झविदुक्खक्खयं दिंतु।११
दुक्खखओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाहोय।
मम होउ जगतबंधव जिणवर तव चरणसरणेण।१२

अथ विसर्जनं

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर। १
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्,
विसर्ज्जनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर। २
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च,
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्षरक्ष जिनेश्वर।३
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम्,
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितिम्।४

इति शुभम्

॥ श्री जिनाय नमः ॥

नित्य-नैमित्तिक-विशेष पूजन-संग्रह

जलधारा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्यजगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु, जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि ।

इसको पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करें ।

श्रीमन्मंदरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षतैः
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत्पादपद्मस्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकङ्कणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ।

इसको पढ़कर यज्ञोपवीत तथा सुन्दर आभूषण धारण करना चाहिये ।

सौगन्ध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन,
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिन्द्यमाद्यौ ॥
आरोपयामिविबुधेश्वरवृन्दवन्द्य,
पादारविन्दमभि वंद्यजिनोत्तमानाम् ॥

इसको पढ़कर तिलक लगाना चाहिये ।

ये सन्ति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागाः प्रभूतबलदर्पयुता विबोधाः ।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामिपुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥

(इति भूमि शुद्धिः)

क्षीरार्णवस्यपयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्यदनेकवारम् ।
अत्युद्धमुद्यतमहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसंभवतापहारि ॥

इति सिंहासन को स्थापन कर प्रक्षालन करना चाहिये ।

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं,
श्रीमंगलोत्तमसर्वजनस्य नित्यं ।
श्रीमत्स्वयं क्षयमयं च विनाशभिन्नं,
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ॥

इसको पढकर सिंहासन पर 'श्री' लिखे ।

यं पाण्डुकामलशिलागतमादिदेव,
मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः,
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बं ॥

(इति बिम्बस्थापनम्)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरौप्य,
ताम्रारकूटघटितान्पयसासुपूर्णान् ।

संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥

(इति कलशस्थापनं)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी, संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम् ।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टै, र्भक्त्याजलैर्जिनपतिंबहुधाऽभिषिञ्चे ॥

(अथाद्ये[१] जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ······ देशे ······ नगरे ······ मासेशुभे ·········· पक्षे ······ तिथौ ········ वासरे ······· जिनमन्दिरे श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरमस्तकानामुपरिधारादीयते, पूजक कारकश्रोतृगणमुनिआर्यिकाश्रावकश्राविकाणां कर्मक्षयः भवंतु ।

इति जलधारा

द्रव्यैरनल्पघनसारचतुःसमाद्यै, रामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः ।
मिश्रीकृतेनपयसाजिनपुङ्गवानां, त्रैलोक्यपावनमहंस्नपनंकरोमि अर्घ्यं ।

(इति सुगन्धितजलस्यधारा)

इष्टैर्मनोरथशतैरिवभव्यपुन्सां, पूर्णैःसुवर्णकलशैर्निखिलावसाने ।
संसारसागरविलंघनहेतुसेतु, माप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ॥

(इति चतुःकलशधारा)

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पापनाशकम् ।
जिनगन्धोदकं वन्दे अष्टकर्मविनाशकम् ॥

(इति मस्तके गन्धोदकस्वीकरणम्)

---

[१] अथ ······ मासे आदि सभी जगह पढ़ना चाहिये ।

अथ जलधारा की जयमाला

अन्तमहि जिनेश्वर महिपरमेश्वर इन्द्रन्हवन संजोइयऊ।
तब देख विकम्पयो हियरा जम्पो सुरं परंपर बोलियऊ ॥

पद्धरि छन्द

किम कलश ढुरें बालक जिनेन्द्र, तब मन में जम्यो सुरवरेन्द्र।
दिट्ठो जिनेन्द्र बालक शरीर, तब मेरु अंगूठा हनो वीर ॥
डगमगो मेरु कम्पो सुरेश, वीराधिवीर जाने जिनेश ॥
सुर साथ सुरेश भये अनन्द, त्रैलोक्यनाथ जहां भुवनचंद ॥२
जय जय बालापन भुवनमन्थ, कन्दर्प दलन निज मुक्तिपंथ।
सुरनर पति पंजर गुणहरिद्धि, तुम दर्शन स्वामी होउ सिद्धि ॥३
तहां इन्द्र सुन्हवन कराय गत्र, तेतीस कोटि सिर धरें छत्र ॥
ढारें सहस्रऽ अष्टनीर, क्षीरोदधिसे लाये सुर सुधीर ॥४॥
कुमकुम चन्दन चर्चें शरीर. भवताप दहन नाशन सुधीर।
जे अन्य विरस गुरुकर विभाव, ते अमरलहे शिवपुरी ठाव ॥५
उज्वल अक्षत आगें धरेहु. अरहंत सिद्ध पुनि पुनि भनेहु ॥
जे नेवज नव विधि थार देहिं, मन वचन सफल काया करेहि ॥६
आंतिय इन्द्र कर चलो शांत, मणि रत्न प्रदोपहिं मजकांत।
तहां धूप अगर खेवें सुगन्ध, भवमुक्तय नरघर पट्टग्रन्थ ॥७
फल नारिकेल जिन चढ़न योग्य, कर भाव धरे पुनि लहें भोग्य।
वसुविधि पूजा कर चलो इन्द्र, दुन्दुभि बाजें सुरभयानन्द ॥८
नर पुहिमिलोय रंजो महेन्द्र, सब विधि से भक्ति करी शतेन्द्र।
केसो बहुनन्दन करहि एव, किरपाल भजें जिन चरण सेव ॥९

घत्ता—सम्यक्त्व हढावे ज्ञान बढावे विविध भांति स्तुति करऊं।
जिनवर मन ध्यावे शिवपद पावे भव समुद्र दुस्तर तिरऊं ॥

ॐ ह्रीं अभिषेक प्राप्तेभ्यो वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्योऽर्घ्यम् इत्याशीर्वादः।

इति जलधारा संपूर्ण

विनय पाठ

इहि विधि ठाड़ो होय के प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ ॥१

अनन्त चतुष्टय के धनी तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कन्त तुम तीन भुवन के राज ॥२

तिहुँ जग की पीड़ा हरण भवदधि शोषनहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के शिवसुख के करतार ॥३

हरता अघ अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो धरता निज गुणराश ॥४

धर्मामृत उर जलधिसों ज्ञान भानु तुम रूप ॥
तुमरे चरण सरोज को नावत तिहु जगभूप ॥५

मैं वन्दौं जिनदेव को कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने और न कोउ उपाव ॥६

भविजन को भवकूप तें तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति आतमगुण भंडार ॥७

चिदानन्द निर्मल कियो धोय कर्मरज मैल ॥
सरल करी या जगत में भविजन को शिव गैल ॥८

तुम पद पंकज पूजते विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं विष निरविषता थाय ॥९
चक्री खग धर इन्द्रपद मिलैं आपलैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं नेम सकल हनपाप ॥१०
तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११
पतित बहुत पावन किये गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी सो जय जय जय जिनदेव ॥१२
थकी नाव भवदधि विषैं तुम प्रभु ! पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु ! जय जय जय जिनदेव ॥१३
राग सहित जग में रुले मिले सरागी देव,
वीतराग भेंटो अबै मैंटो राग कुटेव ।१४
कित निगोद कित नारकी कित तिर्यंच अज्ञान,
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान ।१५
तुमको पूजें सुरपती अहिपति नरपति देव,
धन्य भाग्य मेरो भयो करन लगो तुम सेव ।१६
अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार,
मैं डूबत भवसिन्धु में खेओ लगाओ पार ।१७
इन्द्रादिक गणपति थकी तुम विनती भगवान,
विनती अपनी टारिकै कीजे आप समान ।१८
तुमरी नेक सुदृष्टिसों जग उतरत है पार,
हा हा डूबो जात हौं नेक निहारि निकार ।१९

जो मैं कहूँ और सों तो न मिटे उरझार,
मेरी तो तोसों बनी तातें करत पुकार ।२०
वन्दों पांचों परमगुरु सुरगुरु वन्दत जास,
विघन हरन मंगल करन पूरन परम प्रकाश ।२१
चौबीसों जिन पद नमों नमों शारदा माय,
शिवमग साधक साधु नमि रचों पाठ सुखदाय ।२२

मंगलपाठ

—:०:—

मङ्गल मूर्ती परम पद पञ्च धरो नित ध्यान,
हरो अमङ्गल विश्व का मङ्गल मय भगवान ।२३
मङ्गल जिनवर पद नमों मङ्गल अर्हंत देव,
मङ्गलकारी सिद्धपद सो वन्दों स्वयमेव ।२४
मङ्गल आचार्य मुनि मङ्गल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मङ्गल करो वन्दों मन वच काय ।२५
मङ्गल सरस्वति मात का मङ्गल जिनवर धर्म,
मङ्गलमय मङ्गल करो हरो असाता कर्म ।२६
या विधि मङ्गल करन से जग में मङ्गल होत,
मङ्गल नाथूराम यह भवसागर दृढ़ पोत ।२७

इति ।

प्रथम देवशास्त्र गुरुपूजा

ओं जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ॥
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।
ओं अनादिमूलमंत्रेभ्योनमः । (पुष्पं)

चत्तारि मंगलं । अरिहंत मंगलं । सिद्धमंगलं । साहू मंगलं । केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगलं । चत्तारिलोगुत्तमा । अरिहंत लोगुत्तमा । सिद्ध लोगुत्तमा । साहूलोगुत्तमा । केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारिसरणं पव्वज्जामि । अरिहंतसरणं पव्वज्जामि । सिद्धसरणं पव्वज्जामि । साहूसरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि । ओं नमोऽर्हते स्वाहा । (पुष्पं)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा,
ध्यायेत् पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा,
यः स्मरेत् परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः,
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ।
एसो पंच णमो यारो सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः,
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ,
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः ,
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।

ओं नमोऽर्हते स्वाहा । परिपुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

प्रभो भवाङ्गभोगेषु निर्विण्णो दुःखभीरुकः ,
एषु विज्ञापयामि त्वां शरण्यं करुणार्णवम् ॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामानि ! अत्रावतरावतर ।
ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामानि ! अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामानि ! अत्रमम सन्निहितानि
भवत भवत वषट् सन्निधीकरणंस्थापनम् ॥

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैः, चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिनाख्याः यहं यजे ॥

ओंह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्राष्टनामभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेअर्घ्यं ।

मोक्षमार्गस्यनेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारम् विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

ओं ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञान ! अत्रावतरावतर
संवौषट् (आह्वाननं) अत्रतिष्ठतिष्ठठः ठः स्थापनं ।
अत्रममसन्निहितं भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

उदकचन्दनतन्दुल पुष्पकैश्चरु,सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवलमङ्गलगानरवाकुले. जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतद्वादशांगश्रुतज्ञानप्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगद्रव्यानु
योगर्गाभतसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायकमनंतचतुष्टयार्हं ।
श्रीमूलसंघसुदृशांसुकृतैकहेतु,
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेषमयाभ्यधायि ॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय,
स्वस्तिस्वभावमहिमोदयसुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥
स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय,
स्वस्तिस्वभावपरभावविभासकाय ॥
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपम्,
भावस्यशुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ॥
आलम्बनानिविविधान्यवलंब्य वल्गन,
भूतार्थयज्ञपुरुषस्यकरोमि यज्ञम् ।
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तूनि नूनमखिलान्ययमेकएव ॥
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ,
पुण्यम् समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥

श्रीवृषभोनः स्वस्ति स्वस्ति श्री अजितः । श्रीसम्भवः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः। श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः। श्रीसुपार्श्वः

स्वस्ति स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः। श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशीतलः। श्रीश्रेयान् स्वस्ति स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः। श्रीविमलः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअनन्तः। श्रीधर्मः स्वस्ति स्वस्ति श्रीशांतिः। श्रीकुन्थुः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअरनाथः। श्रीमल्लिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः। श्रीनमिः स्वस्ति स्वस्ति श्रीनेमिनाथः। श्रीपार्श्वः स्वस्ति स्वस्ति श्रीवर्धमानः।

ओं ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रेपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नित्याप्रकम्पाद्भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं, सम्भिन्नसम्श्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधम् बुद्धिबलम् दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
संस्पर्शनम् संश्रवणं च दूरा, दास्वादनघ्राणविलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्ध दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
जङ्घावलिश्रेणिफलाम्बुतन्तु, प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयोनः॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताःकृतिनोगरिम्णि
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयोनः॥
सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रम्, घोरम् तपो घोरपराक्रमस्थः।

ब्रह्मापरम घोरगुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोनः ॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषादृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयोनः ॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतंस्रवन्तो, मधुस्रवन्तोऽप्यमृतंस्रवन्तः
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्तिक्रियासुःपरमर्षयोनः ॥

इति स्वस्तिक्रियाविधानम्

नोट—किसी भी पूजन को करने वाला प्रारम्भ में यह प्रतिज्ञा करे और अन्त में विसर्जन करे ।

अद्याद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे .... देशे .... नगरे जिन मन्दिरे .... मासे शुभे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... पूजनप्रतिज्ञां करोम्यहं ममकर्मक्षयो भवतु ॥

१ अथ देवशास्त्रगुरुपूजा

स्थापना—अडिल्लछन्द ।

प्रथमदेव अरहन्त सुश्रुत सिद्धान्तजू ।
गुरुनिर्ग्रन्थ महन्त मुकतिपुरपन्थजू ॥
तीनरतन जगमांहि सु ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ॥

दोहा—

पूजों पद अर्हन्त के पूजों गुरुपद सार ।
पूजों देवी सरस्वती नितप्रति अष्ट प्रकार ॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणं ।

अथाष्टक—गीता छंद

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर वंदनीक सुपद प्रभा,
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल देख छवि मोहित सभा ।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहु विधि नचूं,
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा—

मलिन वस्तु हर लेत सब जल स्वभाव मलछीन,
जासों पूजों परमपद देवशास्त्रगुरु तीन ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे त्रिजग उदर मंझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे,
तिन अहित हरन सुवचन जिनके परमशीतलता भरे ।
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घसि सचूं,
अरहन्त श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥

दोहा—

चन्दन शीतलता करै तपत वस्तु परवीन,
जासों पूजों परम पद देवशास्त्रगुरु तीन ।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीतिस्वाहा:

यह भवसमुद्र अपारतारण के निमित्त सुविधि ठही,
अति दृढ़ परम पावन यथारथ भक्ति वर नौका सही।
उज्ज्वल अखन्डित शालितंदुल पुंज धरि त्रय गुण सचूं,
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—

तन्दुल शालि सुगंध अति परम अखंडितवीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽक्षताननिर्वपामीति स्वा ।।

जे विनयवन्त सुभव्य उर अम्बुज प्रकाशन भानु हैं।
जे एक मुख चारित्र भापत त्रिजग माहिं प्रधान हैं॥
लहि कुन्द कमलादिक पहुप भव भव कुवेदनसों बचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्तगुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

विविधभांति परिमलसुमन भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम पद देवशास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनायपुष्पम्निर्वपामीतिस्वाहा।

अति सबल मदकन्दर्प जाको क्षुधा उरग अमान हैं।
दुस्सह भयानक तास नाशन को सुगरुड़ समान हैं।
उत्तम छहों रस युक्त नित नैवेद्य कर घृत में पचूँ।
अरहन्तश्रुत सिद्धान्तगुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

नाना विध संयुक्तरस व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद देव शास्त्र गुरुतीन॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि०।

जे त्रिजग उद्यम नाश कीने मोह तिमिर महाबली।
तिहिं कर्म घाती ज्ञान दीप प्रकाश ज्योति प्रभावली॥
इह भांति दीप प्रजाल कन्चन के सुभाजन में खचूं।
अरहन्तश्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥

दोहा—

स्वपर प्रकाशक ज्योति अति दीपक तमकर हीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन॥
ओं ह्रीं देवशास्त्र गुरुभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपम् नि०।

जो कर्म ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगन्धता करि सकल परिमलता हँसै॥
इह भांति धूप चढ़ाय नित भवज्वलनमाहिं नहीं पचूँ।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

अग्निमांहि परिमल दहन चँदनादि गुणलीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरुतीन॥
ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

लोचन सुरसना घ्राण उर उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी सकल फल गुणसार हैं॥

सो फल चढ़ावत अर्थ पूरन परम अमृत रस सचूँ।
अरहँतश्रुत सिद्धान्त गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—

जे प्रधान फल फल विषै पँचकरण रसलीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरुतीन॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलम् नि०

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ॥
इह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भविकरत शिवपङ्कति मचूँ।
अरहन्तश्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रन्थनित पूजा रचूँ॥

दोहा—

वसुविधि अर्घ संजोय के अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परमपद देवशास्त्र गुरु तीन॥

अथ जयमाला—दोहा।

देवशास्त्र गुरु रतनशुभ तीन रतन करतार।
भिन्नभिन्न कहुँ आरती अल्प सुगुण विस्तार॥

पद्धरि छन्द

चउकर्मसुत्रेसठ प्रकृति नाश, जीते अष्टादश दोषराश।
जे परमसुगुण हैं अनन्त धीर, कहवतके छयालिस गुणगम्भीर॥
शुभ समवशरण शोभा अपार. शत इन्द्र नमत कर शीश धार।
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दों मन वच तन कर सुसेव॥
जिनकी ध्वनि है ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।

दशाष्टमहाभाषासमेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत।
सो स्याद्वादमय सप्तभंग, गणधर गूंथे बारहसुअंग।
रवि शशि न हरै सोतम हराय, सो शास्त्रनमूँ बहु प्रीतिल्याय।
गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रत्नत्रयनिधि अगाध।
सँसार देह वैराग्यधार, निरवांछि तपै शिवपद निहार।
गुण छत्तिस पच्चिस आठवीस, भवतारण तरण जिहाज ईस।
गुरुकी महिमा वरणी न जाय, गुरुनाम जपौं मन वचन काय।

सोरठा—कीजे शक्ति प्रमाण, शक्ति विना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोपै दुरित, हरै दुःख संकट, पावै रोग रहित नरदेह,
पुण्य भंडार भरै, जश प्रगटै, मुकति पंथसो जुरै सनेह।
रचै सुहाग देय शोभादिक परभव पहुंचावै सुरगेह,
कुगति पँथ दलमलै 'बनारसि', वीतराग पूजा फल येह।
सुधर्म प्रकाशै पाप विनासै कुगत उथप्पनहार,
मिथ्यामत खँडै कुनयविहँडै मँडै दया अपार।
तृष्णा मद मारै राग विडारै यही जिनागम सार,
जे पूजे ध्यावें पढ़ैं पढ़ावें ते जगमांहि उदार।
मिथ्यातदलन सिद्धांत साधक मुकतिमारग जानिये,
करनी अकरनी सुगति दुर्गति पुण्य पाप बखानिये।
संसार सागर तरणतारण गुरु जहाज विशेखिये,
जगमांहि गुरुसम कहैं 'बनारसि' और न दूजो देखिये।

ये पूजा जिननाथशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते,
त्रैसंध्यं सुविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयंतो नराः ॥
पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूत्वा तपोभूषणास् ।
ते भव्याः सकलावबोधरुचिरां सिद्धिं लभंते पराम् ।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलि क्षिपेत्)

इति देवशास्त्रगुरुपूजा ॥

देवशास्त्र गुरु पूजा की प्रथम अचरी

बहु तृषा सतायो, अति दुःख पायो, तुम पै आयो, जल लायो ।
उत्तम गंगाजल, शुचि अतिशीतल, प्रासुक निर्मल गुण गायो ॥
प्रभु अन्तरयामी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी, दोष हरो ।
यह अर्ज सुनीजे, ढील न कीजे, न्याय करीजे, प्रभु दया करो । जलं १
अघ तपत निरन्तर, अगनि पटन्तर, मो उर अन्तर खेद करो ।
ले बावन चन्दन, दाह निकन्दन, तुम पद वन्दन, हरष धरो ॥
प्रभु अन्तरयामी इत्यादि । चन्दनम् ॥२
औगुन दुःखदाता, कह्यो न जाता, मोहि असाता, बहुत करे ।
तन्दुल गुणमण्डित, अमल अखण्डित, पूजत पण्डित प्रीति धरे ॥
प्रभु अन्तरयामी आदि । अक्षतान् ॥ ३
सुरनर पशुकोदल, काम महाबल, बात कहत छल, मोहलिया ।
ताकेशर ल्याऊँ, फूल चढ़ाऊँ, भगति बढ़ाऊँ, खोलहिया ॥
प्रभु अन्तरयामी० पुष्पं ॥४

सब दोषन मांही, या सम नाहीं, भूख सदाही, मो लागे ।
सद् घेवर बावर, लाडू बहुत धर, थार कनक भर, तुम आगे ॥
प्रभु अन्तरयामी त्रिभुवन नामी० । नैवेद्यम् ॥५

अज्ञान महातम, छाय रह्यो मम, ज्ञान ढक्यो हम दुःख पायो ।
तम मेंटनहारा, तेज अपारा, दीप सम्हारा गुण गायो ॥
प्रभु अन्तरयामी० । दीपम् ॥६

यह कर्म महावन, भूल रह्यो जन, शिव मारग नहिं पावत हैं ।
कृष्णागरु धूपं, अमल अनूपम्, सिद्ध स्वरूपम्, ध्यावत हैं ॥
प्रभु अन्तरयामी० धूपम् ॥७

सबतें जोरावर, अन्तराय अरि, सुफल विघन कर डारत हैं ।
फल पुञ्ज विविध भर, जपत मनोहर, श्रीजिनवरपद धारत हैं ॥
प्रभु अन्तरयामी आदि । फलम् ॥८

आठों दुःखदानी, आठ निशानी, तुम ढिग आन निवारन हो ।
दीनन निस्तारन, अधम उधारन, 'द्यानत' तारन कारन हो ॥
प्रभु अन्तरयामी० अर्घं ॥९

देवशास्त्र गुरुपूजा की द्वितीय अचरी

दोहा—जल स्वभाव निर्मल (उज्ज्वल) करे जन्म जरा नहिं जाय ।
जन्म जरा प्रभु ! तुम हरो यातें पूजों पाय । जलम् ॥१
चन्दन तो शीतल करे भवाताप नहिं जाय ।
भवाताप प्रभु ! तुम हरो यासें पूजों पाय । चन्दनम् ॥२

तन्दुल सों अक्षत कहैं सो वे अक्षत नाहिं ।
अक्षयपद प्रभु ! तुम लियो यातें पूजों पाय । अक्षतान् ॥३
कामवाण पुष्पम् सजे सो तुम जीते राय ।
यातें मैं पावन पहूँ मदनव्याधि (वाण) नशिजाय । पुष्पं ॥४
भोजन नानाविधि किये मूल क्षुधा नहिं जाय ।
क्षुधावेदनी तुम हरी यातें पूजों पाय । नैवेद्यम् ॥५
दीपशिखा जगमें प्रगटज्ञान(ध्यान)शिखा घटमांहि ।
ढूँढत डोलत जीव को मोह कहूँ छिप जांहि । दीपम् ॥६
जब धूपायन मेलिकर ध्यान अग्नि धर धीर ।
कर्म काष्ठ तहां खेइये त्रिभुवनवास गहीर । धूपम् ॥७
फल फल फलसों कहत हैं जे फल वे फल नाहिं ।
महामोक्षफल तुम लियो यातें पूजों पाय । फलम् ॥८
जलचन्दन अक्षत पहुप क्यो (अरु) वरनो नैवेद ।
दीप धूप फल अरघमों यह पूजा वसु भेद ॥
यह पूजा जिन राज की कीजे शुचि कर अङ्ग ।
नितप्रति पूजा मन धरो कजे अर्घ अभङ्ग । अर्घ्यम् ॥९

देव शास्त्र गुरुपूजा की तृतीय अचरी

खचित मणिमय कनक झारी गंगजल जामें भरो ।
इन्द्र सुर सब साज ले इह भांति पूजन विस्तरो ॥
तेहू करैं मनु हर्ष मन में पूज प्रभु कासे करैं ।

त्रैलोक्यनाथ अनन्तगुणको कहि सकै सुन तहिं बनै । अर्घं ॥१

केशर कपूर सुगन्ध चन्दनं चरण चर्चित अनुसरो।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, चन्दनम् ॥ २

हीरा कणीसी ज्योति जामें अक्षत अखण्ड पुञ्जहिं धरो ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, अक्षतान् ॥३

पारिजात के फूल ले सुर आनके वर्षा करो ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, पुष्पम् ॥४

मेवा सुमिष्ट कल्पतरु के थार भर आगे धरों ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, नैवेद्यम् ॥५

दीप रतनन ज्योति जामें नृत्य कर आरति करैं ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, दीपम् ॥६

धूप दशांगी खेइये वसु कर्म भव भवके जरो ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, धूपम् ॥७

षट् ऋतु के फल सर्व लेकर फल भले से अनुसरो ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, फलम् ॥८

वसुद्रव्य लै एकत्र यह विधि अर्घ लै मंगल पढ़ो ।

इन्द्र सुर०, तेहू करैं०, त्रैलोक्यनाथ०, अर्घ्यम् ॥९

इति अञ्जलिका समाप्ता

श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजा

पूर्वापरविदेहेषुविद्यमानजिनेश्वरान् ।

सर्वानियाम्यहमत्र शुद्धसम्यक्त्वहेतवे ॥

ओं ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीविदेहस्थसीमंधरादिजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कर्पूरवासितजलैर्भृतहेमभृङ्गैः धारात्रयंददतुजन्मजरायहान्यै ।
तीर्थंकरं च जिनविंशतिविद्यमानं संचर्चयामिपदपङ्कजशांतिहेतोः ॥

ओं ह्रीं श्रीविदेहस्थविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलंनि० ।

काश्मीरचन्दनविलेपितपद्मयुग्म ! संसारतापहर ! दूरीकरोतुनित्यं
तीर्थंकरं च इत्यादि । सुगंधम्

अखंडाक्षतसुगंधैः करोमिपूजामक्षयपदस्यसुखसंपत्प्राप्तिहेतोः ।
तीर्थंकरं च जिनविंशतिविद्यमानं० । अक्षतान् ।

अम्भोजचम्पकसुगन्धसुपारिजातैः कामंविध्वंसनंकुरुत्वंममजिनार्यं
तीर्थंकरंजिनविंशति० । पुष्पम् ।

नैवेद्यकैः शुचितरैर्घृतपक्वखंडैर्क्षुधादिरोगहर ! दूरविनाशनार्थं ।
तीर्थंकरं च जिनविंशति० । नैवेद्यम् ।

दीपैः प्रदीपितजगत्त्रयरश्मितेजः । दूरीकुरुतिमिरमोहविनाशकत्वं
तीर्थंकरं च जिन० । दीपम् ।

कर्पूरकृष्णागरुचन्दनाद्यैर्वन्दे सुगन्धकृतसारमनोहराद्यैः ।
तीर्थंकरं च जिन० । धूपम् ।

बादाम दाडिम मनोहर श्री फलाद्यैः
फलैरभीष्ट सुख सम्पति प्राप्ति हेतोः
तीर्थं० । फलम्

जलैःसुगंधाक्षतपुष्पचरुभिर्दीपैः सुधूपफलमिश्रितहेमपात्रैः ।
अर्घंकरोमि जिनपूजनशांतिहेतोःसंसारपूर्णंकुरुसेवकानां । अर्घ्यं ।

अथजयमाला—

श्रीवीसजिनेसुर नमत सुरासुर चक्रेश्वरपूजितचरणं ।
जयज्ञानदिवाकरगुणरत्नाकर सेवतनासे विघनघनं ॥

श्रीबीसजिनेश्वरविहरमाण, पणमामिपंचशतधनुप्रमाण ।
जेभव्यकमलपडिबोहयंत, विहरंत विदेहा तम हरंत ।।
सीमंधर पणऊं जिणवरिन्द, जुग्मंधर बन्दौ दुहदलिन्द ।
हौं बन्दौ बाहु सुबाहु स्वामि, जम्बूविदेहजे सिद्धगामि ।।
संजात स्वयंप्रभ जिनजयन्ति, ऋषभानन धर्म प्रकाशयन्ति ।
चन्द्रानन अष्टम देव वीर, हौं पणऊं प्रामजे भवहितीर ।
जे पुष्करार्ध जिनचन्द्रबाहु, भुजंगम ईश्वर जगबाहु ।
नेमीश्वर पणऊं वीरसेन, महाभद्र भद्रभवितिरइजेन ।।
हौं पणऊं देव सुजस्सभाव, अरु अजितवीर्य जे मोक्षपाव ।
घत्ता—जे वीस जिनेसुर नमत सुरासुर बहिरमाण मैं संथुनई ।
जे पूजैं ध्यावैं पढ़ैं पढ़ावैं ते पावैं शिवपरमगई ।। अर्घ्यं
इत्याशीर्वादः । इति श्रीविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजा ।।

अथविद्यमानविंशतितीर्थंकरपूजाकी अष्टलिका

भव अटवी भ्रमत, बहु जनम धरत, अतिमरण करत, लहि जरा की विपत, अति दुःख पायो । तातैं जल लायो, तुम ढिंग आयो, शांत सुधारस अब पायो ।। श्रीबीस जिनेसुर दयानिधेसुर जगतमहेसुर मेरी विपत हरो । भवसंकट खंडो, आनन्द मंडो, मोह निजातम शुद्ध करो ।। जलं १

पर चाह अनल, मोह दहत सतत, अति दुःख सहत, भव विपत भरत, तुम ढिंग आयो । तातैं ले बावन, तुम अतिपावन, दाह मिटावनो सुखदाय, श्रीबीसजिनेसुर० ।। चंदनम् २

फिर जनम धरत, फिर मरण करत, भव भमरी भ्रमत, बहु नाटक नटत, अति थकित भयो। तातैं शुभ अक्षत, तुम पद अरचत, भव भय तरजत अति सुखित भयो, श्रीवीसजिनेसुर०॥ अक्षतान् ३

मोह काम ने सतायो, चारुवामा उर लायो, सुध बुध बिसरायौ, बहु विपत गहायौ, नानाविधि की। तातें वर फूलं, तुम निरशूलं मोह विशूलं कर अबकी, श्रीवीस०॥ पुष्पं ४

मोह क्षुधा ने सतायो, तब अशन बढ़ायो, बहु याचना करायो, तहु पेट न भरायो, अति दुःख परसो। तातें चरुधारी, तुम निरहारी, मोह निराकुल पद बकसो, श्रीवीस०॥ नैवेद्यम् ५

मोह तमकी चपेट, तातें भयो हूँ अचेत, कियो जड़हीं से हेत, भूलो आपा पर भेद, तुम शरण गही। दीपक उजयारो, तुम ढिग धारो, स्वपर प्रकाशो नाथ सही, श्रीवीसजिनेसुर०॥ दीपं ६

कर्म इंधन है भारी, मोकों कियो है दुःखारी, ताकी विपत गहाई, नेक सुधहू न धारी तुम चरण नमें। तातें वरधूपं तुम निजरूपं कर शिव भूपं, नाथ हमें, श्रीवीसजिनेसुर०॥ धूपम् ७

अन्तराय दुःखदाई, मेरी शकती छिपाई, मोसों दीनता कराई, मोकों अति दुःखदाई, भयो आजलों प्रभू। तातें फल लायो, तुम ढिग आयौ, मोक्ष महाफल देवप्रभू, श्रीवीस०॥ फलम् ८

आठों कर्मों ने सतायो, मोकों दुःख उपजायो मोसों नाचहू नचायो, भाग तुम पास आयो अब बच जाऊं। वसु द्रव्य सम्हारी, तुम ढिगधारी, हे भवतारी, शिव पाऊं, श्रीवीस०॥ अर्घ्यम् ९ ॥इति॥

कृत्रिमाकृत्रिम जिन बिम्बों का अर्घ

दोहा—स्थापना

कृत्याकृत्रिम जिन भवन तिनमें बिम्ब अनेक ॥
तिन सब कों स्थाप के पूजा करहुँ विशेष ॥

ओंह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीं गतान् ॥
वन्दे भावन व्यंतरान्द्युतिवरकल्पामरानवासगान् ॥
सद्गंधाक्षतपुष्पदाम चरुकै सद्दीपधूपै:फलैः ॥
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ॥
सात करोड़ बहत्तर लाख सुभवन जिन पाताल में ॥
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन ते जजों अघ मल टाल के ॥
अब लख चौरासी सहस सत्यानव अधिक तेईसरु कहे ॥
बिन संख ज्योतिष व्यंतरालय ते जजो सब मन वच ठहे ॥

ओं ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिंबेभ्योऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ॥
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुङ्गवानाम् ॥
अवनि तलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां वनभवनगतानाम् दिव्य वैमानिकानाम्। इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां जिनरनिवल यानां भावतोऽहं स्मरामि ॥

जम्बूधातकिपुष्करार्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवाश्,
चन्द्राम्भोजशिखण्डिकण्ठकनकप्रावृड्घनाभा जिनाः।
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धना,
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः॥
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुण्डले मानुषांके॥
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भवने महितले यानि चैत्यानि तानि॥
द्वौ कुन्देन्दुतुषारहारधवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ,
द्वौ बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषाः षोडषजन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभास्
ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः॥
नौकोडिसया पणवीसा तेपणलक्खाण सहस सत्ताईसा।
नौसेदे अडताला जिणपडिमाऽकिट्टिमा वन्दे॥
ओं ह्रीं त्रिलोकसंबंध्यकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय पूजा
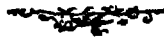
चौपाई—

आठ किरोड़ रु छप्पन लाख, सहस सत्याणव चतुशत भाख।
ओड़ इक्यासी जिनवर आन, तीन लोक आह्वान करान॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीतिजिनाकृत्रिम चैत्यालयानि ! अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

छन्द त्रिभंगी

क्षीरोदधि नीरं, उज्ज्वल सीरं, छान सुचीरं, भरि झारी ।
अति मधुर लखावन, परम सुपावन, तृषाबुझावन गुणभारी ॥
वसुकोटि सु छप्पन लाख सत्तानव सहस चारशत इक्यासी ।
जिन गेह अकीर्तम तिहुं जग भीतर पूजत पद ले अविनाशी ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्र चतुःशतैकाशीतिअकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योजलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिर पावन, चन्दन बावन, ताप बुझावन घसिलीनो । धरि कनककटोरी, द्वै करजोरी, तुम पद ओरी चित दीनो ॥ वसु०चंदनं
बहु भांति अनोखे, तंदुल चोखे, लखि निरदोखे हम लीने । धरि कंचनथाली, तुम गुणमाली, पुञ्जविशाली करदीने ॥ वसु०अक्षतान्
शुभ पुष्प सुजाती, है बहु भांती, अलि लिपटांती लेय वरं । धरि कनक रकेबी, कर गहिलेवी तुम पद जुगकी भेंट धरं ॥ वसु०पुष्पं
खुरमाजुगिंदौड़ा, बरफी पेड़ा, घेवर मोदक भरथारी । विधिपूर्वक कीने, घृत पय भीने खंड में लीने सुखकारी ॥ वसु० नैवेद्यं
मिथ्यात महातम छाय रह्यो हम, निज भव परणति नहिं सूझै । इह कारणपाकैं दीप सजाकैं थाल धराकैं हम पूजैं ॥ वसु० दीपम्
दशगन्ध कुटाके धूप बनाकैं निजकर लेकै धरि ज्वाला । तसु धूम उड़ाइ दश दिशि छाइ बहु महकाइ अति आला ॥ वसु० धूपं

बादाम छुहारे श्रीफल धारे पिस्ता प्यारे दाखवरं। इन आदि अनोखे लखि निर्दोखे थाल पजोखे भेंट धरं॥ वसु० फलं

जलचन्दन तन्दुल कुसुम रु नेवज दीप धूप फल थाल रचों। जय घोप कराऊं बीन बजाऊं अर्घ चढ़ाऊं खूब नचों॥ वसु० अर्घ्यम्

चौपाई—अधोलोक जिन आगम साख, सात कोड़ि अरु बहत्तर लाख। श्रीजिनभवन महाछवि देय, तेसब पूजों वसुविधि लेय॥

ओं ह्रीं अधोलोकसम्बन्धीसप्तकोटिद्विसप्ततिलक्षाकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०।

मध्यलोक जिन मन्दिर ठाठ, साढ़े चार शतक अरु आठ।
ते सब पूजों अर्घ चढ़ाय, मन वच तन त्रय जोग मिलाय॥

ओं ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धीचतुःशताष्टपंचाशज्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यम्।

अडिल्ल—उर्ध्वलोक के मांहि भवन जिन जानिये।
लाख चौरासी सहस सत्यानव मानिये॥
तापै धरि तेईस जजौं सिर नायकैं।
कंचन थाल मंझार जलादिक लायकैं॥

ओं ह्रीं ऊर्ध्वलोकसम्बन्धिचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशतिश्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यम् नि० स्वाहा।

गीता छन्द—वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर सहससत्यानवे मानिये,
शत चारपै गिनले इक्यासी भवन जिनवर जानिये।
तिहुंलोक भीतर शास्वते सुरअसुर नर पूजा करैं,
तिन भवन को हम अर्घ लेकैं पूजि हैं भव दुःख हरैं॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धी ८५६९७४८१ श्रीअकृत्रिमजिनालयेभ्योपूर्णार्घ्यम्।

अथ जयमाला—दोहा

अब बरणों जयमालिका सुनो भव्य चितलाय।
जिन मन्दिर तिहुंलोक के देहुं सकल दरशाय॥१॥

पद्धरि छन्द—जय अमल अनादि अनन्त जान, अनिमित जु अकीर्तम अचलमान, जय अजय अखण्ड अरूपधार, षड्द्रव्य नहीं दीसै लगार ॥२॥ जयनिराकार अविकार होय, राजत अनन्त परदेश सोय, जय शुद्ध सुगुण अवगाहपाय, दशदिशा मांहि इहं विधि लखाय ॥३॥ यह भेद अलोकाकाश जान, तामध्य लोक नभतीन मान, स्वयमेव बन्यौ अविचल अनन्त, अविनाशि अनादि जु कहत सन्त ॥४॥ पुरुषाकार ठाड़ो निहार, कटि हाथ धारि द्वै पग पसार, दच्छिण उत्तर दिशि सर्व ठौर, राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥ जय पूर्वअपर दिशि घाट बाधि, सुन कथन कहूँ ताको जु साधि, लखिश्वभ्रतलें राजू जु सात, मधिलोक एक राजू कहात ॥६॥ फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच। भू सिद्ध एक राजू जु सांच, दशचार ऊंच राजू गिनाय, षड्द्रव्य लये चतुकोन पाय ॥७॥ तसु बात बलय लपटाय तीन इह निराधार लखियो प्रवीन त्रसनाड़ी तामध जान खास चतुकौन एक राजू जु व्यास ॥८॥ राजू उतङ्ग चौदह प्रमान, लखि स्वयं सिद्धरचना महान, तामध्य जीव त्रस आदि देय, निजथान पाय तिष्ठे भलेय ॥९॥ लखि अधोभाग मैं श्वभ्रथान, गिन सात कहे आगम प्रमान, षट् थानमांहि नारकि बसेय, इक श्वभ्रभाग करि तीन भेय ॥१०॥ तसु अधोभाग नारकि रहाय, फिर ऊर्ध्वभाग द्वय थान पाय, बस रहे भवन व्यंतर जु देव, पुर हर्म्य छजै रचनास्वमेव ॥११॥ तिह थान गेह जिनराज भाख, गिन सात कोटि बहत्तर जु लाख, ते भवन नमों मनवचनकाय, गति श्वभ्रहरन हारे लखाय ॥१२॥

पुनि मध्य लोक गोला अकार, लखि दीप उदधि रचना विचार,
गिन असंख्यात भाखे जु संत, लखिस्वयंभुरमनसबके जु अन्त ॥१३॥
इक राजुव्यास में सर्व जान, मधि लोक तनो यह कथन मान,
सब मध्यदीप जम्बू गनेय त्रयदशम रुचकवर नामलेय ॥१४॥
इन तेरह में जिन धाम जान, शतचार अठावन हैं प्रमान,
खगदेव असुर नर आय आय, पद पूज जांय शिर नाय नाय ॥१५॥
जय ऊर्ध्वलोकसुर कल्पवास, तिहथान छजै जिन भवन खास,
जय लाख चौरासी पै लखेय, जय सहससत्यानव और ठेय ॥१६॥
जय वीसतीनपुनि जोड़ देय, जिन भवन अकीर्तम जान लेय,
प्रतिभवन एक रचना कहाय, जिन बिम्ब एकशत आठ पाय ॥१७॥
शतपञ्च धनुष उन्नत लसाय, पद्मासनजुत वर ध्यान लाय,
शिर तीन छत्र शोभितविशाल, त्रयपादपीठ मणिजड़ितलाल ॥१८॥
भामण्डल की छवि कौन गाय, पुनि चंवर ढुरत चौंसठि लखाय,
जय दुन्दुभिरव अद्भुत सुनाय, जय पुष्प वृष्टि गंधोदकाय ॥१९॥
जय तरु अशोक शोभा भलेय, मंगलविभूति राजत अनेय,
घटतूप छजे मणिलाल पाय, घट धूम्रधूम्र दिग् सर्व छाय ॥२०॥
जय केतु पंक्ति सोहै महान, गंधर्व देव गुन करत गान,
सुरजनम लेत लखिअवधिपाय, तिसथान प्रथमपूजन कराय ॥२१॥
जिन गेहतणा वरनन अपार, हम तुच्छ बुद्धि किम लहत पार,
जय देव जिनेसुर जगत भूप, नमि 'नेमि' मंगै निज देहुरूप ॥२२॥

दोहा—तीन लोक में सास्वते, श्रीजिन भवन विचार,
मनवचतन करि शुद्धता, पूजों अरघ उतार ॥२३॥

ओं ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धी ८५६९७४८१ अकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं ।

तिहुं जग भीतर श्रीजिन मन्दिर, बने अकीर्तम अति सुखदाय,
नर सुर खगकरि वंदनीक जे, तिनको भविजन पाठ कराय,
धनधान्यादिक सम्पति तिनके, पुत्र पौत्र सुख होत भलाय,
चक्रीसुर खग इन्द्र होयके, करम नाश शिवपुर सुखपाय ॥२४॥

इत्याशीर्वादः । इति अकृत्रिमजिन चैत्यालय पूजा ।

अथ सिद्धपूजा भावाष्टक व अंचलिका सहित ।

स्थापना—ऊर्ध्वाधो रयुतं सबिन्दुसपरंब्रह्मस्वरावेष्टितं,
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।
अन्तः पत्रतटेऽनाहतयुतं ह्रींकारसंवेष्टितं,
देवंध्यायति यः स मुक्तिसुभगोवैरीभकण्ठीरवः ।

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन् !
अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयं,
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ।

इति सिद्धयन्त्र स्थापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सिद्धौनिवासमनुगं परमात्मगम्यंहान्यादिभावरहितंभववीतकायं,
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां नीरैर्यजेकलशगैर्वरसिद्धचक्रं ।

निजमनोमणिभाजनभारया, समरसैक सुधारसधारया,
सकलबोधकलारमणीयकं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—देत तृषा दुःख मोह सो तुमने जीती प्रभू,
जलसों पूजों मैं तोह मेरो रोग मिटाइयो (निवारियो)

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तं, सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीजम्,
सौरभ्यवासितभुवं हरिचंदनानां गंधैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ।
सहजकर्मकलङ्कविनाशनै, रमलभावसुभापितचंदनैः,
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—हम भव आतापन माह तुम न्यारे संसारसों,
कीजे शीतल छांह, चन्दन से पूजा करों । चन्दनम्

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठ, सिद्धं स्वरूपनिपुणंकमलंविशालं,
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानां, पुञ्जैर्यजेशशिनिभैर्वरसिद्धचक्रं,
सह

नित्यं स्वदेह परिमाण मनादिसंज्ञ द्रव्यानपेक्ष ममृतं मरणाद्यतीतम्,
अनु
मंदार कुंद कमलादि वनस्पतीनां पुष्पैर्यजे शुभ तमैर्वरसिद्ध चक्रम् ॥
सोरठ
समय सार सुपुष्प सुमालया सहज कर्म करेण विशोधया ।
परमयोग बलेन वशीकृतं सहज सिद्ध महं परिपूजये ॥
ऊर्ध्व
सोरठा— काम अग्नितन मोहि, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
वीर
फूल चढ़ाऊं मैं तोहि, सेवक की बाधा हरो ॥ पुष्पं ॥

अकृतबोधसुदिव्यनवद्यक, विाहत जन्मजरामरणान्तकः,
निरवधि प्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—हमें क्षुधा दुःख भूरि ज्ञान खड्ग कर तुम हती,
मेरी भव बाधा चूरि, नेवज से पूजा करों ॥नैवेद्यम्॥

अतंक शोक भयरोगमदप्रशान्त निर्द्वन्द्वभावधरणंमहिमानिवेशम्,
कर्पूरवर्तिबहुभिःकनकावदातै, र्दीपैर्यजेरुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम्,
सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः, रुचिविभूतितमः प्रविनाशनैः,
निरवधिस्वविकाशप्रकाशनं, सहज सिद्धमहं परिपूजये ।

सोरठा—मोह तिमिर हम पास, तुम चेतन मह ज्योति हो ।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तिमिर निवारियो ॥दीपं॥

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितान्तं, त्रैकाल्यवस्तुविषयेनिबिडप्रदीपम्,
सद्द्रव्यगन्धघनसारविनिश्रितानां, धूपैर्यजेपरिमलैर्वरसिद्धचक्रम्,

सोरठा—सकल कर्मवन जाल, मुक्तिमांहि सब सुख करें,
खेऊं धूप रसाल, ममतकार बन जारियो ॥ धूपम् ॥

१० वां पांचके के बाद यह धूप का पाठ पढ़िये:—
निज गुणाक्षय रूप सुधूपनैः स्वगुण घाति मल प्रविनाशनैः ।
विशद बोध सुदीर्घ सुखात्मकं सहजसिद्ध महं परिपूजये ॥

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै, र्ध्येयं शिवंसकल भव्यजनैःसुवंद्यम्
नारिंगपूगकदलीफलनारिकेलैः, सोऽहंयजेवरफलैर्वरसिद्धचक्रम्,
परम भाव फलावलि सम्पदा, सहजभावकुभावविशोधया,
निजगुणास्फुरणात्म निरञ्जनं, सहजसिद्धमहंपरिपूजये ।

सोरठा—अन्तराय दुःखटार, तुम अनन्त थिरता लही,
पूजों फल धरसार विघनटार शिवसुख करो ॥फलम्॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रतगणैः संगंवरम् चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरु दीपकम्,
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानांयुगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितम्,

नेत्रोन्मीलिविकाशभावनिवहैरत्यंतबोधावर्वे,
वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः,
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरम, ज्ञानात्मकैरर्चयेत्,
सिद्धं स्वादुमगाधबोधमचलं संचर्चयामो वयम् ।

सोरठा—हम मैं आठों दोष, भजो अर्घले सिद्ध जी,
दीजे वसुगुण मोष, कर जोड़ें द्यानत खड़े ।

चार ज्ञान धर ना लखे हम देखे सरधावन्त,
जाने माने अनुभवे, तुम राखो पास महन्त ।
आज हमारे आनन्द हैं, मैं पूजों आठों द्रव्य सें,
तुम सिद्ध महा सुखदाय, आठों कर्म विनाश कें ।
लहि आठ सुगुण समुदाय, आज हमारे आनन्द हैं,
हम पाये मङ्गलचार, एही उत्तम लोक में ।
इनही को शरणाधार आज हमारे आनन्द हैं,
स्वामी आनन्द दौलतराम के, मोहि भव भव होहु सहाय ।
आज हमारे आनन्द हैं ।। अर्घ्यम् ।।

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्मं स्वभावपरमं यदनन्तवीर्यम्
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यवीजं वन्दे सदा निरुपमंवरसिद्धचक्रम्
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतयेसिद्धपरमेष्ठिनेमहार्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा ।

अथजयमाला ।

त्रैलोक्येश्वरवन्दनीयचरणाः, प्रापुः श्रियंशाश्वतीम्,
यानाराध्य निरुद्धचण्डमनसः, सन्तोऽपि तीर्थंकराः ।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाव्याबाधताद्यैर्गुणैः,
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं, सिद्धान् विशुद्धो दयान् ।

विराग सनातन शांत निरंश निरामय निर्भय निर्मल हंस,
सुधाम विबोध निधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥१
विदूरितसंसृतिभाव निरङ्ग, समामृतपूरितदेव विसङ्ग ।
अबन्धकषायविहीनविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥२
निवारित दुष्कृतकर्मविपास, सदामल केवल केलि निवास,
भवोदधिपारग शांत विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥३
अनन्तसुखामृतसागर धीर, कलङ्क रजो मल भूरिसमीर,
विखण्डितकामविराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४
विकार विवर्जित तर्जितशोक, विबोध सुनेत्रविलोकितलोक,
विहार विराववरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥५
रजोमलखेद विमुक्त विगात्र, निरन्तर नित्य सुखामृत पात्र,
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥६
नरामरवंदित निर्मल भाव, अनन्त मुनीश्वर पूज्य विहाव,
सदोदय विश्व महेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥७
विदम्भ वितृष्ण विदोह विनिद्र, परापरसङ्कर सारवितन्द्र,
विकोप विरूपविशङ्क विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥८
जरामरणोज्झित वीत विहार, विचिन्तित निर्मल निरहङ्कार,
अचिन्त्यचरित्र विदर्पविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध समूह ॥९
विवर्ण विगन्ध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्दविशोभ
अनाकुल केवल सार्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०

घत्ता—असमयसमयसारं चारु चैतन्यचिह्नं परपरणतिमुक्तं पद्म
नंदीन्द्रवंद्यं, निखिलगुणनिकेतम् सिद्धचक्रं विशुद्धं स्मरति

नमतियोवास्तौतिसोऽभ्येति मुक्तिम् ॥ महार्घ्यम् ॥

अडिल्ल छन्द—अविनाशी अविकार परमरस धामहो, समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो। शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो, जगत शिरोमणि सिद्ध सदा अयवन्त हो। ध्यान अगनिकर कर्म कलङ्क सबै दहे, नित्य निरञ्जन देव सरूपी है रहे। ज्ञायक ज्ञेयाकार ममत्वनिवारकैं, सो परमातम सिद्ध नमू सिर नायकें।

दोहा—अविचल ज्ञान प्रकाशवें, गुण अनन्त की खान।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥
इत्याशीर्वादः ॥ पुष्पम् ॥

मत्तगयन्द छन्द

ध्यानहुताशन में अरि ईंधन झोंक दियो रिपु रोक निवारी,
शोक हरो भविलोकन को वर केवल ज्ञान मयूख उघारी।
लोक अलोक विलोक भये शिव जन्मजरामृत पङ्क पखारी,
सिद्धनथोक बसैं शिवलोक तिन्हें पगधोक त्रिकाल हमारी ॥
तीरथनाथ प्रणाम करें तिनके, गुणवर्णन में बुध हारी
मोम गयो गलि मूसमंझार रह्यो तहं व्योम तदाकृति धारी।
लोक गहीर नदी पति नीर, गये तिर तीर भये अविकारी,
सिद्धनथोक बसैं शिवलोक तिन्हें पगधोक त्रिकाल हमारी ॥

इति सिद्ध पूजा।

(पूजा के अन्त में यह समुच्चय अर्घ चढ़ाकर शांति पाठ पढ़ना चाहिये)

उदक चन्दन तन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवल मङ्गलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहंयजे ॥

ओं ह्रीं भगवज्जिनसहस्राष्टनामदेवशास्त्रगुरुसमूह, विद्यमानविंशति तीर्थंकर, कृत्रिमाकृत्रिम जिन बिम्ब, सिद्धपरमेष्ठी,पंचपरमेष्ठी, चतुर्विंशतितीर्थंकर, सर्वनिर्वाणक्षेत्र, सर्व अतिशय क्षेत्र, सर्वक्षेत्र सप्तऋषि, प्रथमानुयोग, करणानुयोगचरणानुयोगादि द्वादशांग तत्त्वार्थसूत्रादिमहाशास्त्र,रत्नत्रय,पंचमेरु,दशलक्षण,षोड़सकारणनन्दीश्वरेत्यादि सर्वव्रत-विधान, गोम्मटस्वामी, शान्ति सागराद्याचार्य इत्यादि सर्वेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं नि०

अथ रविव्रत पूजा

स्थापना—अडिल्ल छन्द

यह भविजन हितकार सु रविव्रत जिन कही।
करहु भव्यजन सर्व सुमन देकें सही॥
पूजों पार्श्व जिनेन्द्र त्रियोग लगायकें।
मिटै सकल सन्ताप मिलै निधि आयकें॥
मति सागर इक सेठ सुग्रन्थन में कही।
उन्हीं ने यह पूजा कर आनन्द लही॥
तातें रविव्रतसार सो भविजन कीजिये।
सुख सम्पति सन्तान अतुल निधि लीजिये॥

दोहा—प्रणमो पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ शिरनाय।
पर भव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय॥
ऐतवार व्रत के दिना, एही पूजन ठान।
ता फल सम्पति को लहैं, निश्चय लीजे मान॥

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् ।

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक

उज्वल जल भरकें अतिलायो रतन कटोरन मांहीं ।
धार देत अति हर्ष बढ़ावत जन्म जरा मिट जांहीं ॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत के दिन भाई ।
सुख सम्पति बहु होय तुरत ही आनन्द मंगलदाई ॥

ओं ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् ।

मलयागिरि केशर अति सुन्दर कुम कुम रङ्ग बनाई, धार देत जिन चरनन आगेभव आतापनशाई ॥ पारस०,पारसनाथ, चन्दनम्

मोती सम अति उज्वल तन्दुल लावो नीर परवारो, अक्षय पद के हेतु भाव सों श्रीजिनवर ढिग धारो ॥ पारस०, अक्षतान्,

वेला अरु मचकुन्द चमेली पारिजात के ल्यावो, चुन चुन श्रीजिन अग्र चढ़ाऊं मनवांछित फल पावो ॥ पारस०, पुष्पम् ।

बावरफैनी गोजा आदिक घृत में लेत पकाई, कंचन थार मनोहर भर के चरनन देत चढ़ाई ॥ पारस०, नैवेद्यम् ।

मणिमय दीप रतन मय लेकर जगमग जोति जगाई, जिनके आगे आरति करके मोहतिमिर नश जाई ॥ पारस०, दीपम् ।

चूरनकर मलयागिर चन्दन धूप दशांग बनाई, तटपावक में खेयभावसों कर्मनाश हो जाई ॥ पारस०, धूपम् ।

श्रीफल आदि बदाम सुपारी भांति भांति के लावो, श्रीजिन चरन चढ़ाय हरषकर तातें शिवफल पावो ॥ पारस०, फलम् ।

जल गंधोदिक अष्ट द्रव्य ले अर्घ बनावो भाई, नाचत गावत हर्ष भाव सों कंचनथार भराई ॥ पारस०, अर्घ्य ।

गीतका छन्द

मन वचन काय त्रिशुद्ध करके पार्श्वनाथ सुपूजिये,
जल आदि अर्घ बनाय भविजन भक्तिवन्त सुहूजिये,
पूज्य पारसनाथ जिनवर सकल सुखदातार जी,
जे करत हैं नर नारि पूजा लहत सुख अपार जी ॥ पूर्णार्घ्यं ।

अथ जयमाला—दोहा

यह जग में विख्यात हैं, पारसनाथ महान ।
जिन गुण की जयमालिका, भाषा करों बखान ॥

पद्धरि छन्द—

जय जय प्रणमों श्रीपार्श्व देव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव,
जय जय सु बनारस जन्मलीन, तिहुंलोक विषै उद्योतकीन ॥१
जय जिनके पितु श्रीविश्वसैन, तिनके घर भये सुखचैन ऐन,
जय वामा देवी माय जान, तिनके उपजे पारस महान ॥२
जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भये ऐन,
जय जिनने प्रभु का शरन लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ॥३
जय नाग नागनी भये अधीन, प्रभु चरणन लाग रहे प्रवीन,
तजि के सो देह स्वर्गे सु जाय, धरणेन्द्र पद्मावति भये आय ४॥
जय चोर अञ्जना अधम जान, चोरी तज प्रभु को धरो ध्यान,
जय मृत्यु भये स्वर्गे सु जाय, ऋद्धि अनेक उनने सो पाय ॥५
जय मति सागर इक सेठ जान, जिन रविव्रत पूजा करी ठान,
तिनके सुत थे परदेश मांहि, जिन अशुभ कर्म काटे सुताहि ॥६

जय रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फल कर सब से भई भेंट,
जिन जिन ने प्रभुका शरन लीन, तिन रिद्धिसिद्धि पाई नवीन ॥७
जे रविव्रत पूजा करहिं जेय, ते सुख अनन्तानन्त लेय,
धरणेन्द्र पद्मावति हुय सहाय, प्रभु भक्त जान तत्काल आय ॥८
पूजा विधान इहि विधि रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय,
जो भक्तिभाव जयमाल गाय, सोही सुख सम्पति अतुल पाय ॥९
बाजत मृदङ्ग बीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार,
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सो लेत ॥१०
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घुंघरू बजाय,
जे करहिं निरत इहि भांत भांत, ते लहहिं सुक्ख शिवपुर सुजात ॥११

दोहा—रविव्रत पूजा पार्श्व की, करै भविक जन कोय।
सुख सम्पत इह भवलहै तुरत सुरग पद होय॥ अर्घ्यं

अडिल्ल—रविव्रत पार्श्वजिनेन्द्र पूज्य भव मन धरें,
भव भव के आताप सकल छिन में टरें।
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पदवी लहैं,
सुख सम्पति सन्तान अटल लक्ष्मी रहै।
फेर सर्व विधि पाय भक्ति प्रभु अनुसरें,
नानाविधि सुख भोग बहुरि शिवत्रिय वरें॥ इत्याशीर्वादः

इति रविव्रतपूजा।

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

स्थापना

अडिल्ल—विष्णुकुमार महामुनि को ऋद्धि भई।
नाम विक्रिया तासु सकल आनन्द ठई॥
सो मुनि आये हथिनापुर के बीच में।
मुनि बचाये रक्षाकर वन बीच में॥ १
तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो।
जिमि चिन्तामणि रत्न रंक पायो मनो॥
सब पुर जयजयकार शब्द उचरत भये।
मुनि को देय अहार आप करते भये॥ २

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमार महामुने! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक—चाल—सोलहकारण पूजा की।

गङ्गाजल सम उज्ज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर,
दयानिधि होय, जय जग बन्धु दयानिधि होय।
सप्त सैकड़ा मुनिवरजान, रक्षा करी विष्णु[१] भगवान्,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दया निधि होय।

ओं ह्रीं श्रीविष्णुकुमार महामुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्०।

मलयागिर चन्दन शुभ सार, पूजों श्रीगुरुवर निरधार,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु०, सप्तसैकड़ा०, चन्दनम्

१ विष्णुकुमार भगवान् अर्थात् विष्णुकुमार महामुनि।

श्वेत अखण्डित अक्षत लाय, पूजों श्रीमुनिवर के पांय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, अक्षतान् ।
कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो कामबाण दुखदाय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, पुष्पं ।
लाडू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरण चढ़ाय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा, नैवेद्यम् ।
घृत कपूर का दीपक जोय, मोह तिमिर सब जावे खोय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, दीपम् ।
अगर कपूर सुधूप बनाय, जारैं अष्ट कर्म दुखदाय,
दयानिधि होय, जय जग०, सप्त सैकड़ा०, धूपम् ।
लौंग इलायची श्रीफल सार, पूजों श्रीमुनि सुखदातार,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय । फलम्
जल फल आठों द्रव्य संजोय, श्रीमुनिवर पद पूजों होय,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय ।
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु गुणखान,
दयानिधि होय, जय जगबन्धु दयानिधि होय । अर्घ्यं

अथ जयमाला ।

दोहा—श्रावण सुदी सुपूर्णिमा, मुनि रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान ॥ १

चाल-छन्द-भुजङ्ग प्रयात ।

श्री विष्णु देवा करूं चर्ण सेवा,
हरो जग की बाधा सुनो टेर देवा,

गजपुर पधारे महा सुख कारी,
धरो रूप वामन सु मन में विचारी ॥ २
गये पास बलि के हुवा वो प्रसन्ना,
जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना,
मुनि तीन डग मांगी धरनी सु तापै,
दइ तीन ततछन सु नहि ढील थापै ॥३
कर विक्रिया मुनि सुकाया बढ़ाई,
जगह सारी लेली सु डग दो के मांहीं,
धरी तीसरी डग बली पीठ मांहीं,
सु मांगी छमा तब बली ने बनाई ॥ ४
जल की सु वृष्टि करी सुक्खकारी,
सर्व अग्नि छण में भइ भस्म सारी,
टरे सर्व उपसर्ग श्री विष्णुजी से,
भइ जय जय कारा सर्व-जग ही से ॥ ५

चौपाई छन्द

फिर राजा के हुक्म प्रमान, रछा बन्धन बंधी सुजान,
मुनिवर घर घर किये विहार, श्रावक जन तिन दियो अहार ॥६
जा घर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सु लोय,
स्थापन कर तिन दियो अहार, फिर सब भोजन कियो सम्हार ॥७
तब से नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्योहार,
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म बढ़े सु अतीव ॥८

धर्म पदारथ जग में सार, धर्म बिना झूंठो संसार,
सावन सुदि पूनम जब होय, यह दो पूजन कीजें लोय ॥६
सब भाइन को दो समझाय, रक्षा बन्धन कथा सुनाय,
मुनि का निज घर कियो अकार, मुनि समान तिन देहु अहार ॥१०
सब के रक्षा बन्धन बांध, जैन मुनिन की रक्षा साध,
इस विधि से मानों त्योहार, नाम सलूना है संसार ॥११

पद्धरि छन्द

यह पूजन अब रचे न कोय, यदि रचे तो देखे न कोय,
यासे यह पूजन रचे सार, हो भूल चूक लीनो सम्हार ॥१२
श्री विष्णु गुरु के चर्ण दोय, 'रघु सुत बाबू' वंदे संजोय,
नगलै स्वरूपवासी जु दास, मुनि चर्ण सेवकी करत आश ॥१३
घत्ता—मुनि दीनदयाला, सब दुख टाला, आनंदमाला दुःखहारी,
रघुसुत नित वंदै, आनंद कंदै, सुखवासंदै हितकारी ॥१४॥ महार्घ्यं।
दोहा—विष्णुकुमार मुनि चरण कों, जो पूजे धर प्रीत।
रघुसुत पावै स्वर्ग पद, लहै पुन्य नवनीत ॥ इत्याशीर्वादः

इति श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा।

श्री अकंपनाचार्यादि सात सौ मुनि पूजा

स्थापना—अडिल्ल छन्द

श्री अकम्पन मुनि आदि सब सात सै,
कर विहार हथिनापुर आये सात सै,

तहां भयो उपसर्ग बड़ो दुःखकार जू,
शांत भाव से सहन कियो मुनिराज जू ॥ १
मिती जु पन्द्रस सावन शुकल प्रमानिये,
ध्यानारूढ़ सुतिष्ट सर्व मुनि मानिये,
हुओ उपसर्ग जु दूर धन्य घड़ी आज जी,
तिन प्रति शीश नवाय पूज मुनिराज जी ॥ २
तिन की पूजा रचूं भाव अरु भक्ति से,
दिवस सलूना भयो इसी यह युक्ति से,
आह्वाहन स्थापन सन्निधिकरण जी,
तिष्ठ गुरु इत आय करूं पद सेव जी ॥ ३

ओं ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि सप्तशत मुनि समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट्- आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं स्थापनम् ।

अथाष्टक—चाल जोगीरासाकी ।

शीतल प्रासुक उज्ज्वल जल ले कंचन भारी लाऊं,
जन्म जरामृत नाश करन को, तुमरे चरण चढ़ाऊं,
श्रीअकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सै जानो,
तिनकी पूज रचूं सुखकारी भव भव के अघहानो।

ओं ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत महामुनिभ्यो जन्म जरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर मिश्रित करके नीको चन्दन लाऊं,
भव आताप जु दूर करन को गुरु के चर्ण चढ़ाऊं ॥ ओं०, चन्दनम्

चन्द्रकिरणसम उज्ज्वल अक्षत भाव भक्ति से लीने,
पुञ्ज मनोहर श्रीगुरु सन्मुख सरधाकर जु करीने ॥ श्री०, अक्षतान्
बेल चमेली श्रीगुलाब के ताजे पुष्प सु लाऊं,
काम बाण के नाश करन को श्री गुरु चरण चढ़ाऊं ॥ श्री० पुष्पम्
गूझा फेनी मोदक लाड्डू ताजे तुरत बनाऊं,
श्री गुरुवर के चरण चढ़ाकर हर्ष हर्ष गुणगाऊं ॥ श्री०, नैवेद्यम्
घृत कपूर की उत्तम जोति सु स्वर्ण कटोरी धारूं,
श्री मुनिवर की करूं आरती मोह कर्म को जारूं ॥ श्री०, दीपम्
धूप सुगन्ध सुवासित लेकर धूपायन में खेऊं,
अष्ट कर्म के नाश करन को आनन्द मङ्गल देऊं ॥ श्री०, धूपम्
लौंग इलायची श्रीफल पिस्ता अरु बादाम मंगाऊं,
सेव सन्तरा खट्टा मिट्ठा श्री गुरु चरण चढ़ाऊं ॥ श्री०, फलम्
जल फल आठों द्रव्य मिलाकर भाव भक्ति से लाया,
हे गुरु हमको भव से तारो तातें चरण चढ़ाया ॥ श्री०, अर्घ्यं

अथ जयमाला

दोहा—अकम्पन मुनि आदि सब, सप्त सैकड़ा जान,
तिनकी यह जयमाल सुन, भाषा करूं बखान ॥१

चौपाई छन्द

जीव दया पालें गुरु स्वामी, दें धर्मोपदेश बहु नामी,
छहों काम की रक्षा पालें, तप कर आठ कर्म को टालें ॥२
झूंठ न रंच मात्र मुख बोलें, जो मन होय वचन सो खोलें,
महासत्यव्रत के मुनिधारी, तिनके पायन धोक हमारी ॥३

तृण जल भी अदत्त नहीं लेवें, धन कंचन सम तृण समझें वे,
महा अचौर्य व्रत के गुरु धारी, तिनके पायन धोक हमारी ॥४
अठारह सहस शील के भेदा, निर्भेद धारत हो सु अखेदा,
शील महाव्रत के मुनिधारी, तिनके पायन धोक हमारी ॥५
चौविस भेद परिग्रह गाये, सर्व त्याग वनवास कराये,
परिग्रह त्याग महाव्रत धारी, तिनके पायन धोक हमार ॥६

पद्धरि छन्द

सु भावत बारह भावन चित्त, विचारत धर्म सदा सुपवित्त।
जय ग्यारह अङ्ग सु पढ़त पाठ, संसार भोग का त्याग ठाठ॥७
पंचेन्द्रिय दमन करें महान, मन वचन कायकर शुद्ध ध्यान।
जय मुनिवर वन्दूं शान्ति चित्त, संसार देह भोगनि विरत्त॥८
जय मौन धार मुनि तप करन्त, तब कर्म काठ सब ही जरन्त,
जय आनन्द कन्द विधान रूप, जय ध्यावत गुरु आतम स्वरूप॥९
संसार कष्ट काटौ मुनिन्द्र, तुम चरणन में सब देव इन्द्र,
जय मुनिवर वन्दूं कर्म काट, शिव नारि वरण का करत ठाट॥१०
मैं अल्पमती अज्ञान बुद्धि, प्रभु क्षमा करो जो हो अशुद्ध,
रघुवर सुत वन्दत शीस नाय, श्री गुरु के गुण गाये बनाय॥११
घत्ता—मुनि सब गुण धारं, जग उपकारं, कर भवपारं सुखकारं,
कर कर्म जु नाशा, आतम शासा, सुख परकाशा दातारं॥१२महार्घ्यं
दोहा—भक्ति भाव मन लाय कर, पूजे वांचे जोय।
बाबूलाल सु स्वर्ग पद, निश्चय ताको होय॥ इत्याशीर्वादः

समाप्तोयं पूजा।

अथ बाहुबली गोम्मट स्वामी पूजा

स्थापना—अडिल्ल छन्द ।

आदीश्वर के द्वितीय पुत्र बाहूबली ।
कामदेव भये प्रथम श्री बाहूबली ॥
नयेन मस्तक युद्ध कियो बाहूबली ।
चक्री अरु विधि जीत जजूं बाहूबली ॥

ओं ह्रीं श्रीबाहुबली स्वामिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं ।

अष्टक—छन्द ।

पंचम उदधितनो जल लेकर, कंचन झारी मांहि भरूं।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, बाहू बलि पद धार करूं ॥१

ओं ह्रीं श्रीमद्बाहूबलि स्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

केशर सङ्ग घिसूं मलयागिर, चन्दन अधिक सुगन्ध रचूं ।
भव आताप विनाशन कारन, श्री बाहुबलि पद चरचूं ॥२ चंदनं

उज्ज्वल मुक्ताफल सम तंदुल, धोकर कन्चन थाल भरूं ।
अक्षय पदके हेतु विनय से, बाहूबलि ढिग पुञ्ज धरूं ॥३ अक्षतान्

कमल केतकी चम्प चमेली, सुमन सुगंधित लाय धरूं ।
मदनवान निरवारन कारन, बाहूबलि को भेंट धरूं ॥ ४ पुष्पम्

नाना विधि पकवान मनोहर, खाजे ताजे षट्रस मय ।
क्षुधा रोग विध्वंस करन को, जजूं बाहूबलि चरण उभय ॥५ नैवेद्यं

सजों दीप घृत वा कपूर का, जासों दशदिक तम भागे।
नाशन अन्तर तम को आरति, करूं बाहुबलि प्रभु आगे ॥६ दीपम्
अगर तगर कर्पूर धूप दश, अङ्गी अगनी में खेऊं।
दुष्ट अष्ट विधि नष्ट करन को, श्री बाहूबलि पद सेऊं ॥७ धूपम्
आम अनार जाम नारङ्गी, पुङ्गी खारक श्रीफल को।
मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पण करूं बाहुबलि को ॥८ फलम्
ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेम थाल भर के लाऊं।
पद अनर्घ के प्राप्ति हेतु मैं, श्री बाहूबलि गुण गाऊं ॥ ९ अर्घ्यं

जयमाला

दोहा—बाहूबलि निज बाहुबल, हरे शत्रु बलवान।
जये नये नहिं सिद्ध भये, पोदनपुर उद्यान ॥१

पद्धरि छन्द

श्री आदीश्वर के सुत सुजान, हैं प्रथम भरत चक्री महान,
दूजे बाहूबलि बल अपार, पुनि एक ऊन शत हैं कुमार ॥२
सब ही हैं चर्म शरीर सोय, सब ही पहुंचे शिव कर्म खोय,
तिन में बाहूबलि द्वितीय पुत्र, रतिपति तिनको सुनिये चरित्र ॥३
जब ऋषभ ऋषिपद धरो सार, तब राजभाग कीने विचार,
अरु दिये यथाविधि नृपन दान, सब करें प्रजा पालन सुजान ॥४
तिन में श्री बाहूबलि कुमार, पायो पोदनपुर राज्य सार,
अरु भरत अवधपुर भये नरेश, सुख भोगे बहुविधि ही सुरेश ॥५
जब उदय चक्रि पद भयो आय, षट्खंड साधने गये भरतराय,
अरु किये बहुत नृप निजाधीन, फिर लौटे रजधानी प्रवीन ॥६

पर चक्रकरो नहिं पुर प्रवेश, तब निमिती भाख्यो सुन नरेश,
तुम भ्रात पोदनपुर नरेन्द्र, नहिं आज्ञा माने तुम्भ नृपेन्द्र ॥७
सुन भरत तबहिं पाती लिखाय, पोदनपुर दूत दियो पठाय,
आ नमों भेंट युत विनयधार, या हो जावो रण को तयार ॥८
वैसांदर जिमि घृत परे आय, तिमि कोपो भुजवलि पत्र पाय,
फिर फाड़ पत्र कहे सुनहु दूत, हम और भरत द्वय ऋषभपूत ॥९
हम भोगें पितु को दियो राज, भरतहि शिर नावें कौन काज,
यदि भरत अधिक कर है गरूर, तो करहों रण में चूर चूर ॥१०
सुनि भग्यो दूत गयो भरत पास, कह दीनों सब वृत्तान्त खास,
तब सजी सैन्य लख उभय ओर, मंत्री गण सोचे हिय बहोर ॥११
ये उभयबलो अरु चरम देह, लड़ व्यर्थ सैन्य को क्षय करेह,
इमि सोच गये वे नृपति पास, विनती सुनिये प्रभु करहिं दास ॥१२
तुम उभयबली अरु स्वयं बुद्ध, नहिं सैन्य मरे कीजै सुयुद्ध,
तब नेत्र१ मल्ल२ जल३ तीन युद्ध, कीने द्वय भ्रात स्वयंप्रबुद्ध ॥१३
तीनों में हारे भरत राय, तब कोपि चक्र दीनों चलाय,
सो चक्र करो नहिं गोत्र घात, चक्री इम सब विधि खाई मात ॥१४
यह देख चरित भुजवलि कुमार, उपजो हिय दृढ़ वैराग्य सार,
अरु त्याग राज तृणवत असार, कर क्षमा महाव्रत धरे सार ॥१५
तप एकासन कीनो महान, पर उपजो नहिं केवल सुज्ञान,
इक शल्य लग रही इह प्रकार, मैं खड़ा भरत पृथ्वी मंझार ॥१६
तब शल्य दूर की भरतराय, नहिं वसुधापति कोइ जग बनाय,
यह आदि अन्त बिन जग महान, बहुत भये हैं हैं मुझ समान ॥१७

इमि सुनत शल्य हनि घाति चार, उपजायो केवल ज्ञान सार,
फिर पोदनपुर के वन मंझार, पंचमगति लहि कर कर्म छार ॥१८
तिन प्रतिमा अतिशय युत अपार, है श्रवण बेल गोला मंझार,
गोम्मट स्वामी तिहिं कहत सोय, नहिं छाया ताकी पड़त कोय ॥१९
अरु तुङ्ग हाथ छब्बीस धार, निराधार खड़ी पर्वत मंझार,
यात्रा आवें वन्दन अपार, दर्शन कर पातक करें छार ॥२०
इत्यादि और अतिशय अपार, कथि 'दीपचंद' नहिं लहे पार, पूर्णार्घ्यं
घत्ता—सब विधि सुखकारी, महिमा भारी भुजबलि धारी अपरम्पार
सुन विनय हमारी, शिव सुखकारी, हे त्रिपुरारी, अचल अपार,
इत्याशीर्वादः। इति पूजा।

षोडषकारण पूजा

अडिल्ल—सोलहकारण पाय जे तीर्थंकर भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये ॥
पूजा कर निज धन्य लख्यौ बहु चाव सौं।
हमहू षोडषकारण भावैं भाव सौं ॥१

ओंह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडषकारणसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक छन्द

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजों जिनवर गुण गम्भीर,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु होय,

दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु होय, जय जय नाथ परम गुरु होय ॥१

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडषकारणेभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्रीजिनवर के पाय,
परम गुरु होय, जय जय०, दरश विशुद्धि० ॥ २ चन्दनम्
तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप पूजौं जिनवर तिहुंजग भूप,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश विशु० ॥ ३ अक्षतान्
फूल सुगन्ध मधुप गुञ्जार, पूजौं जिनवर जग आधार,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश विशु० ॥ ४ पुष्पम्
सद नेवज बहु विधि पकवान, पूजौं श्री जिनवर गुणखान,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश० ॥ ५ नैवेद्यम्
दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजौं श्री जिन केवल धार,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश० ॥ ६ दीपम्
अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय,
परम गुरु होय, जय जय नाथ, दरश० ॥ ७ धूपम्
श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजौं जिन वांछित दातार,
परम गुरु होय, जय जय नाथ, दरश० ॥ ८
जल फल आठों दरब चढ़ाय, धानतवरत करो मनलाय,
परम गुरु होय, जय जय नाथ०, दरश०, ॥ ९ अर्घ्यम्

जयमाला

दोहा—षोडषकारण गुण करै, हरै चतुर्गतिवास ।
पाप पुण्य सब नाश कै, ज्ञान भानु परकाश ॥१

चौपाई १६ मात्रा

दरश विशुद्धि धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महाधारै जो प्रानी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥२
शील सदा दिढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै ।
ज्ञानाभ्यास करै मनमांही, ताके मोह महातम नांही ॥३
जो संवेगभाव विस्तारै, सुरग मुकति पद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विशेषै, इह भव जस पर भव सुर देखै ॥४
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरै करम शिखर गुरुभाषा ।
साधु समाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै॥५
निशि दिन वैयावृत्त्य करैया, सो निहचै भवनीर तिरैया ।
जो अरहन्त भगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ॥६
जो आचारज भक्ति करै है, सो निर्मल आचार धरै है ।
बहुश्रुतवन्त भगति जो करई, सो नर संपूर्ण श्रुत धरई ॥ ७
प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानंद दाता,
षट् आवश्य काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै ॥ ८
धरम प्रभाव करै जे ज्ञानी, तिन शिवमारग रीति पिछानी ।
वत्सल अङ्ग सदा जो ध्यावे, सो तीर्थंकर पदवी पावै ॥ ९

दोहा—एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव इन्द्र नर वंद्यपद, 'द्यानत' शिवपद होय ॥१०

पूर्णार्घ्यं । इत्याशीर्वादः ।

पंचमेरु पूजा

गीता—छन्द ।

तीर्थंकरों के ह्नवनजलतैं भये तीरथ सर्वदा ।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगण पंचमेरन की सदा ॥
दो जलधि ढाई द्वीप मैं सब गनतमूल विराजही ।
पूजों असी जिन धाम प्रतिमा होहि सुख, दुःख भाजही ॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसंबंधि चैत्यालस्थ जिन प्रतिमा समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं स्थापनम् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथाष्टक चौपाई आंचलीबद्ध १५ मात्रा

शीतलमिष्ट सुवास मिलाय, जलसों पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाजी कों करौं प्रणाम,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधयशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जलं नि० स्वाहा ।

जल केशर करपूर मिलाय, गंध सों पूजों श्रीजिनराय,
महा सुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महासुख०, चंदनं
अमल अखण्ड सुगन्ध सुहाय, अक्षत सों पूजो श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, अक्षतान्
बरन अनेक रहे महकाय, फूलन सों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखेनाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, पुष्पम्

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, नैवेद्यम्
तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, दीपम्
खेऊं अगर परिमल अधिकाय, धूपसों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, धूपम्
सुरस सुवर्ण सुगन्ध सुभाय, फलसों पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, फलम्
आठ दरबमय अर्घ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम०, पांचों मेरु०, महा०, अर्घ्यं

अथ जयमाला—सोरठा

प्रथम सुदर्शन स्वाम, विजय अचल मन्दर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रगट ॥१

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै, चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वचतन कर वंदना हमारी, ॥२॥ ऊपर पांच शतक पर सोहै, नन्दनवन देखत मन मोहै, चैत्यालय ॥३॥ साढ़े बासठसहस ऊंचाई, वन सोमनस शोभै अधिकाई, चैत्यालय ॥४॥ ऊंचो योजन सहसछतीसं, पांडुकवन सोहै गिरिसीसं, चैत्यालय॥५॥ चारों मेरु समान बखानो, भूपर भद्रशाल चहुं जानो, चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन कर वन्दना हमारी ॥६॥ ऊंचे पांच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे, चैत्यालय सोलह ॥७॥

साढ़े पचपन सहस उतङ्गा, वन सौमनस चार बहुरङ्गा, चैत्यालय सोलह० ॥७॥ उच्च अठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये, चैत्यालय सोलह० ॥६॥ सुरनर चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किहिं मुख गावैं, चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन कर वन्दना हमारी ॥१०॥

दोहा—पंचमेरु की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय ॥११॥

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंध्य शीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा, इत्याशीर्वादः।

इति पंचमेरु पूजा

अथ दशलक्षण धर्म पूजा

अडिल्ल—उत्तम छमा मार्दव आर्जव भाव हैं,
सत्यशौच संयम तप त्याग उपाय हैं।
आकिन्चन ब्रह्मचर्य धर्म दश सार हैं,
चहुं गति दुःखतैं कादि मुकति करतार हैं॥

ओं ह्रीं उत्तम क्षमादि दश लक्षण धर्म समूह! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम, सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा—हेमाचलकी धार मुनि चित सम शीतल सुरभि।
भवआताप निवार दशलक्षण पूजों सदा॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश लक्षण धर्मेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०

चन्दन केशर गार होय सुवास दशों दिशा, भव आताप० ॥२ चंदनं

अमल अखंडित सार तन्दुल चन्द्र समान शुभ, भव आ० ॥३ अक्षतान्

फूल अनेक प्रकार महकें ऊरध लोकलों, भव आ० ॥ ४ पुष्पम्

नेवज विविध प्रकार उत्तम षट्रस संजुगत, भव आ० ॥५ नैवेद्यं

बाति कपूर सुधार दीपक जोति सुहावनी, भव आ० ॥ ६ दीपम्

अगर धू० विस्तार फैले सर्व सुगन्धता, भव आ० ॥ ७ धूपम्

फल की जाति अपार घ्राण नयन मनमोहने, भव आ० ॥ ८ फलम्

आठों दरब सम्हार 'द्यानत' अधिक उछाह सों, भव० ॥९ अर्घ्यं

अङ्गपूजा

सोरठा—पीड़ैं दुष्ट अनेक बांधमार बहुविधि करैं,
धरिये क्षमा विवेक कोप न कीजे प्रीतमा ॥१

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस परभव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो ॥
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बांध मार बहु विधि करै,
घरतैं निकारैं तन विदारैं, बैर जो न तहां धरै,
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा,
अति क्रोध अगनि बुझाय, प्रानी साम्य जल ले सीयरा।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय अर्घ्यं नि० स्वाहा।

मान महाविषरूप करहिं नीचगति जगत में,
कोमल सुधा अनूप सुख पावैं प्रानी सदा।

उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद मांहि तैं आया, दमरी रूंकन भाग विकाया॥
रूंकन विकाया भाग वशतैं, देव इक इन्द्री भया,
उत्तम मुवा चांडाल हुआ, भूप कीड़ों में गया,
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल बुदबुदा,
करि विनय बहु गुन बड़े जनकी, ज्ञानका पावे उदा।

ओं ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना वसै,
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु सम्पदा।

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी।
मन में है सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सों करिये॥
करिये सरल तिहुं जोग अपने देख निर्मल आरसी,
मुख करै जैसा लखै वैसा कपट प्रीति अंगारसी,
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि करमबन्ध विशेषता,
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै आपदा नहिं देखता।

ओं ह्रीं उत्तमार्जव धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

कठिन वचन मत बोल, पर निंदा अरु झूठ तज,
सांच जवाहर खोल सत्यवादी जग में सुखी,
उत्तम सत्यवरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे को दरब सब दीजिये,
मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा सांच गुन लख लीजिये,

ऊंचे सिंहासन बैठि वसु नृप धर्म का भूपति भया,
वच झूठ सेती नरक पहुंचा स्वर्ग में नारद गया।

ओं ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देह सौं।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में॥

उत्तम शौच सर्व जग जानो, लोभ पाप को बाप बखानो।
आशा पास महा दुःखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी॥

प्रानी सदा शुचि शील जप तप ज्ञान ध्यान प्रभावतैं,
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये अशुचि दोष स्वभावतैं,
ऊपर अमलमल भरयो भीतर कौन विधि घर शुचि कहैं,
बहु देह मैली सुगुन थैली शौच गुन साधू लहैं।

ओं ह्रीं उत्तमशौच धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

काय छहों प्रतिपाल पंचेन्द्री मन वश करो,
संजम रतन संभाल, विषयचोर बहु फिरतहैं।

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव भवके भाजैं अघ तेरे।
सुरग नरक पशु गति में नाहीं, आलस हरन करन सुखठांही॥

ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुणा धरो,
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वशि करो,
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जगकीच में,
इक घरी मत विसरो करो नित, आव जम मुख बीच में।

ओं ह्रीं उत्तम संयम-धर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।

तप चाहैं सुरराय करम शिखरको वज्र है,
द्वादश विधि सुखदाय क्यों न करै निज शकति सम।
उत्तम तप सब मांहि बखाना, करम शिखर को वज्र समाना।
बस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशु तन धारा॥
धारा मनुष्यतन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता,
श्रीजैनवानी तत्व ज्ञानी, भई विषय पयोगता,
अति महादुर्लभ त्याग विषय कषाय जो तप आदरै,
नरभव अनूपम कनक घरपर मणिमयी कलशाधरै।
ओं ह्रीं उत्तम तपोधर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा।
दानचार परकार चार संघ को दीजिये,
धन बिजुली उनहार नरभवलाहो लीजिये।
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै॥
दोनों संभारै कूप जल सम दरब घर में परनया,
निज हाथ दीजे साथ लीजे खाय खोया बह गया,
धनि साधु शास्त्र अभय दिवैया त्याग राग विरोधको,
बिन दान श्रावक साधु दोनों लहैं नाहीं बोध को।
ओं ह्रीं उत्तम त्यागधर्मांगायार्घ्यं निर्वपामीति०।
परिग्रह चौबिस भेद त्याग करैं मुनिराजजी,
तृष्णाभाव उछेद घटती जान घटाइये।
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुखही मानो।
फांस तनकसी तन में सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै॥

भालै न समता सुख कभी नर बिना मुनि मुद्रा धरैं,
धनि नगन पर तन नगन ठाढ़े सुर असुर पायनि परैं,
घरमाहिं तिसना जो घटावै रुचि नहीं संसार सौं,
बहुधन बुराहू भला कहिये लीन पर उपगार सौं।

ओं ह्रीं उत्तमाकिंचन्य धर्मांगायार्घ्यं ।

शीलबाढ़ि नौ राखि ब्रह्म भाव अन्तर लखो,
करि दोनों अभिलाख करहु सफल नर भव सदा।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ।
सहैं बान वर्षा बहु सूरे, टिकैं न नैन बान लखि कूरे॥

कूरे तिया के अशुचितन में काम रोगी रति करैं,
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं काक ज्यों चोंचैं भरैं,
संसार में विषबेल नारी तजि गये जोगीश्वरा,
'द्यानत' धरमदश पैंड चढ़िके शिवमहल में पग धरा।

ओं ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगायार्घ्यं नि० स्वाहा

जयमाला—दोहा।

दश लक्षण वंदौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहौं आरती भारती, हम पर होहु सहाय॥ १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहिर शत्रु न कोई,
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै॥२
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै,
उत्तम सत्य वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै॥३

उत्तम शौच लोभ परिहारी, सन्तोषी गुणरतन भन्डारी,
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै ले साता ॥४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करम शत्रु को टालै,
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोग भूमि सुर शिव सुख होई ॥५

उत्तम आकिंचन व्रतधारै, परम समाधि दशा विस्तारै,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर सुर सहित मुक्ति फल पावे ॥६

दोहा—करै करम की निर्जरा, भव पींजरा विनाशि।
अजर अमर पद को लहै, द्यानत सुख की राशि ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा मार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षण धर्मेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

इति दशलक्षण पूजा।

—◦◦—

अथ रत्नत्रय पूजा

दोहा—चहुं गति फणि विष हरन मणि, दुःख पावक जलधार।
शिव सुख सुधा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय! अत्रावतरावतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

सोरठा—क्षीरोदधि उनहार उज्ज्वल जल अति सोहना।
जनम रोग निरवारि सम्यक रत्नत्रय भजौं ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गारि, होय सुवास दशों दिशा, जन्म०, चन्दनम् ,
तन्दुल अमल चितार, वासमती सुखदास के, जन्म०, अक्षतान्
महके फूल अपार, अलिगुंजै ज्यों थिति करै, जन्म०, पुष्पम्
लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्ध युत, जन्म०, नैवेद्यम्
दीप रतनमय सार, जोति प्रकाशै जगत में, जन्म०, दीपम्
धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की, जन्म०, धूपम्
फल शोभा अधिकार, लौंग छुहारे जायफल, जन्म०, फलम्
आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये, जन्म०, अर्घ्यं

सम्यग्दर्शन ज्ञान व्रत, शिवमग तीनों मयी।
पार उतारन जान 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा।

सम्यग्दर्शन पूजा

दोहा—सिद्ध अष्ट गुनमय प्रकट, मुक्त जीव सो पान।
जिह बिन ज्ञान चरित्र अफल, सम्यक् दर्श प्रधान ॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शन ! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

सोरठा—नीर सुगन्ध अपार तृषा हरै मल छय करै।
सम्यक् दर्शनसार आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं।

जल केशर घनसार ताप हरै शीतल करै, सम्यक०, चन्दनम्

अछत अनूप निहार दारिद नाशै सुख भरै, सम्यक०, अक्षतान्

पुहुप सुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै, सम्यक०, पुष्पम्

नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै, सम्यक०, नैवेद्यम्

दीप ज्योति तम हार घट पट परकाशै महा, सम्यक०, दीपम्

धूप घ्रान सुखकार रोग विघन जड़ता हरै, सम्यक०, धूपम्

श्रीफल आदि विथार निहचै सुरशिव फल करै, सम्यक०, फलम्

जल गंधाछत चारु दीप धूपफल फूल चरु, सम्यक०, अर्घ्यं

अथमाला—दोहा ।

आप आप निहचै लखै, तत्वप्रीति व्यौहार ।
रहित दोष पचीस है, सहित अष्ट गुण सार ॥१

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यग्दर्शन रतन गहीजे, जिन वच में सन्देह न कीजे ।
इहभव विभवचाह दुःखदानी, परभव भोग चहै मत प्रानी ॥
प्रानी गिलानन करि अशुचि लखि धरमगुरु प्रभु परखिये ।
परदोष ढकिये धरमडिगते को सुथिर कर हरखिये ॥
चउ संघ को वात्सल्य कीजे धरम की परभावना ।
गुण आठसों गुण आठ लहि कैं इहां फेर न आवना ॥२

ओं ह्रीं अष्ट अङ्गसहित पंचविंशति दोष रहिताय सम्यग्दर्शनायार्घ्यं ।

सम्यग्ज्ञान पूजा

दोहा—पंचभेद जाके प्रकट ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह तपनहर चन्द्रमा सोइ सम्यकज्ञान ॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्रावतरावतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

सोरठा—नीर सुगन्ध अपार तृषा हरै मलछय करै,
सम्यग्ज्ञान विचार आठ भेद पूजों सदा।

ओं ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् नि०।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै, सम्यग्ज्ञान०, चन्दनम्
अछत अनूप निहार दारिद नाशै सुख भरै, सम्यग्ज्ञान०, अक्षतान्
पुहुपसुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै, सम्यग्ज्ञान०, पुष्पं
नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै, सम्यग्ज्ञान०, नैवेद्यं
दीपज्योति तमहार घटपट परकाशै महा, सम्यग्ज्ञान०, दीपं
धूप घ्रान सुखकार रोग विघन जड़ता हरै, सम्यग्ज्ञान०, धूपं
श्रीफल आदि विथार निहचै सुर शिव फल करै, सम्यग्ज्ञान०, फलं
जल गन्धाछत चारु दीप धूप फल फूल चरु, सम्यग्ज्ञान०, अर्घ्यं

जयमाला दोहा—

आप आप जानै नियत ग्रन्थ पठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन अष्ट अङ्ग गुनकार ॥

चौपाई मिश्रित गीता छंद—

सम्यग्ज्ञान रतनमय भाया, आगमतीजा नैन बताया।
अच्छर शुद्ध अरथ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय सङ्ग जानो।

आनो सुकाल पठन जिनागम नाम गुरु न छिपाइये।
तपरीति गहि बहुमान देके विनय गुन चित लाईये।
ये आठभेद करम उछेदक ज्ञान दर्पन देखना।
इस ज्ञान ही सों भरत सीझा और सब पटपेखना।
ओं ह्रीं अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं नि० स्वाहा

अथ सम्यक्चारित्र पूजा

दोहा—विषय रोग औषधि महा दवकषाय जलधार।
तीर्थंकर जाकों धरैं सम्यक्चारित सार॥

ओं ह्रीं त्रयोदश विध सम्यक्चारित्र! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

सोरठा—नीर सुगंध अपार तृषा हरै मल क्षय करै,
सम्यक्चारित धार तेरहविध पूजों सदा।

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनायजलं नि०स्वाहा।

जल केशर घनसार ताप हरैं शीतल करै, सम्य०, चन्दनम्
अक्षत अनूप निहार दारिद्र नाशै सुख भरै, सम्य०, अक्षतान्
पुहुप सुवास उदार खेद हरै मन शुचि करै, सम्य०, पुष्पं
नेवज विविध प्रकार छुधा हरै थिरता करै, सम्य०, नैवेद्यं
दीप ज्योति तमहार घटपट परकाशै महा, सम्य० दीपं
धूप घ्रान सुखकार रोग विघन जड़ता हरै, सम्य०, धूपं
श्रीफल आदि विथार निश्चय सुर शिव फल करै, सम्य०, फलं
जल गंधाक्षत चारु दीप धूप फल फूल चरु, सम्य०, अर्घ्यं

जयमाला दोहा—

आप आप थिर नियत नय तप संजम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये तेरह विधि दुःखहार॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द

सम्यकचारित रतन संभालो, पांच पाप तजिकैं व्रतपालो।
पंच समिति त्रय गुपति गहीजे, नरभव सफल करहु तन छीजे॥
छीजे सदा तनको जतन यह एक संजर्म पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोद मांही कषाय विषयनि टालिये॥
शुभ करम जोग सुघाट आया पार हो दिन जात है।
द्यानत धरम की नाव बैठो शिवपुरी कुशलात है॥ पूर्णार्घ्यं

समुच्चय जयमाला

सम्यकदर्शनज्ञान व्रत इन बिन मुकति न होय,
अंध पंगु अरु आलसी जुदे जले दव लोय।

चौपाई १६ मात्रा

तापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करम बन्ध कट जावै।
तासौं शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥
ताकौं चहुँ गति के दुःख नाहीं, सो न परै भव सागर माहीं।
जनम जरामृतु दोष मिटावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥
सोइ दशलक्षण को साधै, सो सोलह कारन आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥
सोइ शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै॥

सोई लोकालोक निहारैं, परमानन्द दशा विसतारैं।
आप तिरैं औरन तिरवावै, जो सम्यकरत्नत्रय ध्यावै ॥

दोहा—एक स्वरूप प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीन भेद व्योहार सब 'द्यानत' को सुखदाय ॥

ओं ह्रीं सम्यक् रत्नत्रयाय महार्घ्यम् नि० स्वाहा।

इति रत्नत्रय पूजा

अथ नंदीश्वरद्वीप (अष्टान्हिका पर्व की) पूजा

अडिल्ल—सब परब में बड़ो अठाई परब है,
नन्दीसुर सुर जांय लिये वसु दरब है।
हमें शकति सो नांहि इहां करि थापना,
पूजों जिन गृह प्रतिमा है हित आपना ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्व पश्चिमोत्तर दक्षिण दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमा समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

कंचन मणिमय भृङ्गार तीरथ नीर भरा,
तिहुँ धार दई निरवार जामन मरन जरा।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम बावन पुंज करों,
वसु दिन प्रतिमा अभिराम आनन्द भाव धरों ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म-
जरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० स्वाहा।

भव तप हर शीतलवास सो चन्दन नांही,
प्रभु यह गुन कीजे सांच आयो तुम ठांही, नन्दी०, चंदनम्
उत्तम अक्षत जिनराज पुञ्ज धरे सो हैं,
सब जीते अक्ष समाज तुम सम अरुको है, नन्दी०, अक्षताव्
तुम काम विनाशक देव ध्याऊं मैं फूलन सों,
लहुं शील लक्ष्मी एव छूटूं शूलन सों, नन्दी०, पुष्पम्
नेवज इन्द्रिय बलकार सो तुमने चूरा,
चरु तुम ढिग सोहै सार अचरज है पूरा, नन्दी०, नैवेद्यं
दीपक की ज्योति प्रकाश तुम तन मांहि लसै,
टूटै करमन की राशा ज्ञानकणी दरशै, नन्दी०, दीपम्
कृष्णागरु धूप सुवास दश दिशि नारि वरै,
अति हरषभाव परकाश मानों नृत्य करैं, नन्दी०, धूपम्
बहुविध फल ले तिहुंकाल आनन्द राचत हैं,
तुम शिवफल देहु दयाल तो हम जांचत हैं, नन्दी०, फलम्
यह अरघ कियो निज हेत तुमको अरपत हों,
'द्यानत' कीनो शिव खेत भूप समरपत हों, नन्दी०, अर्घ्यं

जयमाला दोहा—

कार्तिक फाल्गुन षाढ़ के अंत आठ दिन मांहि ।
नंदीसुर सुर जात हैं, हम पूजत इह ठांहि ॥१

छन्द—एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजनमहा, लाख चौरासिया एक दिश में लहा, आठमों द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं, भवन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥ चार दिशि चार अन्जनगिरी राजहीं,

सहस चोरासिया एक दिश जाजहीं, ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरम्, भवन बावन० ॥३॥ एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी, एक इक लाख योजन अमल जल भरी, चहुं दिशा चार वन लाख जोजन वरं, भवन बावन० ॥४॥ सोलवापीन मधि सोलगिरि दधि मुखं, सहस दश महायोजन लखत ही सुखं, बावरी कौन दो मांहि दो रति करं, भवन बावन० ॥५॥ शैल बत्तीस इक सहस योजन कहे, चार सोलै मिले सर्व बावन लहे, एक इक शीश पर एक जिन मन्दिरं, भवन बावन० ॥६॥ बिंब अठ एक सौ रत्न मइ सोहहीं, देव देवी सरब नयन मन मोहहीं पांच सै धनुष तन पद्म आसन परं, भवन बावन० ॥७॥ लाल मुख नख, नयन श्याम अरु श्वेत हैं, श्याम रंग भौंह सिर केश छवि देत हैं, वचन बोलत मनों हंसत कालुषहरं, भवन बावन० ॥८॥ कोटि शशि भानुदुति तेज छिप जात हैं, महा वैराग्य परिणाम ठहरात हैं, वचन नहिं कहैं लखि होत सम्यक्धरं, भवन बावन० ॥९॥

सोरठा—नन्दीश्वर जिन धाम, प्रतिमा महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति सब सुख करै॥ पूर्णार्घ्यं

इत्याशीर्वादः।

चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजा

सोरठा—परम पूज्य चौबीस, जिहिं जिहिं थानक शिव गये।
सिद्ध भूमि निशदीस मनवचतन पूजा करौं॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर निर्वाण क्षेत्राणि ! अत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननं ।
अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्
सन्निधीकरणं स्थापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

गीता—शुचि क्षीर दधि सम नीर निरमल कनक झारी में भरौं,
संसार पार उतार स्वामी जोर कर विनती करौं,
सम्मेदगिरि गिरिनार चम्पा, पावापुर कैलाश कौं,
पूजौं सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमि निवासकौं।

ओं ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन सलिल शीतल विस्तरौं,
भव पाप को सन्ताप मेंटो जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, चंदनं
मोती समान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौं,
औगुन हरो गुन करो मोकों, जोरकर विनतीकरौं, सम्मेद०, अक्षतान्
शुभ फूल राश सुवासवासित खेद सब मनके हरौं,
दुःख धाम काम विनाश मेरो जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, पुष्पं
नेवज अनेक प्रकार जोग मनोग धरि भय परिहरौं,
यह भूखदूषन टार प्रभुजी जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, नैवेद्यम्
दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल तिमिर सेती नहिं डरौं
संशय विमोह विभर्म तमहर जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, दीपम्
शुभ धूप परम अनूप पावन भाव पावन आचरौं,
सब करम पुञ्ज जलाय दीजे जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, धूपम्
बहु फल मंगाय चढ़ाय उत्तम चारगति सों निरवरौं,
निहचै मुक्तिफल देहु मोको जोरकर विनती करौं, सम्मेद०, फलम्

जल गन्ध अक्षत फूल चरु फल दीप धूपायन धरों,
'द्यानत' करो निर्भय जगततैं जोरकर विनती करों, सम्मेद०, अर्घ्य

जयमाला—सोरठा।

श्री चौबीस जिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं॥

चौपाई—१६ मात्रा।

नमों रिषभ कैलाश पहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं।
वासुपूज्य चम्पापुर वन्दौं, सन्मति पावापुर अभिनन्दौं॥२
वन्दों अजित अजित पददाता, वन्दों सम्भव भव दुःखघाता।
वन्दों अभिनन्दन गुणनायक, वन्दों सुमति सुमति के दायक॥३
वन्दों पद्म मुकति पद्माकर, वन्दों सुपार्श्व आश पाशहर।
वन्दों चन्द्रप्रभ प्रभुचन्दा, वन्दों सुविधि सुविधि निधि कंदा॥४
वन्दों शीतल अघतप शीतल, वन्दों श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वन्दों विमल विमल उपयोगी, वन्दों अनंत अनंत सुखभोगी॥५
वन्दों धर्म धर्म विस्तारा, वन्दों शांति शांति मन धारा।
वन्दों कुन्थु कुन्थु रखवालं, वन्दों अर अरिहर गुणमालं॥६
वन्दों मल्लि काम मल्ल चूरन, वन्दों मुनि सुव्रत व्रत पूरन।
वन्दों नमि जिन नमित सुरासुर, वन्दों पास पास भ्रम जगहर॥७
बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भू पर।
एकबार वन्दे जो कोइ, ताहि नरक पशु गति नहिं होइ॥८
नरगति नृप सुर शक्र कहावे, तिहुं जग भोग भोगि शिव पावे।
विघन विनाशक मंगलकारी, गुण विशाल वन्दे नरनारी॥९

घत्ता—जो तीरथ जावे पाप मिटावे, ध्यावे गावे भगति करै।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरै॥१०
ओं ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि०। इत्याशीर्वादः।

समुच्चय चौबीसी पूजा

वृषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व जिनराय
चंद्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि वासुपूज्य पूजित सुरराय।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल शांति कुन्थु अरमल्लि मनाय,
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु वर्धमान पद पुष्प चढ़ाय॥

ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति वर्तमान जिन समूह! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मुनि मन सम उज्ज्वल नीर प्रासुक गंध भरा,
भरि कनक कटोरी धीर दीनी धार धरा।
चौवीसों श्री जिनचंद आनन्द कंद सही,
पद जजत हरत भव फन्द पावत मोक्ष मही॥

ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि०।

गोशीर कपूर मिलाय केशर रंग भरी,
जिन चरनन देत चढ़ाय भव आताप हरी, चौबीसों०, चंदनं
तन्दुल सित सोम समान सुन्दर अनियारे,
मुकता फल की उनमान पुञ्ज धरों प्यारे, चौबीसों०, अक्षतान्

बर कंज कदम्ब कुरंड सुमन सुगन्ध भरे,
जिन अग्र धरों गुनमण्ड काम कलंक हरे, चौबेसौं०, पुष्पम्
मन मोदन मोदक आदि सुन्दर सद्य बने,
रस पूरित प्रासुक स्वाद जजत क्षुधादि हने, चौबीसों०, नैवेद्यं
तम खण्डन दीप जगाय धारों तुम आगे,
सब तिमिर मोह क्षय जाय ज्ञानकला जागे, चौबीसौं०, दीपं
दश गन्ध हुताशन मांहि हे प्रभु खेवत हों,
मिस धूम कर्म जर जांहि तुम पद सेवत हों, चौबीसों०, धूपं
शुचि पक सुरस फल सार सब ऋतु के लायो,
देखत दृग मन को प्यार पूजत सुख पायो, चौबीसौं०, फलं
जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार भवतरि मोक्ष वरों, चौबीसौं०, अर्घ्यं

जयमाला—दोहा।

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हित हेत।
गाऊं गुण माला अबै, अजर अमर पद देत ॥१

घत्ता—जय भव तम भंजन जनमनकंजन रंजन दिन मनि स्वच्छकरा।
शिव मग परकाशक अरिगननाशक चौबीसों जिनराज वरा ॥२

पद्धरि छन्द।

जय रिषभदेव रिषिगन नमन्त, जय अजित जीत वसु अरि तुरन्त।
जय सम्भव भव भय करत चूर, जय अभिनन्दन आनन्दपूर ॥३
जय सुमति सुमति दायक दयाल, जय पद्म पद्म द्युति तन रसाल,
जय जय सुपास भवपास नाश, जय चंद्र चंद्र द्युति तन प्रकाश ॥४

जय पुष्पदंत द्युति दंत सेत, जय शीतल शीतल गुण निकेत,
जय श्रेयनाथ नुत सहस भुज्ज, जय वासव पूजित वासु पुज्ज ॥५
जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनन्त गुन गन अपार,
जय धर्म धर्म शिव शर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥६
जय कुंथु कुंथु आदिक रखेय, जय अरजिन वसु अरिछय करेय,
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत शल्ल दल्ल ॥७
जय नमिनित वासव नुत सप्रेम, जय नेमिनाथ वृष चक्र नेम,
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, जय वर्धमान शिवनगर साथ ॥८

घत्ता—चौबीस जिनंदा आनंद कंदा, पाप निकंदा सुखकारी,
तिन पद जुगचंदा उदय अमंदा, वासव वंदा हितधारी ॥९

ओं ह्रीं वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो महार्घ्यं नि० ।

सोरठा—भुक्ति मुक्तिदातार, चौबीसों जिनराजवर ।
तिन पद मन वच धार जो पूजै सो शिवलहै ॥१०

इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ सप्त ऋषि पूजा

छप्पय—प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्व सुन्दर चौथो वर ॥
पंचम श्री जयवान विनय लालस षष्ठम भनि ।
सप्तम जय मित्राख्य सर्व चारित्र धाम गनि ॥
ये सातों चारण ऋद्धिधर करूं तासु पदथापना ।
मैं पूजूं मनवचकाय करि जो सुख चाहूं आपना ॥

ओं ह्रीं चारणर्द्धिधर सप्तर्षिसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं ।

गीता—शुभतीर्थ उद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं,
भवतृषा कन्द निकन्द कारण शुद्ध घट भरवायकैं ।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक मुनिन की पूजा करुं,
ता करें पातक हरें सारे सकल आनन्द विस्तरूं ॥१

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि० ।

श्रीखण्ड कदली नन्द केशर मन्द मन्द घिसाय के,
तसुगंध प्रसरत दिग दिगंतर भर कटोरी लायके, मन्वादि०, चंदनं
अति धवल अक्षत खण्डवर्जित मिष्ट राजन भोग के,
कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनतशुभ उपयोग के, मन्वादि०, अक्षतान्
बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे अमल कमल गुलाब के,
केतकी चम्पा चारु मरुवा चुने निजकर चावके, मन्वादि०, पुष्पम्
पकवान नाना भांति चातुर रचित शुद्ध नये नये,
सद्मिष्ट लाडू आदि भर बहु पुरट के थारा लये, मन्वादि०, नैवेद्यं
कलधौत दीपक जड़ित नाना भरित गो घृत सारसों,
अतिज्वलित जगमग ज्योति जाकी तिमिर नाशनहारसों, मन्वा०, दीपं
दिकचक्र गंधित होत जाकर धूप दश अङ्गी कही,
सो लाय मनवचकाय शुद्ध लगायकर खेऊं सही, मन्वादि०, धूपम्
वर दाख खारक अमित प्यारे मिष्ट पुष्ट चुनाय के,
द्राविड़ी दाड़िम चारु पुङ्गी थाल भर भर लायके, मन्वादि०, फलं
जल गंध अक्षत पुष्प चरु वरदीप धूप सुलावना,
फललित आठों द्रव्यमिश्रित अर्घकीजे पावना, मन्वादि०, अर्घ्यं

जयमाला—

वन्दूं ऋषिराजा धर्मजहाजा, निज परकाजा करत भले ।
करुणा के धारी गगनविहारी, दुःख अपहारी भरम दले ॥
काटत जम फंदा भविजन वृन्दा, करत अनन्दा चरणन में ।
जो पूजें ध्यावें मंगल गावें, फेर न आवें भव वन में ॥

पद्धरि छन्द ।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावर की रक्षा करंत,
जय मिथ्यातम नाशक पतङ्ग, करुणारस पूरित अंग अंग ॥१
जय श्री स्वरमनु अकलंकरूप, पद सेव करत नित अमर भूप,
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन समान ॥२
जय निचय सप्त तत्वार्थ भास, तप रतन मनो तन में प्रकाश,
जय विषय रोध संबोधभान, परणति के नाशन अचल ध्यान ॥३
जय जयहिं सर्व सुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगतजाल,
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणति में पायो विराम ॥४
जय आनंदघन कल्याण रूप, कल्याण करत सबको अनूप,
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विचरत करत सेव ॥५
जय जेय विनेयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान,
जय कृशितकाय तप के प्रभाव, छवि छटा उडति आनंददाय ॥६
जय मित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधमकीने पवित्र,
जय चन्द्रवदन राजीवनयन, कबहूँ विकथा बोलत न बयन ॥७
जय सातों मुनिवर एक संग, नित गगन गमन करते अभंग,
जय आये मथुरापुर मंझार, तहं मरी रोग को अति प्रचार ॥८

जय जय तिन चरणों के प्रसाद, सब मरी देवकृत भई बाद,
जय लोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा तिन जोरिहस्त ॥६
जय ग्रीषम ऋतु पर्वत मंझार, नित करत अतापन योग सार,
जय तृषा परीषह करत जेर, कहुँ रंच चलत नहिं मन सुमेर ॥१०
जय मूल अठाइस गुणनसार, तप उग्र तपत आनन्दकार,
जय वर्षाऋतु में वृक्ष तीर, तहं अति शीतल झेलत समीर ॥११
जय शीतकाल चौपट संझार, कै नदी सरोवर तट विचार,
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय ॥१२
जय मृतकासन वज्रासनीय, गो दोहन इत्यादिक गनीय,
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ॥१३
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुल वृद्धि होय,
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्रतनो दुःख होय क्षार ॥१४
जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईतिभीति सब नशत सांच,
जय तुम सुमिरत सुखलहत लोक,सुर असुर नमतपद देत धोक॥१५

रोला—ये सातों मुनिराज, महातप लक्ष्मी धारी,
परमपूज्य पद धरें, सकल जगके हितकारी।
जो मन वच तन शुद्ध, होय सबै औ ध्यावे,
सो जन मनरंगलाल अष्ट ऋद्धिनको पावे ॥१६ पूर्णार्घ्यं

दोहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।
पंच परावर्तन निर्वै निरवारो ऋषिराज॥ इत्याशीर्वादः।

ओं ह्रीं श्री सप्तर्षिभ्यः पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

—:o:—

अथ जिनवाणी पूजा

स्थापना–दोहा—जनम जरामृतु छय करै, हरै कुनय जड़ रीत।
भव सागर सों ले तिरै, पूजै जिनवच प्रीत॥

ओं ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वति वाग्वादिनि! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

त्रिभङ्गी—

छीरोदधि गङ्गा विमलतरङ्गा, सलिल अभंगा सुखसङ्गा।
भरि कंचन झारी धार निकारी, तृषा निवारी हित चङ्गा॥
तीर्थंकर की धुनि गणधर ने सुनि अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी शिव सुखदानी त्रिभुवनमानी पूज्य भई॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत सरस्वतीदेव्यै जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् नि०।

करपूर मंगाया चन्दन आया केशर लाया रंग भरी,
शारदपद वन्दौं मन अभिनंदौं पापनिकंदौं दाह हरी, तीर्थं०, चंदनं
सुखदास कमोदं धारक मोदं अति अनुमोदं चन्द्रसमं,
बहुभक्ति बढ़ाई कीरति गाई होहु सहाई मात ममं, तीर्थं०, अक्षतान्
बहु फूल सुवासं विमल प्रकाशं आनंदरासं लाय धरे,
मम काम मिटाओ शीलबढ़ायो सुख उपजायो दोषहरे, तीर्थं०, पुष्पं
पकवान बनाया बहु घृत लाया सब विध भाया मिष्ट महा,
पूजूं थुति गाऊं प्रीति बढ़ाऊं क्षुधा नसाऊं हर्ष लहा, तीर्थं०, नैवेद्यं
करि दीपक ज्योतं तम छय होतं जोति उदोतं तुमहिं चढ़ै,
तुमहो परकाशक भरमविनाशक हमघटभासक ज्ञानबढ़ै, तीर्थं०, दीपं

शुभ गन्ध दशोंकर पावक में धर धूप मनोहर खेवत हैं,
सब पाप जलावें पुण्य कमावें दास कहावें सेवत हैं, तीर्थं०, धूपम्
बादाम छुहारी लौंग सुपारी श्रीफल भारी ल्यावत हैं,
मनवांछितदाता मेंटिअसाता तुम गुनमाता ध्यावत हैं, तीर्थं०, फलं
नयननि सुखकारी मृदुगुनधारी उज्ज्वलभारी मोल धरै,
शुभगंधसम्हारा वसननिहारा तुमतरधारा ज्ञान धरै, तीर्थं०, वस्त्रं
जल चन्दन अच्छत फूल चरु चत दीप धूप अतिफल लावै,
पूजा को ठानत जो तुम जानत सो नर द्यानत सुखपावै, तीर्थं०, अर्घ्यं

सोरठा—ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल।
नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जड़ता हरै॥

वेसरी—छन्द।

पहिला आचाराङ्ग बखानों, पद अष्टा दश सहस प्रमानो।
दूजा सूत्रकृत अभिलापम्, पद छत्तीस सहस गुरुभाषम्॥
तीजा ठाना अङ्ग सुजानम्, सहस छियालिस पद सरधानम्।
चौथा समवायांग निहारम्, चौसठ सहस लाख इक धारम्॥
पंचम व्याख्या प्रगपति दरशम्, दोयलाख अट्ठाइस सहसम्।
छट्टा ज्ञातृकथा विस्तारम्, पांच लाख छप्पन हजारम्॥
सप्तम उपासकाध्ययनांगम, सत्तर सहस ग्यारलखि भंगम्।
अष्टम अन्तकृतं दश ईशम्, सहस अठाईस लाख तेईसम्॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालम्, लाख बानवे सहस चवालम्।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारम्, लाख तिरानव सोल हजारम्॥
ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखम्, एक कोड़ि चौरासी लाखम्।

चारकोड़ि अरु पन्द्रह लाखम्, दो हजार सब पदगुरु शाखम् ॥
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदम्, इकसौ आठ कोड़ि पनवेदम् ।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्याहन हैं ॥
इकसौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अङ्ग सर्व पद माने ॥
कोड़ि इकावन आठहि लाखम्, सहस चुरासी छहसौ भाखम् ।
साढ़े इकीस शिलोक बताये, एक एक पद के ये गाये ॥

दोहा—जा बानी के ज्ञान में, सूझे लोका लोक ।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हौं धोक ॥ पूर्णार्घ्यं ।

अथ गुरु पूजा

दोहा—चहुँगति दुःख सागर विषैं तारन तरन जिहाज ।
रत्नत्रयनिधि नगनतन, धन्य महामुनिराज ॥

ओं ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु गुरुसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधीकरणं स्थापनम् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

शुचिनीर निरमल क्षीरदधि सम सुगुरुचरण चढ़ाइया ।
तिहुँधार तिहुँ गद टार स्वामी अति उछाह बढ़ाइया ॥
भव भोग तन वैराग धार निहार शिव तप तपत हैं ।
तिहुँ जगतनाथ अराध साधु सुपूज नित गुण जपत हैं ॥

करपूर चन्दन सलिलसों घसि सुगुरुपद पूजा करौं,
सब पाप ताप मिटाय स्वामी धरम शीतल विस्तरौं, भव०, चंदनं
तन्दुल कमोद सुवास उज्वल सुगुरु पगतर धरत हैं,
गुनकार औगुनहार स्वामी वन्दना हम करत हैं, भव०, अक्षतान्
शुभ फूलराश प्रकाश परिमल सुगुरुपांयन धरत हौं,
निरवार मार उपाधि स्वामी शील दृढ़ उर धरत हौं, भव०, पुष्पं
पकवान मिष्ट सलौन सुन्दर सुगुरु पांयन प्रीत सौं,
कर क्षुधारोग विनाश स्वामी सुथिर कीजे रीतसों, भव०, नैवेद्यं
दीपक उदोत सजोत जगमग सुगुरु पद पूजों सदा,
तमनाश ज्ञान उजास स्वामी मोहि मोह न हो कदा, भव०, दीपं
बहु अगर आदि सुगन्ध खेऊं सुगुण पद पद्महिं खरे,
दुःख पुञ्ज काठ जलाय स्वामी गुण अक्षय चितमें धरे, भव०, धूपं
भर थार पूग बदाम बहुविधि सुगुरुक्रम आगे धरौं,
मंगल महाफल करो स्वामी जोड़ कर बिनती करौं, भव०, फलं
जल गन्ध अक्षत फूल नेवज दीप धूप फलावली,
'द्यानत' सुगुरुपद देहु स्वामी हमहिं तार उतावली, भव०, अर्घ्यं

दोहा—कनककामिनी विषय वश दीसै सब संसार।
त्यागी वैरागी महा साधु सुगुन भण्डार ॥१
तीन घाट नवकोड़ि सब बन्दौं सीस नवाय,
गुन तिन अट्ठाईस लौं कहूँ आरती गाय ॥२

एक दया पालैं मुनिराजा राग द्वेष द्वै हरनपरं,
तीनों लोक प्रकट सब देखैं चारों आराधन निकरं।

पंच महाव्रत दुद्धर धारें छहों दरब जानैं सुहितं,
सातभङ्गवानी मन लावैं पावैं आठ रिद्ध उचितं ॥३
नवों पदारथ विधिसों भाखैं बंध दशों चूरन करनं,
ग्यारह शङ्कर जानै मानै उत्तम बारह व्रत धरनं।
तेरह भेद काठिया चूरे चौदह गुणथानक लखियं,
महाप्रमाद पंचदश नाशे शील कषाय सबै नखियं ॥४
बन्धादिक सत्रह सब चूरे ठारह जन्मन मरन मुनं,
एक समय उनईस परीषह में बीस प्रसूपनि में निपुनं।
भावउदीक इकीसों जाने बाईस अभखन त्याग कर,
अहमिंद्र तेईसों वेदैं इन्द्र सुरग चौईसवरं ॥५
पच सौं भावन नित भावैं छब्बिस अंग उपंग पढ़ैं,
सत्ताईसों विषय विनाशैं अट्ठाईसों गुण सुबढ़ैं।
शीतसमय सर चौपटवासी ग्रीषम गिरिशिर जोग धरैं।
वर्षा वृक्षतरैं थिर ठाड़े आठ करम हनि सिद्धि वरं ॥६
दोहा—कहौं कहालों भेद मैं बुध थोरी गुण भूर।
हेमराज सेवक हृदय भक्ति भरो भरपूर॥ अर्घ्यं॰इत्यादि॰

अथ अनंतव्रत पूजा

अडिल्ल—श्री जिनराज चतुर्दश जग में जयकरा,
कर्मनाश भवसार लही सुख शिवधरा।
संवौषट् ठः ठः सुवषट् यह उचरूं,
आह्वानन स्थापन मम सन्निधिकरूं॥

ओं ह्रीं वृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्र समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीताछंद—

गङ्गादि तीरथ को सुजल भर कनकमय भृङ्गारमैं,
चउदश जिनेश्वर चरण जुग पर धार डारों सारमैं ।
श्रीवृषभादि अनंतजिन पर्यंत पूजों ध्यायके,
करि अनन्तव्रत तपकर्म हनि के लहों शिवसुख जायके ॥

ओं ह्रीं वृषभादि अनन्तनाथ पर्यंत चतुर्दश जिनेन्द्रेभ्यो जन्म०, जलं० ।

चन्दन अगर घनसार आदि सुगन्ध द्रव्य घसायके,
सहजही सुगन्ध जिनेन्द्र के पद चर्च हों सुखदायके, श्रीवृष०, चंदनं
तन्दुल अखंडित अति सुगन्ध सुमिष्ट लेके करधरों ।
जिनराज तुम चरनन निकट भविपाय पूजों शुभ धरों, श्रीवृ०अक्ष०
चम्पा चमेली केतकी पुनि मोगरो शुभ लायके ।
केवड़ो कमल गुलाब गेंदा जुही सुमाल बनायके, श्रीवृष०, पुष्पं०
लाडू कलाकंद सेव घेवर और मोनीचूर ले ।
गूझा सुपेड़ा खीर व्यंजन थाल में भरपूर ले, श्रीवृष० नैवेद्यं
ले रत्न जड़ित सुआरती ता मांहि दीप संजोयके ।
जिनराज तुम पद आरतीकर मिथ्यातिमिर सु खोय के, श्रीवृष०, दीपं
चंदन अगर तर शिलारस करपूर की कर धूप को ।
तागंधतें मधु चकित सो खेऊं निकट जिन भूप को, श्री वृष०, धूपं
नारंग केला दाख दाड़िम बीजपूर मंगाय के,
पुनि आम्र और बदाम आदिक कनकथार भरायके, श्रीवृष०, फलं

जल सुचन्दन अखत पुष्प सुगंध बहुविध लायके,
नैवेद्य दीप सुधूप फल इनको जु अर्घ बनायके, श्रीवृष०, अर्घ्यं

जयमाला—पद्धरि छन्द

जय वृषभनाथ वृष को प्रकाश, भविजन को तारे पाप नाश।
जय अजितनाथ जीते सुकर्म, ले क्षमा खड्ग भेदे सुमर्म ॥१
जय संभव जग सुखके निधान, जग सुख करता तुम दियो ज्ञान।
जय अभिनंदन पद धरो ध्यान, तासों प्रगटे शुभ ज्ञान भान ॥२
जय सुमति सुमति के देनहार, जासों उतरें भव उदधि पार,
जय पद्म पद्म पदकमल तोहि, भविजन अति सेवें मगन होहि ॥३
जय जय सुपार्श्व तुम नमत पांय, क्षय होत पाप बहु पुण्य थाय।
जय चन्द्रप्रभ शशिकोटिभान, जगका मिथ्यातम हरो जान ॥४
जय पुष्पदन्त जगमांहि सार, पुष्पकको मार्यो अति सुमार।
करि धर्म प्रभाव जग में प्रकाश, हर पापतिमिरदियो मुक्तिवास ॥५
जय शीतल जिन हरभव प्रवीन, हरि पाप ताप जग सुखीकीन।
श्रेयांस कियो जगको कल्यान, दे धर्म दुःखित तारे सुजान ॥६
जय वासु पूज्य जिन नमों तोहि, सुर नर मुनि पूजत गर्व खोहि।
जयविमल विमल गुणलीन मेय, भविकरे आपसम सुगुणदेय ॥७
जय अनन्तनाथ करि अनन्तवीर्य, हरि घातिकर्म धरि अनंतधीर्य।
उपजायो केवल ज्ञान भान, प्रभु लखे चराचर सब सुजान ॥८

दोहा—यह चतुर्दश जिन जगत में मङ्गल करन प्रवीन।
पाप हरन बहु सुख करन सेवक सुखमय कीन ॥पूर्णार्घ्यं

अथ स्वयंभूस्तोत्र भाषा

चौपाई

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, बंदौं आदिनाथ गुणखान ॥१

इन्द्र क्षीर सागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदन विनाशक सुख करतार, बंदौं अजित अजित पदकार ॥२

शुकल ध्यान करि कर्म विनाश, घाति अघाति सकल दुःखराश।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बन्दौं संभव भव दुःखटार ॥३

माता पश्चिम रयन मझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूंछि फल सुनि हरषाय, बन्दौं अभिनन्दन मनलाय ॥४

सब कुवादवादी सरदार, जीते स्याद्वाद धुनि सार।
जैन धरम परकाशक स्वाम, सुमति देवपद करहुँ प्रणाम ॥५

गर्भ अगाऊ धनपत आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमों पदम प्रभु सुखकी राश ॥६

इन्द्र फनिंद्र नरिन्द्र त्रिकालज्ञानी, सुनि सुनि होंहि खुशाल।
द्वादश सभा ज्ञान दातार, नमों सुपारसनाथ निहार ॥७

सुगुन छियालिस हैं तुम मांहि, दोष अठारह कोइ नाहिं।
मोह महातम नाशक दीप, नमों चन्द्रप्रभ राख समीप ॥८

द्वादश विधि तप करम विनाश, तेरह भेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छक दान, बंदौं पहुपदंत मन आन ॥९

भवि सुखदाय सुरगतें आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय,
आप समान सबनि सुख देह, बंदौं शीतल धर्म सनेह ॥१०

समता सुधा कोप विषनाश, द्वादशांग वानी परकाश।
चार संघ आनंद दातार, नमों श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥११
रतनत्रय चिर मुकुट विशाल, शोभे कंठ सुगुन मणिमाल,
मुक्ति नार भरता भगवान, वसुपूज्य वंदौं धरि ध्यान ॥१२
परम समाधि सरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश,
कर्म नाशि शिव सुख विलसंत, वंदौं विमलनाथ भगवंत ॥१३
अंतर बाहिर परिग्रह डार, परम दिगम्बर व्रत को धार,
सर्व जीव हित राह दिखाय, नमों अनंत वचन मन लाय ॥१४
सात तत्व पंचासतिकाय, अरथ नवों छदरब बहु भाय,
लोक अलोक सकल परकाश, वंदौं धर्मनाथ अविनाश ॥१५
पंचम चक्रवर्ति निधि भोग, काम देव द्वादशम मनोग,
शांति करन सोलम जिनराय, शांति नाथ वंदौं हरषाय ॥१६
बहुथुति करै हरष नहिं होय, निंदै दोष गहै नहिं कोय,
शीलमान परब्रह्म स्वरूप, वंदौं कुंथुनाथ शिव भूप ॥१७
द्वादशगण पूजे सुखदाय, थुति वंदना करै अधिकाय,
जाकी निज थुति कबहु न होय, वंदौं अरजिनवर पद दोय ॥१८
परभव रतनत्रय अनुराग, इह भव ब्याहसमय वैराग,
बालब्रह्म पूरनव्रत धार, वंदौं मल्लिनाथ जिन सार ॥१९
विन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लौकांत करैं पगलाग,
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, वंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥२०
श्रावक विद्यावंत निहार, भगति भावसों दियो आहार,
बरषी रतनराशि तत्काल, वंदौं नमि प्रभु दीनदयाल

सब जीवन की बंदी छोर, राग द्वेष द्वै बंधन तोर,
रजमति तजि शिवतियसों मिले, नेमिनाथ बंदौं सुखनिले ॥२२
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फणधार,
गयो कमठ शठ मुखकर श्याम, नमौं मेरु सम पारसस्वाम ॥२३
भवसागरतें जीव अपार, धरमपोत में धरे निहार,
डूबत काढ़े दया विचार, वर्धमान बंदौं बहुवार ॥२४

दोहा—चौबीसों पदकमल, जुग बंदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥२५

श्री महावीर जिन पूजा

मत्तगयंद—

श्रीमत वीर हरै भवपीर भरै सुखसीर अनाकुलताई।
केहरि अंक अरीकरदंक नये हरिपंकति मौलि सुआई ॥
मैं तुमको इतथापतु हौं प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई।
हे करुणाधन धारक देव इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

छीरो दधि सम शुचि नीर कञ्चन भृङ्ग भरों,
प्रभु वेग हरो भवपीर यातैं धार करौं।
श्री वीर महा अतिवीर सन्मति नायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो ॥१ जलं

मलयागिर चन्दन सार, केसर संग घिसौं,
प्रभु भव आताप निवार पूजत हिय हुलसौं, श्रीवीर०, चन्दनम् ॥२
तन्दुल सित शशि सम शुद्ध लीनै थार भरी,
तसु पुञ्ज धरौं अविरुद्ध पाऊं शिवनगरी, श्रीवीर०, अक्षतान् ॥३
सुरतरु के सुमन समेत सुमन सुमन प्यारे,
सो मनमथ भञ्जन हेत पूजौं पद थारे, श्रीवीर०, पुष्पम् ॥४
रस रज्जत सज्जत सद्य मज्जत थार भरी,
पद जज्जत रज्जत अद्य भज्जत भूख अरी, श्रीवीर०, नैवेद्यम् ॥५
तम खण्डित मण्डित नेह दीपक जोवत हौं,
तुम पदतर हे सुख गेह भ्रमतम खोवत हौं, श्रीवीर०, दीपम् ॥६
हरिचन्दन अगर कपूर चूर सुगन्ध करा,
तुम पदतर खेवत भूर आठों कर्म जरा, श्रीवीर०, धूपम् ॥७
रितु फल कलवर्जित लाय कञ्चन थार भरौं,
शिवफल हित हे जिनराय तुम ढिग भेंट धरौं, श्रीवीर०, फलम् ॥८
जल फल वसु सजि हिम थार तन मन मोद धरौं,
गुण गाऊं भवदधि पार पूजत पाप हरौं, श्रीवीर०, अर्घ्यम् ॥९

पंच कल्याणक—राग टप्पा।

मोहि राखो हो शरना, श्री वर्धमान जिनरायजी, मोहि०
गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघहरना,
सुर सुरपति तित सेव करी नित, मैं पूजौं भवतरना, मोहि०
ओं ह्रीं आषाढ़शुक्ला षष्ठ्यां गर्भ मंगल मंडिताय......अर्घ्यं।
जनम चैतसित तेरस के दिन कुण्डलपुर कनवरना,

सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो मैं पूजों भव हरना मोहि०

ओं ह्रीं चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय...अर्घ्यं ।

मगसिर असित मनोहर दशमी ता दिन तप आचरना,

नृपकुमार घर पारण कीनो मैं पूजों तुम चरना मोहि०

ओं ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगल मंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्रायार्घ्यं० ।

शुक्ल दशैं वैशाख दिवस अरि घाति चतुक क्षय करना,

केवल लहि भवि भवसर तारे जजों चरन सुखभरना मोहि०

ओं ह्रीं वैशाखशुक्ला दशम्यां केवलज्ञानमंडिताय ज्ञानकल्याणक प्राप्तायार्घ्यं० ।

कार्तिक श्याम अमावस शिवतिय पावापुर तैं परना,

गणफणिवृन्द जजैं तित बहुविध मैं पूजों भय हरना, मोहि०

ओं ह्रीं कार्तिक कृष्णामावास्यायां मोक्षकल्याणक मंडिताय श्रीमहावीर जिनायार्घ्यं० ।

जयमाला छन्द । हरिगीता । २८ मात्रा ।

गनधर अशनिधर चक्रधर हर धर गदाधर वरवदा ।

अरु चाप धर विद्यासुधर त्रिसूल धर सेवहिं सदा ।।

दुःख हरन आनंद भरन तारन तरन चरन रसाल है ।

सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भाल की जयमाल है ।।१

घत्ता—जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवन्दन जगदानन्दन चन्दवरं,

भवतापनिकन्दन तनकनमन्दन रहित सपन्दन नयन धरं ।।२

त्रोटक छन्द ।

जय केवल भानुकला सदनं, भवि कोक विकाशन कंजवनं ।

जग जीत महारिपु मोह हरं, रज ज्ञान दृगां वर चूर करं ।।१

गर्भादिक मङ्गल मण्डित हो, दुःख दारिद को नित खण्डित हो ।

जगमांहि तुम्हीं सत पण्डित हो, तुमही भव भावविहण्डित हो ।।२

हरिवंश सरोजन को रवि हो, बलवन्त महन्त तुमही कवि हो।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलौं सोइ मारग राजतियो ॥३
पुनि आप बने गुनमांहि सही, सुरमग्न रहे जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुनगावत हैं, लय तानन सों मन भावत हैं ॥४
पुनि नाचत रङ्ग उमङ्ग भरी, तुव भक्ति विषै पग प्रेम धरी।
झननं झननं झननं झननं, सुर लेत तहां तननं तननं ॥५
घननं घननं घन घण्ट बजै दम दम दम दम मिरदङ्ग सजै।
गगनांगन गर्भ गता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥६
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभ में, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमें ॥७
कइ नारि सुवीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जल गावति हैं।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥८
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करे प्रभु जी तुम्हरी,
तुम ही जगजीवन के पितु हो, तुमही बिनकारन के हितु हो ॥९
तुमही सब विघ्न विनाशन हो, तुम ही निज आनंद भासन हो,
तुमही चित चिंतित दायक हो, जग मांहि तुम्हीं सब लायक हो ॥१०
तुमरे पन मङ्गल मांहि सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सब ही,
हम तो तुमरी शरनागत हैं, तुमरे गुन में मन पागत हैं ॥११
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जब लौं बसु कर्म नहीं नसिये,
तब लौं तुम ध्यान हिये बरतो, तबलौं श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥१२
तब लौं ब्रत चारित चाहत हौं, तब लौं शुभ भाव सुगाहतु हौं,
तब लौं सत सङ्गति नित्त रहो, तबलौं मम संजम चित्त गहो ॥१३

जब लों नहिं नाश करों अरिको, शिवनारि वरों समता धरिकों।
यह यो तब लों हम को जिनजी, हम जांचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४

घत्ता—श्रीवीर जिनेशा, नमत सुरेशा, नाग नरेशा, भगति भरा,
'वृन्दावन' ध्यावै; विघन नशावै; वांछित पावै, शर्मवरा ॥ महार्घं

श्रीसनमति के जुगलपद जो पूजै धर प्रीत,
'वृन्दावन' सो चतुर नर लहै मुक्ति नवनीत ॥ इत्याशीर्वादः

अथ निर्वाण काण्ड भाषा

दोहा—वीतराग वन्दों सदा, भाव सहित शिरनाय ।
कहूँ काण्ड निर्वाण की; भाषा सुगम बनाय ॥१

चौपाई १५ मात्रा ।

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चम्पापुर नामी ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दों भाव भगति उरधार ॥२
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुर स्वामी महावीर,
शिखर सम्मेद जिनेश्वर बीस, भाव सहित वन्दों जगदीस ॥३
वरदत्तराय रु इन्द मुनिंद, सायरदत्त आदि गुण वृन्द,
नगरतारवर मुनि उठ कोड़ि, वन्दों भाव सहित कर जोड़ि ॥४
श्रीगिरनार शिखर विख्यात; कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात,
शम्बु प्रद्युम्नकुमार द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय ॥५
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाड़ नरिन्द आदि गुणधीर,
पांच कोड़ि मुनि मुक्ति मंझार, पावागिर वन्दों निरधार ॥६

पांडव तीन द्रविड़ राजान, आठ कोडि मुनि मुक्ति पयान,
श्रीशत्रुञ्जयगिरि के शीश, भाव सहित वन्दौं निशदीस ॥७
जे बलभद्र मुक्ति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहिं भये,
श्रीगजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूं तिहुंकाल ॥८
राम हनू सुग्रीव सुडील, गयगवाख्य नील महानील,
कोड़ि निन्यानवे मुक्ति पयान, तुङ्गीगिर वन्दौं धरि ध्यान ॥९
नङ्ग अनङ्ग कुमार सुजान, पंच कोड़ि अरु अर्ध प्रमाण,
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवन पति ईश ॥१०
रावण के सुत आदि कुमार, मुक्ति गये रेवा तट सार,
कोड़ि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास ॥११
रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट,
द्वै चक्री दश काम कुमार, ऊठ कोड़ि वन्दौं भव पार ॥१२
वड़वानी बड़नयर सुचङ्ग, दक्षिण दिश गिरि चूल उतङ्ग,
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव सायर तर्ण ॥१३
सुवर्ण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरवर शिखर मंझार,
चेलना नदी तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास ॥१४
फल होड़ी वर ग्राम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप,
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहां, मुक्ति गये वन्दौं नित तहां ॥१५
व्याल महाव्याल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय,
श्रीअष्टापद मुकति मंझार, ते वन्दौं नित सुरत संभार ॥१६
अचलापुर की दिशा ईशान, तहां मेंढ़गिरि नाम प्रधान,
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चितलाय ॥१७

वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय,
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम ॥१८
दशरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पांच सौ लहे,
कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करौं जोर जुग पान ॥१९
समव शरण श्री पार्श्व जिनेन्द्र, रेसिंदीगिर नयनानंद,
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम जहाज ॥२०
तीनलोक के तीरथ जहां, नित प्रति वन्दन कीजे तहां,
मनवचकाय सहित शिरनाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय ॥२१
सम्वत् सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल,
भैया वन्दन करहिं त्रिकाल, जयनिर्वाण काण्ड गुणमाल ॥२२

इति निर्वाणकाण्ड भाषा ।

यज्ञोपवीत (जनेऊ) बदलने का मंत्र

ओं नमः परमशांताय शांतितीर्थंकरायार्हं स्वाहा । अर्हं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि । मम गात्रं पवित्रं भवतु ।

अथवा—अति निर्मल मुक्ताफललितं यज्ञोपवीतमतिपूतम् ।
रत्नत्रयमिति मत्वा करोमि कलुषापहरणमाभरणम् ॥

इति यज्ञोपवीतसंधारणम् ॥

नोट—५ अस्तिकाय ६ द्रव्य ७ तत्व ९ पदार्थ की सब सत्ताईस लड़ें होती हैं । रत्नत्रय की तीन गांठें होती हैं ।

श्री सिद्ध चक्र पूजा

दोहा—ऊर्ध्व अधः रकार युत, विंदी सहित हकार।
सिद्धचक्र पूजों सदा, अरि करि हर हरिसार ॥

ओं ह्रीं अनादि असिआउसा सिद्धचक्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

मोह महारिपु नाश के वर पायो सम्यक सार,
यासे पूजों नीर से, मिथ्यात्व तृषा निरवार,
आज हमारे आनंद हैं, मैं पूजों आठों द्रव्य से ।
तुम सिद्ध महा सुखदाय, आठों कर्म विनाश के,
लहि आठ सुगुण समुदाय, आज हमारे आनंद हैं,
हम पाये मङ्गलचार । येही उत्तम लाक में ।
इनही का शरणाधार, आज हमारे आनंद हैं ॥ जलं

ज्ञानावरणी जीत के प्रगटोवर केवल ज्ञान, चंदन से पूजा करों अज्ञान तपन की हान । आज हमारे०, मैं पूजों आठों०, सुगंधं

दरशन आवरणी हतो भयो दरश अनंतअपार, पूजोंअक्षत लायके औगुण तमहर गुणकार । आज हमारे०, मैंपूजों आठों०, अक्षतान्

अन्तराय को घातिके उपजो अनंत बलसार, फूलन से पूजा करों प्रभु काम के बाण निवार । आज हमारे०, मैं पूजों आठों०, पुष्पं

कर्म वेदनी मिटगयो निरबाधा बाधाहीन, अब छहों रससों जजों मेरा रोग क्षुधा कर छीन । आज हमारे०, मैं पूजों०, नैवेद्यं

आयु कर्म को क्षय करो, अवगाह अचल परकाश, पूजौं दीप चढ़ायके, करो भर्म तिमिरको नाश। आजहमारे०, मैं पूजौं०, दीप० नाम प्रकृति सब चूरके, भये अमल अमूरति देव, धूप सुगंधी खेयके सब कर्म जलें स्वयमेव। आज हमारे०, मैं पूजौं०, धूपं गोत्र कर्म सब तोड़ के, प्रभु भये अगुरु लघुसार, फल धर पूजौं भाव से लहौं मनवांछित फलसार। आज हमारे०, मैं पूजौं०, फलं अर्घ करों उत्साह से, नमों आठों अंग नवाय, आनंद दौलतराम के प्रभु भव भव होउ सहाय। आज हमारे०, मैं पूजौं०, अर्घ्यं० चार ज्ञानधर ना लखैं, हम देखें श्रद्धावन्त, जाने माने अनुभवे तुम राखो पास महंत। आज हमारे०, मैं पूजौं०, पूर्णार्घ्यं०।

अथ जयमाला—दोहा।

आठ कर्म दृढ़ बन्ध से, नख शिख बन्धो जहान।
बन्ध रहित वसु गुण सहित नमो सिद्ध भगवान॥

त्रोटक छन्द।

सम्यक्दर्शन वरज्ञान धरं, बल अगुरु लघु अरु बाध हरं,
अवगाह अमूरति नायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो ॥१
अमलं अचलं अतुलं अटलं, अमनं अमलं अतलं अकलं,
अजरं अमरं अघ क्षायक हो। सब०॥२
निरभोग स्वभोग अराग परं, निरयोग अयोग वियोग हरं,
अरसं सुरसं सुखदायक हो। सब०॥३
सब कर्म कलंक अटंक अजं, नरनाथ सुरेश समूह जजं,
मुनि ध्यावत सज्जन ज्ञायक हो। सब०॥४

अविरुद्ध विशुद्ध प्रबोध मयं, अब आनत से कालोक मयं,
परमं धरमं शिव दायक हो। सब० ॥५
निरबंध अबंध अगंध परं, निर्भय निरलय निर्णय अक्षरं,
निर रूप अनूप अकायक हो। सब० ॥६
निरभेद अखेद अछेद लहा, निरद्वन्द्व सुछंद अफंद महा,
अक्षुधा अतृषा अकषायक हो। सब० ॥७
अयमं अतमं अपमं कहियं, अगमं सुगमं सुखुखं लहियं,
यमराज की चोट बचायक हो। सब० ॥८
निरधाम स्वधाम सुबोध युतं, अपहार निहार अहारच्युतं,
भयनाशन तीक्ष्ण सायक हो। सब० ॥९
निरवर्ण अकर्ण दशा धरतं, अगतं अमतं अक्षतं अरतं,
अति उत्तम भाव सुदायक हो। सब० ॥१०
बिन रंग असंग अभंग सदा, अतयें अवयं अजयं सुखदा,
अमरं अगमं गुणदायक हो। सब० ॥११
अविषाद अनाद अक्राद वरं, भगवंत अनन्तानन्त तरं,
तुम देव महारवि ध्यायक हो। सब० ॥१२
निरदेह अनेह अगेह सुखी, निरमोह अकोह अलोह तुषी,
तिहुं लोक के नायक पायक हो। सब० ॥१३
पन्द्रहसौ भाग महान बसे, नवलाख के भाग जघन्य लसे,
तनुवात के अन्त सहायक हो। सब० ॥१४
दोहा—वसुविधि चूर्ण कर लिये, वसुगुण शुचि व्यवहार।
ऐसे सिद्ध समूह को, नमों त्रियोग सम्हार। अर्घ्यं, इत्याशीर्वादः।

अथ श्री गर्भ कल्याणक मंगल

पणविवि पंच परम गुरु गुरु जिन शासनो,
सकल सिद्धि दातार सु विघन विनासनो ।
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो,
मंगल कर चउसंघहि, पाप पणासनो ॥
पापहिं पणासन गुणहि गरवा दोष अष्टादश रहे,
धरि ध्यान कर्म विनाशि केवलज्ञान अविचल जिन लहे ।
प्रभु पंचकल्याणक विराजित सकल सुर नर ध्यावहीं,
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ॥
जाके गरभ कल्याणक धनपति आइयो,
अवधिज्ञान परवान सुइन्द्र पठाइयो ।
रचि नव बारह योजन नयरि सुहावनी,
कनकरयण मणिमण्डित मन्दिर अतिबनी ॥
अतिबनी पौरि पगारि परिखा सुवन उपवन सोहिये,
नर नारि सुन्दर चतुर भेप सु देख जनमन मोहिये ।
तहां जनक गृह छहमास प्रथमहि रतन धारा बरपियो,
पुनि रुचिक वासिनि जननि सेवा करहिं सबविधि हरपियो ॥
सुर कुन्जर सम कुन्जर धवल धुरन्धरो,
केहरि केशर शोभित नख शिख सुन्दरो ।
कमला कलश न्हवन दुइ दाम सुहावनी,
रवि शशि मण्डल मधुर मीन जुग पावनी ॥

पावनी कनक घटयुगम पूरण कमलकलित सरोवरो,
कल्लोल माला कुलित सागर सिंह पीठ मनोहरो।
रमणीक अमरविमान फणिपति भुवन भुवि छवि छाजहीं,
रुचि रतनराशि दिपन्त दहन सु तेज पुञ्ज विराजहीं॥
ये सखि सोलह सुपने सोती शयन में,
देखे माय मनोहर पश्चिम रयन में।
उठि प्रभात पिय पूछियो अवधि प्रकाशियो,
त्रिभुवन पति सुत होसी फल तिहिं भासियो॥
भासियो फलतिहिं चिंति दम्पति परम आनंदित भये,
छहमास परिनवमास बीते रयन दिन सुखसों गये।
गर्भावतार महन्त महिमा सुनत सब सुख पावहीं,
भनि 'रूपचन्द्र' सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं॥
भगवान के गुण गावहीं। इति गर्भकल्याणक पाठ भाषा॥

अथ जन्म कल्याणक मंगल

मतिश्रुत अवधि विराजित जिन जब जनमियो,
तिहुँ लोक भयो छोभित सुरगण भरमियो।
कल्पवासि घर घंट अनाहद बज्जियो,
ज्योतिष घर हरिनाद सहज गल गज्जियो॥
गज्जियो सहजहिं शंख भावन भवन शब्द सुहावने,
व्यंतरनिलय पटु पटह बज्जिय कहत महिमा क्यों बने।

कंपिल सुपासन अवधिबल जिन जन्म निहच्चे आनियों,
धनराजें तब गजराज माया मई निर्मय आनियो ॥
योजन लाख गयन्द वदन सौ निरमये,
वदन वदन वसु दन्त दन्त सर संठये ।
सर सर सौपन बीस कमलनी छाजहीं,
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं ॥
राजहीं कमलिनि कमल अठोतरसौ मनोहर दल बनें,
दल दलहिं अपछर नटहिं नवरस हाव भाव सुहावने ।
मणि कनककङ्कण वर विचित्र सु अमर मंडप सोहये,
घन घण्ट चमर धजा पताका देख त्रिभुवन मोहये ॥
तिहिं करि हरि चढ़ि आयउ सुर परिवारसौं,
पुरहिं प्रदच्छन देत सुजिन जयकार सों ।
गुप्त जाय जिन जननिहिं सुख निद्रारची,
मायामयी शिशु राखि तौ जिन आन्योशाची ॥
आन्योशची जिनरूप निरखत नयन तृप्त न हूजियें,
तब परम हरषित हृदय हरि नें सहसलोचन पूजियें ।
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इन्द्र उछंग धरि प्रभुलीनऊ,
ईशान इन्द्र सुचंद्र छवि शिर छत्र प्रभु के दीनऊ ॥
सनतकुमार महेन्द्र चमर दुइ ढार हीं,
शेष शक्र जयकार शब्द उचार ही ।
उच्छव सहित चतुर्विध सुर हर्षित भयें,
योजन सहस निन्यानवे गगन उलंघि गये ॥

लंघि गये सुरगिरि जहां पांडुक वन विचित्र विराजहीं,
पांडुकशिला तहं अर्धचन्द्र समान मणि छवि छाजहीं।
योजन पचास विशाल दुगुणायाम वसु ऊंचा गनी,
वर अष्ट मंगल कनक कलशनि सिंहपीठ सुहावनी ॥
रचि मणि मण्डप शोभित मध्य सिंहासनो,
थाप्यो पूरब मुख तहां प्रभु कमलासनो ।
बाजहिं ताल मृदङ्ग वेणु वीणा घने,
दुन्दुभि प्रमुख मधुर ध्वनि और जु बाजने ॥
बाजने बाजहिं शची सब मिल धवल मंगल गावहीं,
कर करहिं नृत्य सुरांगना सब देव कौतुक ध्यावहीं ।
भरि क्षीर सागर जल जु हाथहिं हाथ सुरगिरि ल्यावहीं,
सौधर्म अरु ईशान इन्द्र सु कलश ले प्रभु न्हावहीं ॥
बदन उदर अवगाह कलश गत जानिये,
एक चार वसु योजन मान प्रमानिये ।
सहस अठोतर कलशा प्रभु जी के शिर ढरे,
पुनि श्रृङ्गार प्रमुख आचार सबै करे ॥
करि प्रगट महिमा मनोच्छव आनि पुनि मातहिं दयो,
धनपतहिं सेवा राखि सुरपति आप सुरलोकहिं गयो ।
जनमाभिषेक महंत महिमा सुनत सब सुख पावहीं,
भनि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं ॥
जिनराज के गुण गावहीं । इति जन्मकल्याणक ॥

श्री नवग्रह अरिष्ट निवारक

समुच्चय पूजा

दोहा—अर्क चन्द्र कुज सोम गुरु, शुक्र शनिश्चर राहु।
केतु ग्रह रिष्ट नाशने, श्रीजिन पूज रचाहु ॥

ओं ह्रीं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक गीता—छन्द।

क्षीर सिंधु समान उज्ज्वल, नीर निर्मल लीजिए,
चौबीस श्री जिनराज आगे, धार त्रय शुभ दीजिए।
रवि सोम भूमज सौम्यगुरु कार्य, शनि तमो पूत केतवे,
पूजिए चौबीस जिन ग्रहरिष्ट नाशन हेतवे ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंच कल्याणक प्राप्ताय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कुम कुम हिम सुमिश्रित, घिसों मन करि चावसों,
चौबीस श्री जिनराज अघहर, चरण चर्चों भावसों।
रवि सोम०, ओं ह्रीं सर्व····चन्दनम् ॥

अक्षत अखण्डित सालि तन्दुल, पुञ्ज मुक्ताफल समं,
चौबीस श्री जिन चरण पूजन, नाम है नव ग्रह भ्रमं।
रवि सोम०, ओं ह्रीं····अक्षतं निर्वपा०

कुन्द कमल गुलाब केतकी, मालती जाही जुही,
कामबाण विनाश कारण, पूजि जिनमाला गुही।
रवि सोम०, ओं ह्रीं⋯पुष्पं ॥

फैनी सुहारी पुवा पापर लेऊ मोदक घेवरं.
शत छिद्र आदिक विविध व्यंजन, क्षुधाहर बहु सुखकरं।
रवि सोम०, ओं ह्रीं⋯नैवेद्यं ॥

मणि दीप जग मग जोत तमहर, प्रभु आगे लाइये,
अज्ञान नाशक निज प्रकाशक, मोह तिमर नसाइये।
रवि सोम०, ओं ह्रीं⋯दीपं ॥

कृष्णा अगरु घनसार मिश्रित, लौंग चन्दन लाइये,
ग्रहरिष्ट नाशन हेतु भवि जन, धूप जिनपद खेइये।
रवि सोम०, ओं ह्रीं⋯धूपं ॥

बादाम पिस्ता सेव श्रीफल, मोच नीबू सद फलं,
चौबीस श्रीजिनराज पूजत, मनोवांछित शुभ फलं।
रवि सोम०, ओं ह्रीं⋯फलं ॥

जल गंध सुमन अखण्ड तंदुल, चरु सुदीप सुधूपक,
फल द्रव्व दूध दही सुमिश्रित अर्घ देय अनूपकं।
रवि सोम०, ओं ह्रीं⋯अर्घ्यं ॥

जयमाला—दोहा।

श्रीजिनवर पूजा किये, ग्रह अरिष्ट मिट जांय।
पंच ज्योतिषी देव सब, मिल सेवें प्रभु पांय॥

पद्धरि छन्द ।

जयजय जिमआदि महन्तदेव, जयअजित जिनेश्वर करहिं सेव।
जयजय संभव भव भय निवार, जय जय अभिनंदन जगततार ॥
जय सुमति सुमति दायक विशेष, जय पद्म प्रभु लख पदम लेष ।
जयजय सुपार्श हर कर्म फास, जय जय चंद्रप्रभु सुखनिवास ॥
जय पुष्प दंत कर कर्म अंत, जय शीतल जिन शीतल करन्त ।
जय श्रेय करन श्रेयांश देव, जय वासुपूज्य पूजत स्वयमेव ॥
जय विमलविमल कर जगतजीव, जयर अनंत सुख अतिसदीव ।
जय धर्म धुरंधर धर्म नाथ, जय शांति जिनेश्वर मुक्ति साथ ॥
जय कुंथुनाथ शिवसुखनिधान, जय अरह जिनेश्वर मुक्ति खान।
जय मल्लिनाथ पद पद्म भास, जय मुनिसुव्रत सुव्रत प्रकास ॥
जय जय नमिदेव दयालसन्त, जय नेमनाथ तसुगुण अनन्त ।
जय पारस प्रभु संकट निवार, जय वर्द्धमान आनन्दकार ॥
नवग्रह अरिष्ट जब होय आय, तब पूजें श्रीजिनदेव पाय ।
मन बच तन मन सुखसिन्धु होय, ग्रह शांतरीत यह कही जोय ॥

ओं ह्रीं सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय पंचकल्याणक प्राप्ताय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौबीसों जिनदेव प्रभु, ग्रह सम्बन्ध विचार ।
पुनि पूजों प्रत्येक तुम, जो पाऊं सुख सार ॥

इत्याशीर्वादः ।

प्रातःकाल की आरती (पूजा के समय की)

तुम भव दधि तारण सेत श्रीजिनदेव हो, आरति तुम्हारी मैं करूं, जिनदेव हो। निज आरति निवारण हेत, श्री जिनदेव हो ॥१॥ दीप किया भ्रम नाशने, जिनदेव हो। मग दृष्टि पड़े शिवखेत, श्रीजिनदेव हो ॥२॥ नृत्य करों इस हेत से, श्रीजिनदेव हो। भव भ्रमण दुःख देत, श्रीजिनदेव हो ॥३॥ गावत गुण तुम्हरे प्रभू श्रीजिनदेव हो। भव हृदन हरो कर चेत श्रीजिनदेव हो ॥४॥ नाथूराम शिववास को श्रीजिनदेव हो। करें आरति भक्ति समेत श्रीजिनदेव हो ॥५॥ इति।

संध्याकाल की आरती

सांझ समय जिन वन्दौं भविजन सांझ समय जिन वन्दौं, वन्दत होत अनन्दौ, भविजन, सांझ समय जिन वन्दौ॥१॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर, वन्दत पापनिकन्दौ, भवि जन०, वन्दत०, भविजन ॥२॥ कंचन दीप कपूर की बाती खेवत धूप दशाङ्गौ, भविजन०, वन्दत०, भविजन० ॥३॥ लेकर दीपक आगे प्रजालों, बाजत ताल मृदङ्गौ, भविजन०, वन्दत, भविजन० ॥४॥ जाप (पुष्प) माल धरि ध्यान लगावौं कटत कर्म के फन्दौ, भविजन०, वन्दत०, भविजन० ॥५॥ कहैं जिनदास आश चरनन की सेवहु नाभि के नन्दौ, भविजन० वन्दत०, भविजन०, ॥६॥ इति।

भाव आरती

मङ्गल आरति आतमराम, तन मन्दिर मन उत्तम ठाम, मङ्गल० समरस जल चन्दन आनन्द, तन्दुल तत्व स्वरूप अमन्द मङ्गल ॥१॥ समयसार फूलन की माल, अनुभव सुख नेवज भरिथाल, मङ्गल० ॥२॥ दीपक ज्ञान ध्यान की धूप, निरमल भाव महाफल रूप, मङ्गल० ॥३॥ सुगुण भविकजन इकरंग लीन, निहचै नवधा भक्ति प्रवीन, मङ्गल० ॥४॥ धुनि उत्साह सु अद्भुत ज्ञान, परम समाधि निरत परधान, मङ्गल० ॥५॥ बाहिज आतम भाव बहावै, अन्तर ह्वै परमातम ध्यावै, मङ्गल० ॥६॥ साहिब सेवक भेद मिटाय, 'द्यानत' एकमेक होजाय, मङ्गल० ॥७॥

इति ।

प्रभाती

बन्दों जिनदेव सदा चरण कमल तेरे ॥टेक
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन गुण केरे ।
सुमति पद्म श्री सुपार्श्व चंदा प्रभु तेरे ॥ टेक
पुष्पदन्त शीतल श्रेयांश गुन घनेरे ।
वासुपूज्य विमल अनन्त धर्म जग उजेरे ॥टेक॥
शांति कुन्थु अरह मल्लि मुनिसुव्रत केरे ।
नमि नेम पार्श्वनाथ वीर धीर हेरे ॥टेक॥
लेत नाम अष्ट जाय छूटत भ्रम केरे ।
जन्म पाय जाहीं गय चरनन के चेरे ॥टेक॥

इतिशुभम्भूयात् ।

जाप्य दर्पण

सोलहकारणव्रत की जापें

समुच्चय जाप

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडषकारणेभ्यो नमः

—०—

प्रत्येक दिन की जापें

१ ओंह्रींदर्शनविशुद्धयादिनमः
२ " विनयसंपन्नतायै "
३ " निरतिचारशीलव्रताय "
४ " अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय "
५ " संवेगाय "
६ " शक्तितस्त्यागाय "
७ " शक्तितस्तपसे "
८ " साधु समाधये नमः "
९ " वैयावृत्यकरणाय "
१० " अर्हद्भक्त्ये "
११ " आचार्यभक्त्ये "
१२ " बहुश्रुत भक्तये "
१३ " प्रवचनभक्तये "
१४ " आवश्यकापरिहाणये "
१५ " सन्मार्गप्रभावनायै "
१६ " प्रवचनवत्सलत्वाय "

पुष्पांजलिव्रत की जापें

समुच्चय

ओं ह्रीं पंचमेरु संबंधि जिनालयेभ्यो नमः

—०—

प्रत्येक दिन की जापें

१ ओं ह्रीं सुदर्शनमेरुस्थ जिनालयेभ्योनमः
२ " विजयमेरुस्थ जिनालयेभ्योनमः
३ " अचलमेरुस्थ जिनालयेभ्योनमः
४ " मंदरमेरुस्थ जिनालयेभ्योनमः
५ " विद्युत्मालीमेरुस्थ जिनालयेभ्योनमः

—०—

रविव्रत की जाप

ओं नमः भगवते चिंतामणि-पार्श्वनाथाय सप्तफण मंडिताय ओं ह्रीं पद्मावती सहितायमम ऋद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा

दशलक्षणव्रत की जापें

समुच्चाय जाप

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्योनमः

—::०::—

प्रत्येक दिन की जाप

१ ओंह्रींउत्तमक्षमाधर्मांगायनमः
२ " उत्तममार्दव धर्मांगाय "
३ " उत्तमार्जव धर्मांगाय "
४ " उत्तमसत्य धर्मांगाय "
५ " उत्तमशौच धर्मांगाय "
६ " उत्तमसंयम धर्मांगाय "
७ " उत्तमतपो धर्मांगाय "
८ " उत्तमत्याग धर्मांगाय "
९ " उत्तमाकिञ्चन्यधर्मांगाय "
१०" उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय"

—::०::—

रत्नत्रय की जाप

समुच्चयजाप

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्रेभ्योनमः

रत्नत्रयव्रत की जापें

१ ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः
२ " सम्यग्ज्ञानाय "
३ " सम्यक्चारित्राय"

—::०::—

अष्टाह्निकाव्रत की जापें

प्रत्येक जाप

समुच्चयजाप—ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपस्थद्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो नमः

—::०::—

प्रत्येक दिन की जाप

१ ओं ह्रीं नंदीश्वरसंज्ञा नमः
२ " अष्टमहाद्विभूतसंज्ञाय "
३ " चतुर्मुखसंज्ञाय "
४ " पंचमहालक्षणसंज्ञाय "
५ " स्वर्गसोपानसंज्ञाय "
६ " स्वर्गसंपत्तिसंज्ञाय "
७ " इन्द्रध्वजसंज्ञाय "
८ " त्रिलोकसारसंज्ञाय "

प्रतिदिन समुच्चय व प्रत्येक जाप तीन बार देना चाहिये।

❋ पंचकल्याण तिथिदर्पण ❋

मासक्रम से (इसी चौबीसी पूजा के अनुसार)

श्रावण कृष्णा—
२ श्री मुनि सुव्रतका गर्भ
१० ,, कुन्थुनाथ का गर्भ

श्रावण शुक्ला—
२ श्री सुमतिनाथ का गर्भ
६ ,,नेमिनाथका जन्म व तप
७ ,, पार्श्वनाथ का मोक्ष
१५ ,, श्रेयांसनाथ का मोक्ष

भाद्रपद कृष्णा—
७ श्री शान्तिनाथ का गर्भ

भाद्रपद शुक्ला—
६ श्री सुपार्श्वनाथ का गर्भ
८ ,, पुष्पदंत का मोक्ष
१४ ,, वासुपूज्य का मोक्ष

आश्विन (कुंवार) कृष्णा—
२ श्री नमिनाथ का गर्भ

आश्विन (कुंवार) शुक्ला
१ श्री नेमिनाथ का ज्ञान
८ ,, शीतलनाथ का मोक्ष

कार्तिक कृष्णा—
१ श्री अनंतनाथ का गर्भ
४ ,, संभवनाथ का ज्ञान
१३ ,, पद्मप्रभका जन्म व तप
१४-३० श्रीमहावीर का मोक्ष

कार्तिक शुक्ला—
२ श्री पुष्पदंत का ज्ञान
६ ,, नेमिनाथ का ज्ञान
१२ ,, अरनाथका ज्ञान
१५ ,, संभवनाथ का ज्ञान

अगहन कृष्णा—
१० श्री महावीर का तप

अगहन शुक्ला—
१ श्रीपुष्पदंत का जन्म व तप
१० ,, अरनाथ का तप
११ ,, मल्लिनाथका जन्म व तप
११ ,, नेमिनाथ का ज्ञान
१४ श्री अरनाथ का जन्म
१५ ,, संभवनाथ का तप

पौष कृष्णा—
२ ,, मल्लिनाथ का ज्ञान
११ ,, चंद्रप्रभ का जन्म व तप
११ ,, पार्श्वनाथ का तप
१४ ,, शीतलनाथ का ज्ञान
१४ ,, पार्श्वनाथ का जन्म
(यहां पौष बदी ११ चाहिये)

पौष शुक्ला—
११ श्री अजितनाथ का ज्ञान
११ ,, शान्तिनाथ का ज्ञान
(पौषसुदी १० होना चाहिये)
१४ श्री अभिनन्दन का ज्ञान
१५ ,, धर्मनाथ का ज्ञान

माघ कृष्णा—
४ श्री विमलनाथ का तप
(यहां माघ सुदी ४ चाहिये)
६ श्री पद्मप्रभ का गर्भ
६ ,, विमलनाथ का ज्ञान
(यहां माघ सुदी ६ चाहिये)
१० श्री अजितनाथ का तप
(माघ सुदी १० पाठ शुद्ध है)
१० श्री अजितनाथका तप
(माघ सुदी ९ शुद्ध पाठ है)
१२श्रीशीतलनाथकाजन्मवतप
१२ ,, विमलनाथ का जन्म
(माघ सुदी ४ चाहिये)
१५ श्री आदिनाथ का मोक्ष
३० ,, श्रेयांसनाथका ज्ञान

माघ शुक्ला—
२ श्री वासुपूज्य का ज्ञान
६ ,, संभवनाथ का मोक्ष
१२ ,, अभिनन्दन का तप
१३ ,, धर्मनाथका जन्म व तप
१४ ,, अभिनन्दन का जन्म

फाल्गुन कृष्णा—
६ श्री सुपार्श्वनाथ का ज्ञान
७ ,, पद्मप्रभ का मोक्ष
(फाल्गुन बदी ४ चाहिये)
७ ,, सुपार्श्वनाथ का मोक्ष
८ ,, संभवनाथका गर्भ
(फागुन सुदी ८ चाहिये)
९ ,, चंद्र प्रभ का ज्ञान
(फागुन बदी ७ चाहिये)
९ ,, पुष्पदन्त का गर्भ
११ ,, आदिनाथ का ज्ञान
११ ,, श्रेयांसनाथ का जन्म व तप
१२ ,, मुनिसुव्रत का मोक्ष

फाल्गुन शुक्ला—
३ श्री अरनाथ का जन्म
५ ,, मल्लिनाथका मोक्ष
७ ,, चन्द्रप्रभ का मोक्ष
(फाल्गुन बदी ७ चाहिये)
१४ श्रीवासुपूज्यका जन्म व तप

चैत्र कृष्णा—
३ श्री कुन्थुनाथ का ज्ञान
४ ,, पार्श्वनाथ का ज्ञान
१५ ,, चन्द्रप्रभ का गर्भ
८ ,, शीतलनाथका गर्भ
९ ,, आदिनाथकाजन्म व तप
३० ,, अनन्तनाथ का ज्ञान व मोक्ष
३० ,, अरनाथ का मोक्ष

चैत्र शुक्ला—
१ ,, मल्लिनाथ का गर्भ
५ ,, अजितनाथ का मोक्ष
११ ,, सुमतिनाथका जन्म ज्ञान व मोक्ष
१३ ,, महावीर का जन्म
१५ ,, पद्मप्रभ का ज्ञान

वैशाख कृष्णा—
२ श्री पार्श्वनाथ का गर्भ
९ ,, मुनिसुव्रतका ज्ञान
१० ,, ,, जन्म व तप
१४ ,, नमिनाथ का मोक्ष

वैशाख शुक्ला—
१ ,, कुन्थुनाथ का जन्म तप व मोक्ष
६ ,, अभिनन्दन का मोक्ष
८ ,, ,, गर्भ
(वैशाख सुदी ६ चाहिये)
९ ,, सुमतिनाथ का तप
१० ,, महावीर का ज्ञान
१३ ,, धर्मनाथ का गर्भ
(वैशाख बदी १३ चाहिये)

ज्येष्ठ कृष्णा—
६ ,, श्रेयांसनाथ का गर्भ
१० ,, विमलनाथ का गर्भ
१२ ,, अनन्तनाथका जन्म व तप
१४ ,, शांतिनाथ का जन्म तप व मोक्ष
३० ,, सुमतिनाथ का गर्भ

ज्येष्ठ शुक्ला—
४ ,, धर्मनाथ का मोक्ष
१२ ,, सुपार्श्वनाथ का जन्म व तप

आषाढ़ कृष्णा—
२ ,, आदिनाथ का गर्भ
६ ,, वासुपूज्य का गर्भ
८ ,, विमलनाथ का मोक्ष
१० ,, नमिनाथका जन्म व तप

आषाढ़ शुक्ला—
६ ,, महावीर का गर्भ
७ ,, नेमिनाथ का मोक्ष

तीर्थंकरों के ज्ञातव्य विषय

नं०	नाम	चिह्न	जन्मनगरी	ऊंचाई	पिता	माता	आयु
१	आदिनाथ	वृषभ	अयोध्या	५००धनुष	नाभिराजा	मरुदेवी	८४ लाखपूर्व
२	अजितनाथ	गज	,,	४५० ध.	जितशत्रु	विजयसेना	७२ ,,
३	संभवनाथ	घोड़ा	श्रीवस्ती	४०० ध.	जितारि	सुसेना	६० ,,
४	अभिनंदन	बंदर	अयोध्या	३५० ध	संवर	सिद्धार्था	५० ,,
५	सुमतिनाथ	चकवा	,,	३०० ध.	मेघप्रभ	मंगला	४० ,,
६	पद्मप्रभ	कमल	कौशांबी	२५० ध.	धारण	सुसीमा	३० ,,
७	सुपार्श्वनाथ	साथिया	बनारस	२०० ध.	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	२० ,,
८	चंद्रप्रभ	चंद्रमा	चन्द्रपुरी	१५० ध.	महासेन	सुलक्षणा	१० ,,
९	पुष्पदन्त	मगर	काकन्दी	१०० ध.	सुग्रीव	रमा	२ ,,
१०	शीतलनाथ	श्रीवृक्ष	भद्दिलपुर	९० ध.	दृढ़रथ	सुनंदा	१ ,,
११	श्रेयांसनाथ	गैंडा	सिंहपुर	८० ध.	विमल	विमला	८४ लाखवर्ष
१२	वासुपूज्य	भैंसा	चम्पापुरी	७० ध.	वसुपूज्य	विजया	७२ ,,
१३	विमलनाथ	शूकर	कपिला	६० ध.	सुकृतवर्मा	श्यामा	६० ,,
१४	अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	५० ध.	हरिषेण	सुरजा	५० ,,
१५	धर्मनाथ	वज्र	रतनपुर	४५ ध.	भानु	सुव्रता	१० ,,
१६	शान्तिनाथ	मृग	हस्तिनापुर	४० ध.	विश्वसेन	ऐरा	१ ,,
१७	कुन्थुनाथ	बकरा	,,	३५ ध.	शूरराजा	श्रीमती	९५००० वर्ष
१८	अरहनाथ	मीन	,,	३० ध.	सुदर्शन	मित्रा	८४००० ,,
१९	मल्लिनाथ	कलश	मिथला	२५ ध.	कुम्भ	प्रजावती	५५००० ,,
२०	मुनिसुव्रत	कछवा	राजगृही	२० ध.	सुमंत्र	श्यामा	३०००० ,,
२१	नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	१५ ध.	विजयरथ	विपुला	१०००० ,,
२२	नेमिनाथ	शंख	द्वारिका	१० ध.	समुद्रविजय	शिवा	१००० ,,
२३	पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	९ हाथ	अश्वसेन	वामा	१०० ,,
२४	महावीर	सिंह	पावापुरी	७ हाथ	सिद्धार्थ	मिथला	७२ ,,

नोट:—ये सब विषय इन्हीं पूजा के स्थापना में से लिखे गये हैं।

नं. १२, १९, २२, २३, २४ के बालब्रह्मचारी की हैं।

नं ६ के लालवर्ण, ७, २० के हरितवर्ण, ८, ९ के शुक्लवर्ण, २२, २३ के श्यामवर्ण व शेष सब स्वर्ण वर्ण हैं।

नं. १६, १७, १८ के कुरुवंशी २०, २२ के हरिवंशी व शेष सब इक्ष्वाकुवंशी हैं।

नं. १ कैलास से, पद्मासन से, १२ के चम्पापुरी से, पद्मासन से, २२ के गिरनार से, पद्मासन से और नं. २४ के पावापुरी से व शेष सब सम्मेद शिखर से, खड्गासन से मुक्ति पधारे हैं।

साहित्य प्रेस, जबलपुर।